दीपकरागपत्नीयुतः

6129

F — 215

Incomplete

13 pages are missing.

२

नं॰ ५८६३

२९५

नं॰ ३५ दीपक राग

दी॰रा॰ ॐ अथ दीपक रागारंभः॥ कल्पद्रुम ग्रंथ के म
१ त में येह राग ओडव है इस में ऋषभ पंचम वर्जि
त है॥ श्लोक। षड्जोंश ग्रह न्यासो ओडवो रि
प वर्जितः दिवस स्तृतीये यामे गातव्यो वै नि
शा भवे॥ इसका अंश न्यास ग्रह षड्ज स्वर
है इस मत के अनुसार पांच स्वरका राग है। रि
१

षभ पंचम वर्जित है येह दिन के तीसरे पहर

में गाया जाता है अरु कही लोग माये काल।

में दीपक जगाने वेले गावते है॥ अब संगीत

दर्पण में येह कहा है॥ दोहा॥ तीन सकारन।

सों भन्यो संपूरण परमान सभ को विदया।

वियकरे दीपक राग वषान॥ अथास्था अकी

दी॰रा॰ णो विधिः। संगीत कल्प द्रुमे॥ जयतश्रीः पला
२ श्रीच धवलश्रीईनासिका दीपको जायते तत्र
ग्रीष्मतौ गान मिष्यते॥ जब जयतश्री और प
लाश्री धवलश्री धनाश्री येह जब सम मिलें
तो दीपक राग बनता है। ग्रुरु इसकी ग्रीष्म
ऋतुः है ग्रुरु इसका ब्रह्मादेवता है ग्रुरु इस २

का ऋषि भी ब्रह्मा है अरु अनुष्टुप् छंद है और
दी बीज है। अरु इसका शृंगार रस है और श्री
छा नायिका है अरु दत्त नायक है ॥ ॐ अथदी
पक राग स्य साधनम् ॥ ॐ अस्य श्री दीपक।
राग मंत्र स्य ब्रह्मा ऋषि रनुष्टुप् छंदः ब्रह्मादे
वता दी बीजे मनो वांछित सिद्ध्यर्थे जपे विनि

योगः॥ अथकरन्यासः॥ ॐदीं अंगुष्ठकाभ्यांनमः
एवंहृदयादिन्यासंसर्वं कुर्यात्॥ अथ दीपक राग
स्य पूजा विधाय॥ आवाहने। आसने। पाद्ये। अ
र्घ्ये। आचमनीये। वस्त्रे। यज्ञोपवीते। गंधे। अक्ष
ते। पुष्पे। धूपे। दीपे। नैवेद्ये। दक्षिणे। प्रदक्षिणे
पुनराचमनीयम्॥ इति दीपक राग पूजनम्॥

अथ दीपक राग मंत्रः। ॐ दीं दीपकाय नमः ॐ

इति दीपक राग मंत्रः। अथ जप संख्या ५....

अथ दीपक राग ध्यानम्॥ ॐ भानोर्नेत्रा भिजा

तो धवल गजवरो। रूढपादो स्वरूपी। रक्तो

गो कंज नेत्रो धृत मकुट शिरो। चित्र वस्त्रो।

इति रूपः। मुक्तामाला न्वितोयः करधृत अ

दी॰रा॰ लिखो मन्मथा नेदकर्ता । मध्याह्न गेयसगेयो निव
४ ल जनपदे दीपको गीष्मकाले ॥ अथ संगीत द
र्पण मतेन ध्यानम् ॥ ॐ विचाम्बरो केलि कला
प्रवीण स्वभा मिनी भोग निमग्न चित्तः । गृहीय
कारे सखिभिः प्रविष्ट लमोपहा स्वकुटमणिः
प्रदीपः ॥ अथ दीपक रागस्य भाषा ध्यानम् ॥ ४

केलिकला में प्रवीण महा अंग अंग अनेग प्रकाश

कीयो है। भामिनी भोग अंग्यारे गयो रतिको प्र

ति आनंद मान लियो है। भूषण के मणिकी उ

जियारी तहा प्रकटी मानो भानु वियो है। देष

न वै तिया को हरि वल्लभ दीपक को झकचानो

हीयो है।। अथ दीपक रागस्य देवता मंत्रः। ॐ व्र

टी॰रा॰ ५

ब्रह्मणेनमः॥ अथ देवता ध्यानम् ॥ ॐ ब्रह्मणे र
क्त वर्णाभे । पीतवस्त्रै रलंकृतम् । चतुर्भुजे चतु
र्वक्त्रे स स्रुवे स्रुचि हस्तकम् ॥ इति देवता ध्याने
अथ समस्त रसकोविदा प्रौढानायिक लक्षण
म् ॥ समस्त रसकोविदा कोविद कहित बषा
नि । जो रस भावे प्रीतमही ताहीं रसकी दानि

5

५

अथ दत्तनायक लक्षणम् ॥ सकल त्रियन सों
एक रस काहू सो घट नाहि । दत्तन लच्छन ता
सके सभे बसे मन माहि ॥ अथ उदाहरणम् ॥
एतो सहस्त्रक चंद्रमुखी अपनी अपनी छबि
की रस माई । हेरत मैं रहे देउ कहो कहो म
न एक करों किहि थाई । प्यारी लगे मृगनय

टी॰ रा॰ नी सबैं रघुनाथ नही लघुदीरघ ताई । यिउंही ॥
८ विचार के दछ्छन लछ्छन प्रेम प्रतीति छ्छको सभ

6

ठोई ॥ अथ शृंगार रस लक्षणम् ॥ रतिमतिकी

अति चातुरी तिय पति मंत्र विचार ताही सो सभ

कोवि
कहित हैं कविंद शृंगार ॥ इस राग को नाम मैंन

जीने जलने के बाइस मैं नलाक कर दीइ इसी ८

वास्ते गुणी जनों ने इसका गाना छोडदीया इस-
की परंपरा परपाटी हटगईथी अब जो येह दीप
क राग शास्त्रोक्त प्रकार में कहा जाता है ॥ अब।
दीपक राग की येह ठाट कहिते है॥ षड्ज सम
रहता है। रेषभ उतरा है। गंधार भी उतरा। मध
म दोनो चडा भी अर उतरा भी है। पंचम सम र

दी॰रा॰

हना है धैवत किंचित् उतरा है। निषाद चढा है॥ अ

सं ग म
व दीपक राग की येह गत कहिते हैं॥ डिड डा डिड

पं नि ध पं म ग म ग रे सा ग सा
डाडा डा डाडा। डिड डा डिड डाडा डाडाडा॥ इ

पं म पं ग म पं नि
ति स्थाई॥ अथ अंतरा॥ डिड डा डिड डाडा डा डा

सं नि रे सा रे ग रे सा नि ध पं पं म ग म
डा। डिड डा डिड डाडा डाडाडा। डिड डा डिड डा

पं नि रे सा रे ग ग नि सा म ग रे सा
डाडाडाडा। डिड डा डिड डाडाडाडाडा॥ अब जा

ना चाहीये जो दीपक की इस गत में पंचम।
स्वर तक इस में अन्तर तक जयतसिरी है॥
आगे जो स्थाई के अंतरान्तर तक धौलसिरी है।
अरु आगे अंतरा शुद्ध मलतानी के स्वरों में वि
शान अन्तर आगे पांच अन्तर पर स्वर पलासी
के आगे अंतरान्तर तक जयत सिरी है॥ अब जो

दी॰ रा
८

येह दीपक की सरगम कहिते हैं ॥ तालत्रा॥ सागगमपनिध

मगगमगरेसागगसा ॥ इतिस्थाई ॥ अथअंतरा ॥

पमपगमपनिसानिसागसानिधपपमगमप ।

निसागगगनिसामगरेसा ॥ अथालाप: ॥

ननरी इना आनन उनन उआनन अदतनरी

तने तना उननना आनरा ननन रत्र नातुम॥ ८

२नि २सै २सै २ग
इतिअस्थाई । अंतरा ॥ ननन अदनते आनन नुम

२म २ध २नि २सै २रे २सै २नि २सै २ग
नानुनै नना नन नरी नना आन तान तनुम नतु

२रे २सै २नि २सै २नि २प २ध २म २ग २रे
तरीन तानुरी रना नना आन नान आन नान रा

२सै
न नानुम ॥ अथ ध्रुवपद गानमाह ॥ रागदी
पक ॥ ताल ४ ॥

दी॰ग
५

१

५

अथ दीपक रागस्य शक्ति परिच्छेद

माह ॥ राग दीपक ताल चार ध ॥

२म २ध ३सा २नि २प २ध २प २नि २प २ध

महाकालि परम शक्ति नील अश

२म २म २रे २सा २नि २सा २ग २म २ध ३सा

म इतिहिं नाम दशभुव भज पाद

२प २म २ग २रे २सा

धरै हरै अरिन पुंजै ॥ इति अस्थायी

२ग २म २ध २नि ३सा २रे २ग २रे ३सा २नि

खड्ग चक्र गदा बाण चाप परिघ शूल

गा.टी.

१०

10

२ध २म २ग २रे २सै २ग २म २पै २म २ग

घोंव करमभ्रैडि ग्रवन्दमोडि सहयोगि

२रे २सै २म २पै २सै २नि

नि गुनैं ।। इतिश्वेतरा ।। तीन नयनश्व

२ध २पै २नि २ध २पै २म २ग २रे

ति घवेंड मेडित वपु विविध भरण

= २सै २नि २सै २ग २म २ग २रे

ह्वरणि ग्रुभ डैं निग्रुभ ब्रुडिमोह द्रु = मधुकैटभनाश करणि

२सै २ग २म २पै २नि ३सै ३रे ३ग ३रे ३सै २नि २ध २पै

नैं ।। विष्ण योगनीद मोई ब्रम्ह जानव

२पै २म २ग २रे २सै २ग २म २पै २ध २पै २म

रण शरण याविवच्यौ वालनियीका

२म २ग २रे २सा

रि मन निकुंजें ।। राग दीपक ताल । ५ ।

२म १नि १प १नि २सा २ग २म २पृ २नि

सेवो नित सुर उचार आदि समे सुर ।

२प २पृ २नि २म २ग २रे २ग २म २पृ २नि २प २पृ

मति धार परम सुभग रूप सुर अनू

२ग २रे २सा २म २ग २म

पि दानी ।। इति अस्थायी ।। किन्नर सम

२पृ २नि २सा २ग २रे २सा २नि २प २नि २पृ

केट होत विविध भांत तान मान षड

२म २ग २रे २ग २म २पृ २प २पृ २ग २रे २सा

स्वर षाड्वि कृत सुकृति मूर्छन की धानी

ग॰दी॰ इति अंतरा ॥ उड़व षड़व संपूरण संकी

२२ रण साथ राथ लाग डाट ताल काल।

प्रबल तान समानी ॥ राग रंग भेद सकल

॥ दान देहु रस समेत बाल निधे कृपाया

रि करो परम ज्ञानी ॥ इति आभोगः ॥

इति दीपक रागस्य षाकि परिच्छेदः

अथ दीपक रागस्य गणेश परिछेदमा-

ह ॥ राग दीपक ताल चार ॥ धा ॥ लेबेरम

वदन कदन विघ्न गणन एकदंत स्ट

ङिकेत मेत स्वावद विपद हरै मारी ॥

इति अस्थायी ॥ पद्मासन पीतवसन ऊ

मम माल भालपरी धरी लरी मौक्तिक

रा·टी· विव हरित रतन भारी॥ इति श्रेतरा॥ श्र

२२ हण वरण सुंदर जिम गैरिक गिरिशो

12 भित रहो हरित हरित दूर्वांकुर शिष

र मध्य चारी॥ श्रेकृष्ण वर परम ग्रभय

चारिभुजा धारि सदा बालनिधी धीरय

रण कार्य सिद्धि कारी॥ इत्याभोगः॥

राग दीपक ध्रुवपद गणेश ताला ४।

१नि २सं २ग २म २प २नि २प २प २म २ग २रे

सिंदुर युत वदन जास पास बसे रूर

२रे २सं १नि १प २प १नि २सं २ग २म २ग

द्धि सिद्ध बुद्धि बृद्धि देत सदा दासन॰

२ग २रे २सं २ग २म २प १नि

कौं भारी ॥ इतिअस्थायी ॥ नाना वि

२नि २सं २रे २सं २नि २प २प २म २ग

ध विचरचैं कविता अति ललित म

२रे २ग २म २प २प २प २म २ग २रे

ड हिं देष चित्तमोद थरैं हरैं विकल।

रा०दी०

२३

13

सारी ॥ जबहि दया धारि कारि सक
ल सफल कर्म धर्म ज्ञान ध्यान योग
यत्न स्व तपसिद्धि कारी ॥ ऐसे गणना
यिक की चरण शरण छाडवसें बा
लनिथी विचननसें जबहिं प्रीतिधा
री ॥ इति दीपकरागसगणेशपरिच्छेदः

अथ दीपक रागस्य विस्तुपरिछेदमाह

राग दीपक ध्रुवपद ताल चार। ४॥

२नि २पे २नि २सं २नि २सं २पे २म २ग

राष लाज रमानाथ विपत परी अत

२रे २सं २नि २नि २प २पे २म २ग २रे २सं

हि विकट द्रुपद सुता परम दुखित

२ग २म २ग २रे २सं २म

टेर साव उचारी॥ इति अस्थायी॥ क्रु

२ग २म २पे २नि २सं २ग २रे

रुपति की सभा मो हज पांडु तनय।

रा॰दी॰

२स २नि २प २प २म २ग २रे २स २म
विविध द्रव्य सर्वस सब हारदीयो पुन

२४

२ग २रे २स १नि १प १नि
हि हारि नारी॥ इतिश्रेतता॥ दुर्योधन

२स १नि २स २प २म १ग २रे २स २नि २प
कौ निदेशानम करो सुनत सार वार।

१४

२प २म २ग २रे २स २ग २म २ग २रे २स
पकर दुशासन सभा मोहक आरी॥

२म २ग २म २प २नि २स २ग २रे २स २नि
कुरुपति अर भीष्म द्रोण श्रवणगंडेरा

२प २प २म २ग २रे २स २म २ग २रे
बलेइ भवहि देष मौन रहे भै निराषा।

मारी ॥ तहिं तहिं दीना नाथ प्रबल-

हाथ लाज गई मरण भेलो प्रीति प्र

थीन हदन करुण धारी ॥ नारायण

करुण कर वसन निचय दायदीयो

हार रहे कौरव सब प्रन रज है भा-

री ॥ इत्याभोगः ॥ राग दीपक ध्रुवप

रा॰टी॰

द ताल चारा॥ ४॥ विश्वेश्वर रमानाथ र
मण जगत भक्त वछल सकल विक

२५

ल दुःख हरण ग्राम्य धीर धारी॥ इति

15

अस्थायी॥ जग पति कौटेर सनत सो
र धार चक्र नक्र छेद कीयो लियो प
कर करी कर उभारी॥ इति अंतरा॥

दश सहस्र शिष्य लिये दुर्वासा विपन

गये तथायुक्त वानिधर्म राय प्रकारी

पोडुपुत्र पौत्र याज अतिथि भोज्य दे

ऊे सकल ज्ञान गये भये विकल धर्म

राज भारी ॥ भीमाग्रज शोक देष वा

सदेव शाकपत्र पात्र लगात साव स

रा. दी. थारि यिडे उचारी ॥ विश्वात्मा ट्रमकाहे

२६ भक्त शोक सकल हरे बालनिथी ट्र

16 म होइ नमे ऋषि उचारी ॥ इत्याभोगः

इति दीपकरागस्य विश्व परिच्छेदः ॥

अथ दीपक रागस्य ख्यालपरिच्छेदमा

ह। राग दीपक ताल चार॥ विद्या।

नेद ज्योतिरूप निर्मल जग व्याप।

रहो बुद्धि तिमिर हरण करण वि

शाद ज्ञान भारी॥ इतिअस्थायी॥

सूर्य वेद तारा गण चपल अग्नि ते

रा० दी०

ज सकल नास भास भास रहै है ।

तिमिर मारी ॥ इतिग्रेतरा ॥ ग्रात्म ते

ज ग्रभ्यंतर प्रेरक मन पैरदेत कर्म

बस कर्ता सोइ विविध रूप धारी।

राजा कहिं रंक कहीं पंडित जड।

स्वत्त ग्रेय पैगु मेद बालनिधी ग्रग

17

२नि २सै २ग २नि २म
ट विश्व धारी ॥ राग दीपक ताल ध ॥

२ग २म २पे २नि २प २पे २म २ग २रे
चेतन जग व्याप रहो निजानंद धा

२ग २म २पे २प २नि २प २पे २म २ग २म
रि मार नाश जन्म हीन सदा एक

२पे २ग २रे २सै २म २ग २म
रूप धारी ॥ इति ध्रुवस्थायी ॥ नाहि ज

२पे २नि २सै २ग २रे २सै २नि २प २पे २म २ग २रे
रे नाहि गरे सुके नहि नाहि टुटे स

२सै २ग २म २नि २प २पे २म २ग २रे २सै
दानंद सदा खंड अखंड भारी ॥

रा॰दी॰

२ग २म २प २नि २ध २प २म २ग
इति षेतरा॥ अन्वय व्यतिरेक जाम ज

२रे २ग २म २प २ध २नि २ध २प २म २ग २रे २प
गत मोक्ष जान लेऊ जागरकै द्रव्य।

९८
18

२म २ध २नि २ध २प २म २ग २रे २सा २ग २म
सकल स्वम विकल चारी॥ पुन सुष

२प २नि ३सा ३ग ३रे ३सा २नि २ध २प
मि नाशावेत तामें व्यतिरेक जान

२म २ग २रे २सा २ग २म २प २ग २रे २सा
अन्वय जो एकरूप सेवित निजसारी॰

इति दीपक रागस्य अलंपरि छेदः॥

अथ दीपकरागस्य शिवपरिछेद माह।

२ग २म

राग दीपक ध्रुपद ताल चार। थानील

२प २नि २स २नि २प २प २म २ग २रे २स

कंठ उमापति हि ज्योति रूप निष्कलंक

१नि १प १प २नि २स २ग २म २ग २रे २स

अंकलिये हैम सुता शिवरि शयन शा

२ग २म २प

ली ।। इति अस्थायी ।। तीन नयन मयन

२नि २स २ग २रे २स २नि २प २प २म २ग

हरण भक्तन नित रक्षकरण भालचं

रा॰दी॰ द शिखिर गंग मंडन गल माली ॥ इतिश्री

नरा ॥ भिरा के नरेगन मैं केलिकरैं बि॰

विय भोत भस्म धारि श्रभ कोन उमानडि

न श्राली ॥ मदित वदन रदन कुंद दैप

ति रहे ठाडि रहे बालानिथी चरण श्रावण

हैरैं डाव कपाली ॥ राग दीपक नाल ध।

२ग २म २ध २नि

ध्रुवपद शिवजी ॥ पार्वति पति [illegible] प्रम

२नि २सं २नि २ध २पं २म २ग २रे २ग २म २पं

थ पति हिं विपति हरे विविधभांत नि

२नि २ध २पं २म २ग २पं २म २ग २रे २सं

न सेतन संपत सुत आशिष नित दाना ।

२म २ग २म २पं २नि

इति अस्थायी ॥ बाणासुर भक्त न्दनादे

२सं २रे २सं २नि २ध २पं २म २ग २म

षदीनि सहस्र भुजा पुरहिं रक्ष करें सदा

२ग २म २पं २ग २रे २सं २ग २म

निमहिं प्रजा धाना ॥ इति अंतरा ॥ बाण

ग०टी० सुनत ऊषा कहि स्वप्न मोहि दर्शकीयो का
र्लि तनय प्रति विचित्र उत्कंठा जाना।
चित्र लेख योगिनि उडल्याइ दीयो की।
यो प्रेम बाण हर कुपित लख्यो कालि
ताना ॥ नारद ऋषि जाय कह्यो कृष्ण तो
भ परम भयो याद्व बल धाइ गयो करो

परम दाता ॥ निज हिं भक्त विपति दे

ष गिरिश तहो रक्ष करी धैरे धीर म

हाराज सर्व डाव विधाता ॥ इत्याभोगः

इति दीपक रागस्य शिव परि च्छेदः ॥

गा·दी·

२२

२।

अथ दीपक रागस्य सूर्यपरिछेदमाह।

राग दीपक ध्रुवपद ताल चार। ४ ॥

२ग २म २प २नि २प २धै म २ग २रे २प २नि

अरुण वरण जगत चक्षु अति अखंड।

२प २धै २नि २सं २ग २म २ग २धै २प

मंडल शुभ अशुभ सकल हर करण

२धै २म २ग २रे २सं

तिमर हरण चारी ॥ इति अस्थायी ॥

२ग २म २धै २नि ३सं २ग ३रे ३सं २नि २प २धै

सम अष्ठ युगम यान चैरै हेरै शीत जग

२म २ग २रे २सं २ग २म २प २म २ग २रे

गा.दी. त विगत पाप दर्शन जिह तिरम श्रेष्ठ ।

२सं २ग २म २प २नि

22 धारी ॥ इतिश्वेतरा ॥ सकल देव परम

२प २प २म २ग २रे २सं १नि १प २प

22 ऋषि उदय अस्त वरणानि मे वेदपाठ

१नि २सं २म २ग २रे २सं २प २म

वाणि धार तहिं आत्म भारी ॥ पदपंक

२प २नि ३सं ३ग ३रे ३सं २नि २प २प २ग

ज बालनिधी भृंगरूप सतपराग वांछि

२ग २रे २सं २ग २म २प २म २ग २रे २सं

त नित अमित जगत जात भाव मारी ॥

राग दीपक ध्रुवपद सूर्य ताल ॥ ध ॥

२ग २म २प २ध २प २म ग २रे २म १नि २ध
भास्कर बिम्ब भक्ति दान देत दासन।

१नि २म २ग २म २प २म २ग २रे
नित अनित विश्व जान भाव भजे ते

२रे २म २ग २रे २ग
ज रूपी ॥ इति अस्थायी ॥ पद मासन

२म २प २नि २म २रे २ग २रे २म २नि २ध २प
रक्त पद्म वर्ण भरण स्वर्ण जास मुक

२म २ग २रे २ग २म प २ध २प २म २ग
ट सीस भृकुटि तिलक अलक अत

२रे २सं २ग २म २ध २प

रा·दी· स्वरूपी॥ इति अंतरा॥ उमानाथ बाल·

२ध २म २ग २रे २सं १नि १प १नि २सं २ग

22 विल्ह साथ सदा स्तवन करैं शुभवाणी

२म २ध २प २ध २म २ग २रे २सं २ग २रे

23 सत्य होत श्रुति सह स्वरूपी॥ चरणा·

२ग २म २ध २नि २सं २रे २ग २रे २सं २नि

कंज पर परागा भृंगा रूप बालनिधी सु

२प २ध २म २ग २म २ग २रे २सं

धी दान दीजो चित्त धरे मन स्वरूपी॥

इति दीपक रागस्य चतुर्थ परिच्छेदः॥

अथ दीपकरागस्य दशावतारपरिछेद

माह ॥ राग दीपक ध्रुवपद ताल । ४ ।

२ग २म २पि २नि २प २पि २म २ग २रे २सं

निर्विकार निराधार भक्तहेत लेतस॰

२सं २ग २म २पि २नि २प २पि २म २ग

दा नानाविध भूमि उत्तर वर स्वरूप

२रे २सं २म २ग २म २पि

धारी ॥ इति अस्थायी ॥ हंस मत्स्य क

२नि २सं २ग २रे २सं २नि २प २पि २म

मठरूप वरवराह भूमिधरी प्रहलाद

रा॰दी॰ 28

२ग २रे २ग २म २ग २रे २सा

रछन हित नरहरि तनु धारे। इत्येतरा।

२ग २म २प २नि २प २प २म २ग २रे २सा

वामन वपु धार कारि तीन पाद धरि त्रि

२ग २म २प २नि २प २म २प २ग २रे

वली याचन कर डती चरण गंगभूमि

२सा म २ग २म २प २नि २सा २ग २रे २सा

चारे॥ परशुराम परशु धारि रामचंद्र।

२नि २प २प २म २ग २रे २ग २म २ग

वली हली बुद्ध काल्कि असुर मार भूमि

२रे २सा

भर उतारे॥ इतिदीपकरागस्पदशावता

अथ अदीपकी रागिनी दशावतारपरि।

छेद माह ॥ ध्रुवपद ताल चार ॥ पाप ता

प दुःख हरण जग दीश्वर भक्तन पति।

विपति हर करण चतुर विभु श्रेतर्या

मी ॥ इति स्थायी ॥ वैसारिण प्रलय अ

ब्धि तारण मत्र रखपाल कमठ शिव

रा०३०

२पं २म २ग २रे २सं २नि २सं २ग २रे २सं

रि यारि अमृत माथन को थामी इत्येतरा

२नि २सं २ग २म २पं २म २पं २नि २प

24 शूकर भूवदन धरी नर हरि जिन रद्ध।

२नि २प २पं २म २ग २रे २सं २नि २सं २ग २रे

25 करी वामनकी देव मरी जग पावन का

२सं २पं २म २पं २नि २सं २नि २प २नि

मी॥ परशु धार भार टारि राम चंद्र रा

२नि २सं २नि २प २पं २म २ग २रे २सं २नि

वण हनि हलधर बल बुद्ध कल्कि वाल

२सं २ग २रे २सं

विश्व स्वामी॥ इति दशावतारपरिच्छेदः

१ प्रदीपकी रागिनी ध्यानस्

२ हेमता ध्रुवी

३ ससारस पैरोठनायक।

४ स्नेहदललनायक।

५ रागनी कावल्गाद रस

प्र.रा.
१

ॐअथदीपकीरागिनीआरंभः॥ येहरागि
नी भरतमतानुसारदीपककी स्त्री कथनक
रीहै। अरु इसका समय दिनके तीसरे पह
रमें गाई जातीहै। और येहरागिनी षाडवके
स्वरकीहै। और इसका अंश न्यास ग्रह स्वर
धैवतहै। अरु इसमें रिषभ स्वर वर्जित है। १

ौर इसकी ग्रीष्मऋतुहै ।। श्लोक ।। धैवतांश

ग्रहन्यासे रिषभस्वरवर्जिता तृतीययामेदि

वसः प्रदीपकिप्रगीयते ।। अथप्रदीपकीरा

गिनीप्रकीर्णविधिः ।। पालामिथानीसंयु

का जयतश्रीश्चवमिश्रिता प्रदीपकीभवे ।

त्तत्र तृतीयप्रहरात्परम ।। इतिप्रकीर्णवि

प्र.रा. यिः ॥ अरु इसका ब्रह्मा देवता है और ब्रह्माही
२ ऋषि है अरु उष्णिक छंद है षंबीज है अरु ।
इसका अनुकूल नायिका है अरु प्रौढा नाय
का है और शृंगार रस इसका है ॥ अथ प्रदी
की रागिनी साधनम् ॥ ॐ अस्य श्रीप्रदीपकी
रागिनीमंत्रस्य ब्रह्माऋषिः उष्णिकछंदः । २

बलादेवता ऐंबीजं अभीष्टसिध्यर्थे प्रदी

पकीरागिनी जपेविनियोगः ॥ अथप्रदी

की रागिनी करन्यासः ॥ ॐ ऐंअंगुष्ठाभ्यां

नमः ॥ एवंहृदयादिन्यासे सर्वं कुर्यात ॥

अथप्रदीपकी रागिषोडषोपचारेसंपूज्य

आवाहने। आसने। पाद्यं। अर्घ्यं। आचमनी

प्र.रा.
२

ये । वस्त्रे । यज्ञोपवीते । गंधे । अक्षते । पुष्पे । धू
पं । दीपं । कर्पूरदीपं । नैवेद्यं । तांबूले । दक्षि
3
णां । प्रदक्षिणां । पुनराचमनीयं । संष्ठाराध
णामम ॥ अथप्रदीपकीरागिनीमंत्रः ॥ ॐ
पेप्रदीपकेभ्योनमःॐ ॥ इतिप्रदीपकीनमः
अथजपसंख्या दशलक्षा द्वादशसहस्रेच ।

२

अथप्रदीपकीरागिनीध्यानम् ॥ ॐरक्तां

बरा रक्तसलोचनाच । सूर्यप्रभा सूर्यम

खी मनोज्ञा । भर्तुः समीपे कमनी य के

ता । प्रदीपकी दीपक रागिनीयम् ॥ अ

थप्रदीपकीरागिनीभाषाध्यानम् ॥ ॐबिं

ब मुखी बिंब लोचन सुंदर चित्त हरे तिया

प्र॰रा॰ कामरती ॥ कंतसमीप विराज रही जि
४ म सूरज दीपति देषि अती ॥ दीपकराग
की रागिनि गायन गावत ग्रीषम काल॰
मती ॥ वासर यामगयो जब हूसर तीस
र मोक्ष सु बुद्धि मती ॥ अथ श्रीदीपकीरा
गिनी देवतामंत्रः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॐ ४

अथप्रदीपकीरागिनीदेवताध्यानम् ॐब्र
त्नाएरक्तवर्णाभे पीतवस्त्रैरलंकृते चत्र
भंजेचनबेड्के मस्तवंस्कविद्दलकम् ॥
अथममस्तरसकोविदाप्रौढानायिकेलछ
णम। दोहा। ममस्तरसकोविदा कोविद।
कहितबषानि ॥ जोरसभावेप्रीनमहीमांही

प्र॰रा॰ ५ रसकी दानि ॥ कवित्त ॥ देषीहै गोपाल एक

गोपिका अनूप रूप सोने ते सलोनी वास सोंधे

5 तें सुहाईहै ॥ शोभा को सुभाव अवतारली

नो घनस्याम कियों येह दामिनी यो कामि

नी ह्वै आईहै ॥ देवीकोउ दानवीन मानवी

न होई ऐसी मानवीन हाउंभाउं भारती प

टाईहै ॥ केशोदास सब साधनकी सिद्धि ।
येह मेरे जानै मैनही सें मेंनकाकी जाईहै
अथ प्रदीपकी रागिनी अनुकूलनायकल
क्षण ॥ दोहा ॥ प्रीतिकरे निजनारि सें प
रनारिन प्रतिकूल ॥ केशो मन वच कर्म
करि सो कहिये अनुकूल ॥ सवैया ॥ केहू

प्र.रा
६

नेही बिसरै निसि बासर मेदहसी मधि चेद उ
ज्यारी ॥ त्यौंही दिपै अति नेह सौं देहकी दी
6
प कली सम दीपति न्यारी ॥ तेरीये जोतिज
गै हिये भीतर आवत औरन रातिअध्यारी।
नैनन हूं अरु बैनन हूं तन हूं मन हूं कोन
ही अतिप्यारी ॥ अथप्रदीपकी रागिनी खूंमा ६

र रस लक्षणम । सवैया ॥ ज्ञान तिहारी न

ज्ञान कहो तनमें कछु ग्यानन ग्यानही के

से ॥ केशव कान्ह सुजान स्वरूप न जाय

कह्यो मन जानत जैसे ॥ लोचन सोभाहीं

पीवत जात समात सिहात अज्ञानन नै

से ॥ जौन रहात हैमे बलिजात सुबात ।

प्र. रा. १

कहो नेक वैसो ॥ अब प्रदीपकी रागिनी की
येह ठाठ है ॥ षड्ज सम रहना है। अरु इस
ऋषभ शास्त्र में वर्जित कह्यो है कलावन्तलोक संपूर्ण गते हैं चढा रेषभ
7 में वरजित रिषभ है और गंधार उतरा है अरु
मध्यम भी इसमें उतरा है और पंचम इसमें
सम रहता है अरु इसमें धैवत किंचित उत
रा है और निषाद भी उतरा है इति ठाठ क्रमः १

नात- स्थूल-

अथप्रदीपकी रागिनी सरगमः ॥ सानिध

प पसापसा ॥ इतिस्थाई ॥ अथअंतरा ॥ नि

सागमपसानि सापगम मग पम मगग

सा ॥ अब प्रदीपकी रागिनी की गत संपूर्ण

संगीत प्रकाश के मतानुसार कहीहै गत

मसीतखानी तालयीमा त्रिताला उठेगी ता

सु॰ ता॰ ८

ल की पैहली में सुर में चली अथ स्थाई। अबुर्द ता॰ ३

डिडडा डिड डाडा डाडाडा। डिड डाडिड डा

डाडाडा डा॥ इति स्थाई। स्थाई बजाकर चले

डिड डा डिड डाडा डाडाडा। डिड डाडिड

डाडा डा डाडा। स्थाई के पैहले अबुर्द में सुर

की डिडडा में जा मिला। तोडा। डिड डाडिड ८

8

डा डा डाडाडा। डिड डाडिड डाडा डाडाडा

डिड डा डिड डाडा डा डाडा। डिड डा डिड

डा डा डा डाडा। इति तोडे स्थाई में मिला

माफक पैहले तोडेकी दूसरा तोडा सब॰

ल ताल मैं तोडे चले है ॥ अथ ख्रेतरा स्थाई

तोडे बजा कर तालकी पैहली से चला

प्र॰रा॰ ५ अथ सेतरा॥ डिड्डाडिड्डाड्डा डाडाड्डा।

डिड डा डिड डाड्डा डा डाड्डा। डिड डा डिड

डा ड्डा डाडाड्डा। डिड डा डिड डाड्डाडाडाड्डा

इति सेतरा स्याई के पैहले सब्दे स्वरकी।

डिड्डा में मिला॥ अथ स्यामदीपकीरागि

नी अलापः॥ ननरी ऽना आनननऽननऽ ५

२नि २प २ग २रे २सं २नि २सं २ग
आनन अदतनरी तने तनाउनननना आ।

२म २म २ग २रे २सं
नरा ननन अदनने रन्नु नानुम्॥ इतिस्था

२नि २सं २ग
ई॥ अथ श्रेतरा॥ ननन अदनने आनन।

२म २प २नि २ध २प २म २ग २म
नुम् नानुनै तना तन नरी नना आंन तांन

२प २नि ३सं ३रे ३सं २नि ३सं २नि
तनुम् नुंन तनरी नानुरी रन्नु नना आन

२ध २प २म २ग २रे २सं
नान आन तान रान तनुम्॥ अथ प्रदीप।

ध्रु॰रा॰ १० कीरागिनी ध्रुवपद गानमाह ॥ रागिनी प्रदी
पकी ब्रलस्तने: ध्रुवपद ताल चार ४ ॥

10

अथ प्रदीपकी रागिनी ख्याल परिछेद

मात्र ॥ ध्रुवपद ताल फेप ॥ अन गिन

गुण गण विभु हिं अनेता मनि गुणी

भण भण पारन पैना ॥ इत्यस्थायी ॥

भूमि सकल कण गणन करत कहू

तदपिन नव गुण गण अब सेना ॥

ग.७.

२प २म २ग २म २प २नि ३सं २नि ३सं

इस्थेतना ॥ चतुदश भवनन पत्र रवी।

२नि २ध २नि २ध २प २म २ग २रे २सं २सं २नि

नै ग्रीवि ग्रमत्र हिं मसि चय वेता लेख

२नि २सं २ग २रे २सं २नि २सं २ग २म २प २ध २प

नि स्वतक सरस्वति देवी लिखति यदा

२म २रे २म २प २म २ग २रे २सं २नि २सं २ग २म २प

नित नदपि ग्रनेता ॥ शेषनये नित ना

२नि २ध २नि २ध २प २म २ग २रे २रे २सं

म उचारे सहस्र वदन जिह्व ग्रत वल वे

२प २म २ग २म २प २नि ३सं २नि ३सं

ना ॥ वालनियी इक ग्रल्प मणीषा क

२२ ॥

घन सकत कछु बरणन सेना॥ रागि

नी प्रदीपकी ध्रुवपद ताल गीत॥श्रीवे

द केद श्रवेड पूरण भक्त जन सहाव दा

यिके पाप ताप विनाश कारक सवि

दा नेदं॥ इत्यस्थायी॥ यद्भीति याव।

क पवे वह्नि पवन वियति प्रचारकेत

ग·भ·

२२

12

२म २पि २प २पि २म २ग २पि २म २ग २रे
पति दिनकर याम यारक वारि वारि दमै
२सै २पि २म २ग २पि २नि २नि
तजे ॥ इत्यन्तरा ॥ जगायरिणि वन गिरि
२सै २नि २नि २सै २नि २प २पि २म २पि २नि
नारि नरवर पुंज भार उनारही नभवायु
२प २नि २प २पि २म २ग २म २पि २म २ग २रे २सै
अनल कवेथ पृथ्वि शाक्तिदे परमे यजे ॥
२पि २म २ग २म २पि २नि २सै २नि २सै
सम खगण चार कन्योनि नारक लोक।
२नि २प २पि २म २पि २नि २पे २नि २प
अलोक विधायिके जन बालनियि पग

२पं २म २ग २म २पं २म २ग २रे २सं

कैज सेवकि दया यार सदा सजे ॥ ॥

इत्याभोगः ॥ ॥ इति ब्रदीपकी रा

गिनी ब्रह्मपरिछेदः ॥ ॥ ॥

13

अथ प्रदीपकी रागिनी शक्ति परिछेद

माह ।। ध्रुवपद ताल चार ।। जगदीश्वरि

जगदंबा प्रगत जगत पर रही विश्व।

शक्ति पद्माकर सद्म वाम थायो।

इत्यस्थायी ।। निद्रा निज त्याग जागा

प्रात समै कुसुम कमल विमल लिये

ग॰ भ॰ अर्पै नउ श्रीनि नुत उवास्यो ॥ इत्येतरा ॥

२४ याह्यो तैंह परम धाम रमा युक्त मोद ।

14 करैं भरैं रहैं विविध ऋद्धि सिद्धि सब

मे भास्यो ॥ श्री लक्ष्मी चरण शरण ।

धारे नित बाल विप्र क्षिप्र दर्श दीजे

मफ काम पूर चास्यो ॥ रागिनी षदी

पकी ध्रुवपद ताल चार ॥ इंद्राणी इंद्र श
क्ति इंद्र रूप धार रही ऐरावत गामिनि।
नित वज्र कर हिं धारै ॥ इत्यस्थायी ॥ इंद्र
वदनि हंस गमनि कटि केहर पाद पद्म
पिकबैनी कुंद रदनि मंद हसन धारै ॥
इत्यंतरा ॥ अरि गण कौं कुलिश लियें।

गा·ध· २५ 15

१म १प १नि २सं २सं २ग २म २प २नि २सं २नि २ध २प
खिड खिड खिन हिं करै धरै धीर भक्त जन

२म २ग २म २प २म २ग २रे २सं २सं १नि २रे २सं
न अनंत स्राव सुधारै ॥ ऐसी जगदेवा ।

१नि १ध १प १म १नि २सं २रे २सं १नि २सं २ग २म
के पाद केज बालनिधी षट पद वत ।

२प २नि २ध २प २म २ग २रे २सं
ध्यान धरै नमो पद उचारै ॥ इत्याभोगः

इति प्रदीपकी रागिनी शाक्ति परिच्छेदः

॥ ⁘ ॥ ⁘ ॥ ⁘ ॥

अथ प्रदीपकी रागिनी गणेश परिछेद।

माह ॥ ध्रुवपद ताल चार ॥ सुमरो वक्र

तुंड देव गणनायक विघ्न हरण करण

भरण कर्णिकार धारिक सब दाता ॥

इत्यस्थायी ॥ विघ्नन गण भक्त जानमान

उदर बृह्ह सुभग उरग यत्त सत्र पुत्र गौ

रा॰ प्र॰ रि प्रेग जाता ॥ इतिप्रेतरा ॥ सूविक गम॰

२६ हष हरन करण सदा सिद्ध काज लाज

16 धार विरथ सहृद भक्त जनन पाता ॥

परशु पाणि दंत एक संत जनन परम

शरण बालनिधी सधीदान करण को

बियाता ॥ इत्याभोगः ॥ रागिनी प्रदीपकी

२नि २सं २ग २रे २सं २सं

ध्रुवपद ताल चार ॥ एकदंत संतन प

२नि २प २नि २सं २नि २प २पं २म २म २पं २नि

ति विपति हरण परम चतुर आतुर ता

२सं २सं २नि २सं २ग २रे २सं

हर करण धरण धीर जनको ॥ इत्यस्था

२पं २म २ग २म २पं २पं २नि २सं कीन २नि २प २नि

यी ॥ खंड दंड सावर दंड लीन केलि प

२नि २प २पं २म २ग २रे २सं २नि २म २ग

रम उमा शिवर धारि फलो करो हास

२रे २सं २नि २सं २ग २म २पं

मनको ॥ इत्यंतरा ॥ चारुभजा चारिधारि

ग॰ ३॰ पीत लिये अंकुश नित अमित अभय दान
देत नायिक शिव गणको ॥ परशु हाथ
17 रदन साथ अपर हस्त लिये मस्त रहें स
दा बालनिधे वरहि देहि धनको ॥ ❖ ॥

इन्द्राभोगः ॥ इति प्रदीपकी रागिनी गणे
शपरिच्छेदः ॥ ❖ ॥ ❖

अथ प्रदीपकी रागिनी विस्व परिछेदमा

२नि २सं २ग २म

ह॥ ध्रुवपद ताल चार॥ लक्ष्मीनारायण

२प २म २प २नि २ध २नि २ध २प २म २म

विभु जगत पितर बीज रूप एक हि अ

२ग २रे २सं २नि २सं २ग २रे २सं

नेक रूप कारण बपु धार्यो॥ इतस्याई

२प २म २प २नि २सं २नि २ध २नि

शेष शयन मैं न पिता नाभि कमल प्र

२नि २सं २नि २ध २प २म २ग २रे

कट कियो चतुरानन तासें भयो जिन

रा.प्र.
१८
18

हिं जग उभारो ।। इतिश्रेतरा ।। सप्तर्षिदे
व पुंज अमर नाग नारी नर पसु पंछी ।
जीव जंत अगत जगत कारो ।। तिनने
हिं बुद्धि रहित दैव बल चिंतत भये वा
मखिया भाग दत पुरुष जग अवारो ।।
इत्याभोगः ।। रागिनी प्रदीपकी ध्रुवपद

२नि २सा २ग २म २प
बिलजी ताल चार ॥ तीर निधी मदन ब
२प २म २ग २म २प २नि २ध २नि २ध २प
दन कोटि मदन मेद करण धरण धीर
२म २ग २रे २सा २नि २सा २ग २रे २सा
भंजनन श्रति श्रनेद कारी ॥ इत्यास्थायी ॥
२प २म २ग २म २प २नि ३सा २नि २ध २नि ३सा
कौमोदकि गदा धारि कारि कदन दनु
२नि २ध २प २म २ग २रे २सा २नि २सा २ग
ज पतिन हैम नेत्र मधुकैटभ श्रादिनको
२रे २सा २नि २सा २ग २म २प २ध २प
नारी ॥ इत्यंतरा ॥ सहस्र श्रार चक्र प्रबल

गा॰ प्र॰ प्राण सार धारै नित भक्तन हित अहित वे

ड विड दंड धारी ॥ अपर हाथ पांचजन्यय

न्य थन उचारी शुभ केज मंज बालनिधी

अशुभ शुभ निवारी ॥ इत्याभोगः ॥ ❖ ॥

इति प्रदीपकी रागिनी परिच्छेदः विष्णुजी

२९

19

अथ प्रदीपकी रागिनी सूर्य परिछेदमाह
ध्रुवपद ताल चार ॥ लोक वेधु अंधकार
नाशन हित प्रकट जोत नित उदोत पा
प हरण बुद्धि विशद कारी ॥ इत्यास्थायी
अरुण वर्ण भरण कुंडल श्रुति फलक ।
तिलक भाल माल गरै मुकुट विकटशो

गा० ३०

२० 20

२ग २रे २सं २नि २सं २ग २म २म २प
वि यारी ॥ इतिश्रेतरा ॥ प्रभु जात मात तात

२म २प २नि २ध २नि २ध २प २म २ग २म २ग २रे
विकच करण परम मित्र मचादिक कर्म

२सं २नि २सं २ग २रे २सं २प २म २ग २म २प २नि
सानि विविध भय निवारी ॥ ऐसे प्रद्योतन

३सं २नि २ध २नि ३सं २नि २ध २नि २ध २प २म २ग
के चरण शरण बालनिधी सधी दानदी

२ग २रे २सं २नि २सं २ग २रे २सं
जो हर जाउप नम विकारी ॥ इत्याभोगः ॥

रागिनी प्रदीपकी ध्रुवपद सूर्य ताल ४ ॥

प्रभा करण प्रत प्रचंड जग मंडन प्रक
ण वर्ण धरण करहिं कंज युगम युगम
कटक धारी ॥ इति प्रस्थायी ॥ जग दर्शी
न लेत देत निज दर्शन परम सावद।
सदा गति हिं प्रष्य जास रथ हिं युक्त वा
री ॥ इति अन्तरा ॥ नानाविध भरण धर।

रा॰ प्र॰

२धृ २म २धृ २नि २प २नि २नि २प २धृ २म
ण डस किरण शोभित नित पीत वस
२म २ग २रे २स २नि २स २ग २रे २स २धृ २म
22 न भेद हसन ग्रति ग्रनंद कारी ॥ धारी॰
२ग २म २धृ २नि २स २नि २प २नि २स
21 शिर मकुट भृकुटि चंदन की खोर व
२नि २प २धृ २म २ग २रे २स २नि २स २ग
नी दिवामणी चरण शरण बालनिये
२रे २स
भारी ॥ इत्याभोगः ॥ ❖ ॥ इति प्रदीप॰
की रागिनी सर्य परिछेदः ॥ ❖ ॥

अथ प्रदीपकी रागिनी शिव परिछेदमा

२सा १नि २म२ग २रे २सा

ह। ध्रुवपद ताल चार॥ भस्म अंग जटा।

२नि १प १ध १म १प १नि २सा २सा १नि २सा

शिखर मलिर डौरु डमक बजे शिव नो

२ग २म २ध २म २ग २म २ध २म२ग२रे२सा

डव मोद करै उमा को रिझावै॥ उलास्या

२ध २म २ध २नि २सा २नि

यी॥ चरण धरत ठुमक ठुमक झणक

२नि २प २नि २प२ध २म २ग २म २ग २रे २सा

झणक नूपुर रव विविध भांत हावभाव

गा॰ध्रु॰

सोत गान दिखावैं ॥ इत्येतरा ॥ रमापति स
देग रंग रंग पर्ण बाय लई नेद्दरा नेबक
कर गान युत बजावैं ॥ नारद ऋषि बीण
कीन सर्बन युत बालनिधी उमा प्रेम॰
मोद युक मोद मम वढावैं ॥ इत्याभोगः
रागिनी प्रदीपकी ध्रुवपद शिवजी ॥ ताल ध॥

अष्टपदी शिवजी ॥ शिवेरि वाम सद्म

जाम पासरहे उमासदा अमदा विस अ

कलियें कीयें सरन भारी ॥ इतिअस्थाई

वर्ष सहस्र बीतगाये चिंतातुर देवभये

इनहिं जात तातकैरें घात जगत भारी॥

इत्येतरा ॥ चलहिं सरत हरकैरें थैरें थी

गा·ञ·

२३

23

र सकल जगत गये देव महादेव भीत।
वहिर चारी ।। अनल विहग रूपधार ने
दि ह्रास्य देष ह्वार गयो शेभु कर्ण देश
देव पुनि उचारी ।। यारी जब शेभु सव
न त्याग वहिर देष भ्रमर कहै कहो म
न यात निज भागम किम कारी ।। योगि

२ग २म २प २म २प २नि २प २नि २प २प

गाय स्रवत तज्यो तजों छुक थार वहि क

२प २म २ग २रे २सं २सं २नि २सं २ग

उ अनल पान वलो दलो तज्यो भूमि।

२रे २सं २प २म २ग २म २प २नि २सं २नि २सं

जारी ॥ भूमि तज्यो गंग जरी उब्बल पा

२सं २नि २प २प २म २ग २म २प २नि २प २नि

रण पुंज तज्यो वर कुमार रूप मदन।

२प २प २म २ग २रे २सं २प २म २प

सघनि तव उचारी ॥ सुन नारी घटक

२नि २सं २नि २नि २प २नि २प २प २म

तहो थाइ गयो बालानियी घटम्बव क

रा॰ध्र॰ र पान कीयो रतन पय सधारी ॥ ❖ ॥

इत्याभोगः ॥ इति ध्रुपदीपकी रागिनी शि

वपरिछेदः ॥ ❖ ॥ ❖ ॥

२४

२५

५१

अथ नवरस वर्णनम। चौपाई। शृंगार

वीर करुणा जान। अद्भुत हास्य भयान

क मान। बीभत्साख्य रौद्र सम कैहे।

कविता मे नव रस रस लैहे॥ रत

उत्साह शोक आचंभा। हासी भय ग्ला

नी घृत निंदा। क्रोध विरक्ति स्थायीजा

२ध २म २ध २नि २ध २पि २म २ग २रे २सै

२· न । नव रसकी करले पेहचान ॥ अथ शृं

25 गार रस लक्षणम् । दोहा । राग भैरव ता

२म २ध २नि २सै २रे २सै २नि

ला ३ ॥ रति पति की अति चातुरी । रति

२ध २पि २म २रे २म २ध २नि २सै २नि

पति मैत्र विचार । ताही सो सब कहत

२ध २पि २म २ग २रे २सै

है । कवि को विद शृंगार ॥ अथ उदा

हरणम् श्रीमद्भागवते राग भैरव ता· गीत ॥

ताभिः समेताभि रुदार चेष्टितः प्रियेः
तणे त्कुलमावीभि रच्युतः।। इति।
स्पाइ।। उदार हासद्विज कुंद दीधति
व्यरोचतेंण क इवो डुभि र्वृतः।। इति
घेतरा।। बाहु प्रसार परिरंभ कराल
कोरु नीवीस्तनालंभन नर्म नाखाग्र

२-श्रृं- पाते:॥ त्रैलोऽवलोक हसितै व्रजसे-

78

हरीणा मनेभयन् रतिपति रमयो व

कार॥ इत्याभोगः॥ अथ श्रृंगार रस भा

षा॥ अष्टपदी राग भैरव ताल ३॥ ते

गर दन दन संकीर्ति नंदिनी निरतित।

अत हिं सहावैं॥ इतिस्थाई॥ चमक-

२नि २सं २रे २सं २नि २प २पं २म २ग २रे
चमक चपला मय बारिद नील बर्ण-

२ग २रे २सं २ग २म २पं
मनै भावैं ॥ इतिधेनरा ॥ चंचल चल

२प २पं २म २ग २रे २ग २म २म २पं २ग
न चमक चामीकर भूषण रुचिर क

२रे २सं २म २प २नि २सं २रे २सं २नि
णावैं ॥ राम बिलास हास दंत दीप-

२प २पं २म २ग २रे २सं २ग २म
ति तिमर मनोज मिटावैं ॥ आलिंग-

२पं २प २पं २म २ग २रे २ग २म
न भाव चुंबन कुच फर परम अनंद

२ग २रे २सं २म २प २नि २सं २रे २सं

२.स्फे. वढावैं ॥ गुंजन मत्त मधु व्रत कुंज-

२नि २प २धं २म २ग २रे २सं २ग २म २धं

न बीच सुरति रस पावैं ॥ मंद सुगंध

27

२प २धं २म २ग २रे २ग २म २ग

शीत गुण मारुत मरद वेद चित-

२रे २सं २म २प २नि ३सं ३रे ३सं २नि २प

भावैं ॥ मुरली मधुर अधर रस मोहि-

२धं २म २ग २रे २ग २रे २सं २ग २म २धं

त बाल कमल गुण गावैं ॥ या छबि दे-

२प २धं २म २ग २रे २ग २म २ग

ख बाल निधि उर मध्य ध्यान धार सु

२२ २मि
त्वयावै ॥ इत्याभोगः ॥ इति श्रृंगारर
सवर्णने प्रथमोध्यायः ॥ ❖ ॥:

रा. क्षे.

78

अथ हास्य रस लक्षणम ।। दोहा । राग

२ग २म २पै २प २नि २प

भैरव ताल तीन ।। जहां परिजन सब ह

२पै २म २ग २रे २सै २नि २प

सि उठैं तज दंपति की आन । केशव

२पै २म २प २नि २सै २रे २ग २रे

कौन हूं बुद्धि बल सो परि हास बखा

२सै

न ।। अथ हास्य रस उदाहरणाम श्री

२ग

मद्भागवते राग भैरव ताल ३ पहि

हा॰र॰ २१

२म २धा २प २धा २म २ग २म २ग २रे २सा

वीर रसेहै यामो नत्वो त्वक्के मिहो त्वहेः

२म २प २नि २सा २रे २सा २नि

इतिस्याई ॥ त्वयोन्मथित चित्नायाः प

२प २धा २म २ग २रे २सा २ग २म २धा

मीट पकषर्षम ॥ इति अंतरा ॥ एवं खि

२प २धा २म २ग २म २धा २म २ग २रे २सा

यो याच्य मानः कृस्मो रामस्य पश्यतः

२म २प २नि २सा २रे २सा २नि २प २धा २म २ग

मवेवीतान्तगानेव प्रहसेत्सखवा

२रे २सा

वहः ॥ अथ हास्य रस भाषा राग भैरव

२ग २म २प २ध २प २म २ग

ताल ३ ॥ चल प्रणाम कुमर ब्रज मोर

२रे २सा २म २ध २नि ३सा २नि २ध २प २म २ग

भवन ॥ तोहि त्यागि मको ना श्रवहि प

२रे २सा २रे २म २प २ध २प २म २ग २रे २सा

लन ॥ गार लागि हरो डाव मदन जरत

२म २ध २नि ३सा २नि २ध

इतिस्थाई ॥ नव देव ग्वाल बल देव

२प २म २ग २म २प २म २ग २रे २सा २ग

हसित भाव सकुचित घत लज्जित श्र

२म २प २ध २नि २ध २प २म २ग २रे २ग २म

पसर पत कुबरि श्रेव श्रेवर कहे सेद

हा०२०

30

र करहु कृपा मोहु चरण शरन ॥ इति

श्रेतरा ॥ कहे कमल माधुरि तिया थन

थन आदर देत विदेशि पथिक जन।

विहसित वदन कहें सब बालक जा

इ जाइ रसियन अन मन । जानिया

तिरछि हथिआर वेधित विसरी का

२पा २म २ग २रे २सा २म २प २नि

य कहे गुण सविधन । धन धन धन

२सा २नि २प २पा २म २ग २रे २ग २म २पा

जस मति को नेदन बडो सुयश इन

२म २ग २रे २सा २ग २म २पा २प २पा

सनहि गुणन । चलउ धाके लव मद

२म २ग २रे २ग २म २पा २म २ग २रे २सा

न परम कर सकल पुरी पुन करो स

२सा २म २प २नि २सा २नि २प २पा २म २ग

मन । पैंच सेचल चले नगर देखने ।

२रे २ग २म २पा २म २ग २रे २सा

बालकम हंसि हंसि वर तन ॥ इतया

हा॰र॰ भोगः॥ इति हास्यरसवर्णने पंचमो
31 ध्यायः॥ ५॥ समाप्तः॥ः

२म २ग २म २ग २रे २सा २रे २सा १नि
तदपि धीर नरहाई ॥ रैम माण गोथ

१ध २सा २ग २म २ग २रे २सा २म
न हग शोबर वहे दिहेनद्य नाई ॥ हा

२म २ध २नि २सा २रे २सा २नि २सा २म २ग
हा कार धार धुन मनि मन विमन बा

२रे २सा
ल ककणाई ॥ इत्याभोगः ॥ इति क॰

कणा रस वर्णने द्वितीयो ध्यायः ॥ २ ॥

र.क.

32

ताल त्रि। २ग

अथ वीर रस लक्षणम्। दोहा। होइ।

२म २पि २प २नि २प २पि २म २ग २रे २सि

वीर उत्साह रस गौरव रण इति अंग-

२प २पि २म २ग २म २प २नि २प २पि २म २ग

अति उदार गंभीर कहै केशवराय उ

२रे २सि ताल गीत॥

मंग॥ अथ वीर रस उदाहरणम्॥

२ग २म २पि २प २पि २म २ग २रे २सि

अगरुह केशेषु चलत्किरीटे निपात्य

२नि २प २सि २ग २रे २सि

रंगो परि रंग मेघात॥ इति स्थाई॥

वी॰ र॰

33

२म २प २नि ३सं ३रे ३सं २नि २प २पं
नमो परिषो न्वय मझ्ननामः पणात ।
२म २ग २रे २ग २रे २सं २म
विष्वाग्रय ग्रात्मतेत्रः ॥ इतिग्रेतवा ॥ के
२ग २पं २प २पं २म २ग २रे २ग २म २पं २म
मे परेते विचकर्षभूमौ हरिर्यथेभ ज
२ग २रे २सं २म २प २नि ३सं ३रे
गतो विपश्यतः ॥ हाहेतिशब्दः सम॰
३सं २नि २प २पं २म २ग २रे २ग २म २ग २रे २सं
होस्तदा भूडदीरितः सर्वजनैर्नरेन्द्र ॥
ग्रथवीर रमउदाहरणम् भागवते ॥

वी१

२रे २सा २नि २प २रे
राग भैरव ताल । ४ । नंद नदन सबल

२सा २ग २म २पा २प २नि २प २पा २म
प्रबल ग्वाल बाल संग लियें रजिक

२ग २रे २ग २म २ग २रे २सा
सीस छेद भेद कियो हलि भारी ।। इति

२म २प २नि ३सा ३रे ३ग ३रे
स्याई ।। ताल तोताल सषिकादि सषि

३सा २नि २प २पा २म २पा २प २नि २प २पा
न कर हर चरण वाणैं हर करण ।

२म २ग २रे २सा २रे
मारि गण बिहारी ।। इति श्रीतराग ।। फट

वी.र.

३५

२सां २नि २ध २रे २सां २ग २म २पं २ध २नि २ध
ति उवल मेव चहो दैाव केस खड्गा फ

२पं २म २ग २रे २ग २म २पं २म २ग
हो चट पटाक कपट घमर केस कर

२रे २सां २म २ध २नि ३सां २रे २ग ३रे
हे थारी ।। भामण कर भूमि एह पात:

३सां २नि २ध २पं २म २ग २रे २ग २म
न कर उपरि पै रै हरै घाण दिवज मच

२पं २म २ग २रे २सां
ज वाणि जय उचारी ।। इति आभोग: ।।

इति वीररसवर्णने द्वितीयोध्याय: ।२।

ताल। ३। २ग

अथ कक्कण रस लक्षणम। दोहा। प्रिय

२म २पि २ध २नि २सि २रे २सि २नि २ध

के विग्रय करण ते प्राय कक्कण रस हो

२ध २नि २सि २ग २म २पि २ध २पि २म २ग २रे

त। ऐसो वर्ण बषानिये जैसो अक्कण उ दो

२सि

त॥ अथ उदाहरणम कालीनाग दम

नप्रसंगः भागवते राग भैरव ताल चार

२ग २म २पि २ध २पि २म २ग २रे २ग २म २पि २ध

गोप्यो नु रक्क मनसो भगवत्यनेते तत्सौ

२ति २प २पे २म २ग २रे २ग २रे २स
२.क. त्वदस्मित विलोक गिरः स्मरेत्याः ॥ इति

२म २प २ति २स २रे २ग २रे २स २स
स्याई ॥ त्रस्तेहिना प्रियतमे भृशा ऊः व

२ति २प २पे २म २ग २रे २ग २म २प २म २ग २रे
तमा सून्य प्रिय व्याति त्वते दहन्न स्विले

२स २ग २प २प २प
कम् ॥ इति श्रेतरा ॥ ताः क्रलमातर मघे

२प २म २ग २रे २ग २प २प २प २प २ति २प
त्य मन प्रविष्टा तल्य वाप्याः समव्र ट

२प २म २ग २रे २स २म २प २ति २स २रे
त्य प्रवः स्ववेत्याः ॥ तास्ता व्रजः प्रिय.

२ग २रे २सा २नि २ध २प २म २ग २रे २ग
कथा कथयेंत आसन कमलानने थित:
२म २प २म २ग २रे २सा
हर्षो मतक प्रतीका:॥ अथ कलणार
म भाषा॥ अष्टपदी राग भैरव ताल तीन
२रे २सा २नि २ध २नि २सा २ग २म २प
कस निमग्न यमुन काली हृद सुन:
२ध २प २म २ग २रे २सा २म
जमु मति बिल लाई॥ इति स्थाई॥ आ
२ध २नि २सा २रे २सा २नि २ध २प
ये गोप सकल गोपीगण नंद सहित

क॰र॰ ३६२

तहो याई ॥ इतिश्रेतरा ॥ देषि ग्रभाव ।

प्रणाम कोमल तनु निज तनु सघ वि

म राई ॥ याइ यशोधा नेद गोप जल

पतन हेत कर लाई ॥ वरजत पक

र पकर कर डःखित नैननीर नस।

माई ॥ कुल ग्रभाव धारि बल वर्जित

अथ रौद्र रस लक्षणम्। दोहा। राग भै
रव ताल ३ ॥ होत रौद्र रस क्रोध म
य विग्रह उग्र शरीर। अरुण वरण।
वर्णत सबै कहि केसव मति धीर ॥

अथ रौद्र रस उदाहरणम्। श्रीमद्भाग
वते। राग भैरव ताल ५ ॥ अहो पेख

गी॰ २॰

२प २ध २प २म २ग २रे २ग २म २प २ध
य्य मन्त्रानोमन्वानामिवमानिनो । श्रमे

२नि २ध २प २म २ग २रे २म २ग २रे २सं
बज्रागिरोहतःकःसहेतानुशासितः

२म २ध २नि ३सं ३रे ३सं २नि २ध
इतिस्थाई ॥ श्रयानिक्षोरवीहर्षीकरि

२प २म २ग २रे २ग २म २प २ध २नि २ध २प
ष्यामीत्यमर्षितःरहोत्वाहलमुतस्यो

२म २ग २रे २सं २ग २म २प २ध २नि २ध
दहन्निवजगत्रये लोगलायेणनगर

२ध २म २ग २रे २ग २म २ध २नि ३सं २नि २ध
मुद्धिदार्य्यगजाह्वयम विचकर्षमरो

गायो ग्राहरिष्यन्नमर्षिताः ॥ इत्याभोगः

अथ रौद्र रस भाषा राग भैरव ताल ४

कृस्मा ग्रज परम प्रबल नीलांबर मम

ल पाणि लांगल इति प्रेम लसै ग्ररि

न भय निवारी ॥ इतिस्थाई ॥ कौरव

पति वाणि विकट सनत सार कृपित

गौ. २.

भये कहे सुनो सकल सभा वासी समउ
चारी ॥ इति अंतरा ॥ सकल भूमि कौर
वको नाम करों एक पलक चलन स
कैं एक क्रमण पलटिन गर सारी ॥
गोपि भृकुटि बांध चल्यो धरणी सुत
ल कांपि हल्यो बालनिधी कौरवगण

२म २ग २रे २स

ग्राहि करि प्रकारी ॥ इत्याभोगः ॥ इति

रौद्र रस वर्णने ॥ अष्टमो ध्यायः ॥:

मै· र·

३९ 5

अथ बीभत्स रस लक्षणम दोहा राग

भैरव ताल ३ ॥ निंदा मय बीभत्स र

स नील वर्ण वपु नाम । केशव देखत

सनंही तन मन होइ उदास ॥ अथ

बीभत्स रस उदाहरणम राग भैरव

ताल ३ ॥ श्रीमद्भागवते ॥ उपगुह्या

२नि २स २ग २म २ग २रे २स २म २प

बी·२· त्मजा मेवे हदेत्वा दीन दीनवत् यावि

२नि २सं २रे २स २नि २प २ध २म २ग २रे २स

५०। नस्तोविनिर्भत्स्य हस्तादाचिछिदेबल:

२रे २स २नि २प २नि २स

इति स्याईं घेतरा ।। ते रहीत्वा चरण

२ग २म २ग २रे २स २ग २म

यो ज्ञात मात्रे स्वस्ः हृतो ।। घ्रणोध्यय

२प २नि २स २रे २स २नि २प २ध २म

छिला एष स्वार्थो मूलित मैत्स्यद: ।।

इत्याभोग: ।। अथ बीभत्स रस उदाहर

२ग २ग
राम भाषा राग भैरव ताल ४ ।।आद

२धॅ २प २नि २प २धॅ २म २ग २रे २सॅ २रे २सॅ
कमल बसंतिथी कमलदल कमल प्रकट॰

२नि २प २नि २सॅ २रे २ग २म २ग २रे २सॅ २म २प
भये केस राम घर प्रकटी माया नेदम

२नि २सॅ २रे २सॅ २नि २प २धॅ २म २ग
हर घर लै बसदेव घरे श्री घड बर।।

२म २प २नि २सॅ २रे २सॅ
इति स्थाई ।।जागे द्वारपाल शिशु सुनि

२नि २प २धॅ २म २ग २रे २ग २रे २सॅ
सुन कहो केस आयो ना औसर।।इत्ये

बी.र.

तरा॥ देवकि ग्रेक देवि इक कन्या फट
ति बीन लै भ्रष्ठ इष्ठ तर॥ शिला पृष्ठप
र फटक फेर शिर मार दई निर दईम
हा खर॥ ग्रेबर बाणि भई पिक पिक
कहे वृथा पाप मति कियो निमाव र॥
तव मारक प्रकटे गोकुल मय प्रथम

बैठैं नहि तदपि बिषाकर ।। बाल नि

धी सुन उमन भयो अब हाहा दैवक

हो बिलला कर ।। इत्याभोगः ।। अथ

बीभत्स रसः ग्लानिमयः ।। राग भैरव

ताल ५ ।। रामो दाशरथी श्रीमान्नम

स्कृत्य महेश्वरम । मेत्व वियाय नीला

बी॰ २॰ पै लंको प्राप्य महाबलैः॥ इतिस्याई॥

युद्धं चकार धर्मात्मा रावणादि निशा

चरैः बाणांधकारे संजाते कुंभकर्णः

समागतः तेदृष्ट्वा तत्र सः सर्वे वानरा

मितवि क्रमाः॥ इतिधैवत॥ भक्तया

मानस बाहुभ्यां यद्यत्स्यंहन्वयाहिताः

२ग २म २प २प २प २म २ग २रे २ग २रे २सं

तेजस्वान तदा रामो सुस्राव रुधिरेबद्धः

२म २प २नि २सं २रे २सं २नि २प २प २म २ग २रे

रावणादि गणं पश्चा दहनन्नि शतैः

२सं २ग २म २प २प २प २म २ग २रे २ग

शरैः रुधिर रक्तव्य वसानाडी ग्रस्यिके

२ग २रे २सं २म २प २नि २सं २रे २सं

शुद्धिसंकुला। नदी सम भवत्तत्र का

२नि २प २प २म २ग २रे २सं २ग २म २प २प २प २म २ग २रे

क फेरु संदप्रदा। तत्र क्रव्याद संख्या

२ग २म २प २म २ग २रे २सं २म २प २नि २सं २रे

ले रक्तपान मदान्विताः। नर्तन्ते परमे

बी. र.

२सा २नि २ध २प २म २ग २रे २सा

चक्र हो थिवा दिवबा दिनः ।। इति श्रा भो

गः ।। अथ बीभत्स भाषा राग भैरव ता

२रे २सा २नि २ध २नि २सा २ग २म २प २म

दाशरथी रामचंद दस कंधर युद्ध मा

२ध २प २म २ग २रे २ग २म २प २म २ग २रे

रु छिन्न भिन्न सर्व अंग सैन्य भयो मा

२सा २म २ध २नि २सा २ग २रे

री ।। इति स्थाई ।। अति तीक्ष्ण बाण

२सा २नि २ध २प २म २ग २रे २ग २म २प २ध

न कर रावण भुज सीस छिदे भिदे स

२ध २म २ग २म २प २ध २म २ग २रे २सं
कल गानस गण धूम मची भारी ॥ इति
२रे २सं २नि २प २नि २सं २ग २म २ध
श्रेतरा ॥ बसा मांस कीच रुधिर सरित
२प २ध २म २ग २म २प २नि २प २ध २म २ग
मरी करी ग्रह भुजा मकर मीस कमठ
२म २ग २रे २सं २म २प २नि ३सं ३ग
कैस जाल धारी ॥ कारी कर नरकपा-
३रे ३सं २नि २प २ध २म २ग २रे २ग २म २ध
ल पान करै रुधिर रक्त वदनि पीत-
२प २ध २म २ग २रे २ग २रे २सं
रदनि हसे दन्त वरण चारी ॥ इत्याभो

बी·र· गः ॥ ❖ ॥ इति बीभत्स रस वर्णने सप्त

५ मो ध्यायः ॥ ७ ॥ ❖ ॥

अथ भयानक रस वर्णनम् ॥ दोहा राग

भैरव ताल ३ ॥ होइ भयानक रस स

दा केशव श्याम शरीर। जाको देषत

मनहीं उपज परत भय भीर ॥ अथ

भयानक रस उदाहरणम् श्रीमद्भा

गवते राग भैरव ताल। ३ ।स्थायी।

भ॰ र॰

२पै २प २पै २म २ग २रे २ग २म २पै २म २ग

स्थूला वर्षधारा मेचत्स्वभेष्वभीक्ष्णशः

२म प २नि २सं २नि २प २पै २म २ग २रे २ग २म

जलौघैः प्लाव्यमाना भूर्नादृश्यत नतो

२पै २म २ग २ग २म २पै २प २नि ३सं

न्नतम्॥ अत्यासारातिवातेन पशवो

३रे ३सं २नि २प २पै २म २ग २रे २सं २रे ३सं

जातवेपनाः गोपा गोप्य स्वशीतार्ता

२म २पै २प २पै २म २ग

गोविंदं शरणं ययुः॥ इति श्रेतरा ॥

२म २प २नि ३सं ३रे ३सं २नि २प २म

शिरः सुतो स्वकायेन प्रच्छाद्या सारपी

२ग २रे २ग २म २प २ध २नि २ध २प

डिताः वेपमाना भगवतः पादमूल।

२म २ग २म २ध २नि २नि २नि २ध २प

मुपाययुः ॥ कृष्ण कृष्ण महाभाग त्व

२म २ग २रे २ग २म २प २ध २नि २ध

न्नाथे गोकुले प्रभो त्रातुमर्हसि देवा-

२प २म २ग २म २प २म २ग

न्नः कुपिताच्छक्रवत्सल ॥ इत्याभोगः

अथ भयानक रस भाषा ॥ राग भैरव

२ग २म २प २ध २प २म

ताल ५ ॥ त्राहि नाथ प्रलय मेघ गा

भ॰रा॰ झै गर्ज तडित चमक उपल वर्ष धारण

रत बूडत ब्रज सारी ॥ इतिस्थाई ॥ ब्र

ति व्याकुल शीत भीत कंपत तन थ

र थरात गोपी गण ग्वाल बाल गैय

न कुल सारी ॥ इतिअंतरा ॥ जोष स

कल सलिल वैहें रैहें शेष प्राण कब्दु

२प २ध २नि २ध २प २म २ग २रे २सं १नि १ध २ग

कग्रणर निचय वमन पात्र छत्र बहें

२रे २सं २म २ध २नि ३सं २रे ३सं २नि २ध

भारी ॥ थल उन्नत निम्न देश उदक

२प २म २ग २रे २ग २म २प २ध २प २म

सकल व्याप गये राषि राषि बालक्का।

२ग २रे २ग २म २ग २रे २सं

स चरण धारण धारी ॥ इत्याभोगः ॥

इति भयानक रस वर्णने षष्ठोध्यायः

ताल॰ ३॥ २ग

अथ अद्भुत रस लक्षणम्॥ दोहा॥ होई

२म २धु ।२प २धु २म २ग २रे ।२ग २म

अचंभो देष सुन सो अद्भुत रस जान।

२प २नि ।२सा २रे २सा २नि २प २धु २म

केशवदास विलास निधि पीत वर्ण

२ग २रे २सा

वपु मान॥ अथ अद्भुत रस उदाहरणं

श्रीमद्भागवते राग भैरव ताल। तीन॥ ३॥

२रे २सा २नि २प २नि २सा २रे २ग २म २ग

पषघोर तमो वह्नि स्नावकान अमते

प्र.र.

२रे २सा २म २प २नि २सा
हिनः ॥ इतिस्याई ॥ सडुस्मयाग्नः स्वान्ना

२रे २सा २नि २प २धु २म २ग २रे २सा
हि कालाग्नेः सहृदः प्रभो ॥ इतिप्रेतरा

२रे २सा २नि २प २सा २ग २म २धु २प २धु २म २ग २रे
नशाक्क मस्नवारणे मेत्यक्क मक्तोभ

२सा २म २प २नि २सा २रे २सा २नि २प २धु २म
ये । इत्ये स्वजन वैक्लेव्ये निरीत्त जग

२ग २रे २सा २नि २प २सा २ग २म २धु
दीश्वरः । नमत्रि मपिवत्तीब्र मनेतोऽ

२प २धु २म २ग २रे २सा
नेत पाकियक ॥ अथ प्रस्तुत रमउदा

हरणम। श्रीमद्भागवते। राग भैरव ता

२ग २म २ध २प २ध २प २म २ग २रे
ल। तीन ३। रावि रावि नैद नैदन निज ज

२सा २म २ध २नि २सा २रे २सा २नि २ध २प
न ग्वनल काल दिस दस ग्रव हेरो दा

२म २ग २रे २ग २म २ग २रे २सा
हत भ्रावत सकल विपन त्रन ॥ इति

२ग २म २प २ध २प २म २ग
स्याइ ॥ चट पटाक फट जात बांस द्रु

२रे २ग २म २प २म २ग २रे २सा
म विटप लता जर परी धरि निब्रन ॥

अ॰ २॰

२म २प २नि २सं २रे २सं २नि २प २ध
अति कराल दावानल व्याकुल सकल।
२म २ग २रे २ग २म २ग २रे २सं २ग २म
हरिण हरि जरत विहग गन ॥ चारि ओ
२ध २प २ध २म २ग २रे २ग २म २ध २म
र अंगार करैं त्रण भूमि जरत विच ना
२ग २रे २सं २म २प २नि २सं २रे
ग उठा फन ॥ धूम अंध अंबर सम व्या
२सं २नि २प २ध २म २ग २रे २सं
प्यो आवत अनल गोप गण भच्छन ॥
२ग २म २ध २प २ध २म २ग २रे २ग २म
अबहीं मरत सकल गोपीगन गोधन

त्राहि त्राहि माधव निज जन धन ।। हे
मि बोले जसमति को वेदन त्यागो ।
भीति मूंद सब नैनन ।। सकल अनल
मचव पान कर्यो तब हरित छदन ।
भयो कानन ।। अद्भुत चरित पेषि बा
लक सुत सगरे चले गोप गोपी लै गोधन ।

अ·२ इति स्वकृत रस वर्णने चतुर्थोध्यायः
समाप्तः ॥ ४ ॥ ❖ ॥ः

१ श्लो० सं० [illegible]
२ श्लो० सं० सोमदेवेना
३ श्लो० सं० [illegible]
४ श्लो० सं० [illegible]
५ धनाश्री रागीनी शृंगार रस: ५

ध॰रा॰ ॐअथ धनाश्री रागिनी प्रारंभः॥तानसैन के
१ मतानुसार। संगीतकल्पद्रुमोक्त प्रकार में य
ह रागिनी दीपक की स्त्री है। और इसका सम
य दिन के तीसरे पहिर गावना है अरु येह रा
गिनी संपूर्ण है। और पंचम स्वर इसका अंश
न्यास ग्रह है॥श्लोक। पूर्णा धनाश्री संप्रोक्ता १

गटह न्यासोष्ण पंचमा । पूोषयामे दिने गाने क्रि
यतेस्याः स्वरं शुद्धम् ।। अथास्या प्रकीर्त्ति विधिः
मालश्रीः गौरिका युक्ता टोटिका स्वर मिश्रितः
धनाश्री जायते सम्यक्कथिता हनुमान्मते ।। ये
ह हनुमान मत में मालसिरी गौरी अरु टोडी में
बनती है । अरु इसका सोम देवता है अरु नार

ध॰रा॰ द ऋषि है और पंक्ति छंद है यं बीज है अरु इस
२ का प्रोषितपतिका नायिका है। और दक्षनाय
क है अरु करुणा रस इसका है और ग्रीष्म ऋतु
है॥ अथ धनाश्री रागिनी साधनम्॥ ॐ अस्य।
श्री धनाश्री रागिनी मंत्रस्य नारद ऋषि पंक्ति
छंदः सोमो देवता मामीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनि।
२

योगः॥ अथ करन्यासः॥ ॐ यें अंगुष्ठाभ्यां नमः।
एवं हृदयादिन्यासं सर्वं कुर्यात्॥ ॐ अथ पूजां
विधाय षोडशोपचारैः॥ आवाहने। आसने। पा
द्ये। अर्घ्ये। आचमनीये। वस्त्रे। यज्ञोपवीते। गं
धे। अक्षते। पुष्पे। धूपे। दीपे। नैवेद्ये। दक्षिणा
प्रदक्षिणे। पुनराचमनीयम्॥ इति धनाश्रीरा

य० रा०
२

गिनी सर्व पूजनं कुर्यात् ॥ अथ धनाश्री रागिनी ।
मंत्रः ॥ ॐ धं धनाश्र्यै नमः ॐ ॥ जप संख्या अष्ट
लक्षम् । ८..... । अष्ट सहस्रं च ॥ अथ धनाश्री
रागिनी ध्यानम् ॥ ॐ दूर्वादल श्याम तनु मे
नोज्ञा । पत्रे लिखंती विरहेन दूना । कान्तेक
पोले दधती हृयंबु । निःस्पंद निर्द्धौत कपा ।
२

धनाश्री : ॥ अथ धनाश्री रागिनी आख्यानम् ॥ स
वैया ॥ रति मंदिर के ढिग बाग तहां जल शीतल
नाम रासाय रहै । तनकी तनपीर मिटाइनकों
नियावैठ कछु डखे नाहिं कहै । मन भावन ।
की सुध आई गई विरहा नल अंग जराय है ।
लिखे पत्र धनाश्री दीन भई हग कंजन तें जल

य॰रा॰ याववैहै ॥ अथ देवता मंत्र: ॥ ॐ सैंसोमायनम:
४ अथ देवता ध्यानं ॥ ॐ शंखप्रभे मीनप्रिये शशांक मीशान माले स्थित मीड्य रूपं तमो पहे हे भुज युग्म हस्ते ध्याये हृदब्जे शशिने ग्रहेशम ॥
इति देवता ध्यानम ॥ अथ प्रोषित पतिका ना यिका लक्षणम ॥ हरि बिन कैसे कटत दिन रैन ४

बरषा मे जलजात गहवोरी न नेद मोहरी छरी प
ल छिन स्याव दैन। छाईरे हो वाही देस मैं कै
हो स्याव संदेस भरम हो तिरया के संग चतुर्भुज
चतुरगुण नियान जगजीवन जगन नाथ प्या
रा मिले मधु रैन ॥ अथ दछ नायक लछणम्
दोहा। एक भांति सभ तियन सौं जोको होइ स

य॰रा॰ नेह। करत दलनायक सकल गुणि जन समति ह
५
गेह॥ अथ शृंगार रस लक्षणम्॥ भ्राजति राजति
दंपति भोर॰ करत रंग के रस में भीने नागरि नंद
किशोर। प्रेमन पर भ्रजदीये विलोकत छंद व
दन बिब ठोर॥ इति शृंगार रसः॥ अब धनाश्री॰
रागिनी की येह ठाठ है॥ षड्ज सम रहता है। रे ५

षभ उतरा है गंधार भी उतरा है । मध्यम चडा है

पंचम सम रहता है । धैवत उतरा है । निषाद च

ढा है ॥ अथ धनाश्री रागिनी की येह सरगमः ॥

ताल ३ ४ । पमगरेसामगरेसारेसानिधपमगरेसा

इति स्थाई ॥ अथ अंतरा ॥ पमनिसागरेसामग

रेसानिधपधनिनिधपमगमगरेसा ॥ अब येह

ध॰रा॰ धनाश्री रागिनी की गत मसीत षानी ताल धीमा
६ तिताला उठेगीताल की पैहली में। अथ धमार्ई

डिंड डा डिड डाडा डा डाडा। डिड डा डिड डा

डा डा डाडा। डिड डा, डिड डाडा डा डा डा। डिड

डा डिड डाडा डा डाडा॥ अथ अंतरा तालकी पै

हली में॥ डिंड डा डिड डाडा डाडाडा। डिड डा ६

नि सां रे नि सां म ग म प नि नि

डिड डा डा डा डाठा । डिड डा डिड डा ठा डा

गं सं प म ग रे मं रे नि धे म

डा डा । डिड डा डिड डा डिड डाडाडा ॥ अथा ।

२प २म २ग २रे २सं २रे २सं

स्था अलापः ॥ ननरी इना आनन उनन उआन

१नि १प १प १म १प १नि २सं २ग

न अदतनरी तने तना उननना आनरा ननन

२रे २सं २म

रत नानुम ॥ इति अस्थाई ॥ अथ अंतरा ॥ तनन

२प २ग २म २प २नि २सं २रे २सं २म

अदनते आनन तुम नानुने तना तन नरी न

ध्रु॰ग॰ ना आन तान नतुम नतु नरीन नागरी रना न

१

ना आन तान आन तान नातुम ॥ अथ ध्रुवपद

गानमाह ॥ रागिनी धनाश्री ताल चार ।४॥

१

रागिनी धनासिरी ध्रुवपद ब्रह्मताल ।४।

ज्ञानत जिह शंकर जग शंकर नित ध्या
न धरै ब्रह्म ऋषी वर वसिष्ठ नारद ऋषि
ध्यावै ॥ इति अस्थायी ॥ ज्ञान मान ध्यान
धार कर विचार बार बार नत पदको स
मक सार अंतत हर जावै ॥ इति अंतरा।

ग॰ध॰

सोइ सोइ भेद रहित जैसे सोइ देवदत्त ऊ
न अधिक भेद त्याग वस्तु रूप पावै ॥
त्व पद मैं जीवताई असि माय छोडि या
ई बाल निधी तत्त पद मै परै ब्रह्म गावै।

इत्याभोग: ॥ ॰:॰ ॥ इति धनासिरी रागि
नी ब्रह्म परिछेद: ॥ ॰:॰ ॥ ॰:

अथ धनासिरी रागिनी प्राक्ति परिछेदमाह

१नि २स २म २ग २प २प

ध्रुवपद ताल चारा॥ हरि माया परम वि

२प २ध प २म २ग २म २प २नि २स २नि २ध २प २म

भव धारिणि जग व्यापरही आत्मरूप म

२प २म २ग २म २प २म २ग २ २स

ल जीव देह मान धारी॥ इति अस्थायी॥

२प २म २ग २म २प २नि २स २नि २स २ग २ २स २नि २ध

वनिता सुत बंधु दास द्रविण पशू विवि

२प २प २म २ग २म २प २नि २स २नि २ध २प २म २ग

ध भांत करौ मन हुलास सकल ममता॥

गा॰ ध॰

भइ भारी ॥ इति अंतरा ॥ अभिन गाननना
था करो थरो थीर वेधु जनन ममहि बुद्धि
विषाद जानि सभा मध्य सारी ॥ भारी स
म कार्य साय निज इच्छा पूर करो बाल
निधी माया मय जीव जगत चारी ॥ इति
आभोगः ॥ रागिनी धनासिरी ध्रुवपद ता

ल चारा ध। वैया जब जगत रच्यो दोइ।
भोत भांति रची विचित भयो सकल ज
गत मोह धारि भारी ॥ इति प्रस्थायी ॥
प्रथम हेम रजित आदि रच्या रूप भांति
रची जिह प्रताप माथु मैत विविध जग
त चारी ॥ इति अंतरा ॥ इती त्रिया परम

रा॰ध॰

रूप भूषण भर माइ देत लेत तपनि का
म सकल कीये स्पषि विकारी ॥ बाल॰
निधी दोइ भोति भरम त्यागि जोउ दि
हे मोइ शिव स्वरूप प्रकष निज स्वरू
प यारी ॥ इत्याभोगः ॥ ० ॥ इति धना
सिरी रागिनी धाति परि छेदः ॥ ० ॥

अथ धनासिरी रागिनी गणेश परिछेद

२नि २सा २ग २म

माह ध्रुवपद ताल चार।धा। हस्तिबदन

२प २प २प २म २ग २म २प २नि २सा २नि २ध

विघ्न कदन एकरदन विशद जास साये

२प २म २प २म २ग २म २प २ग २रे २सा

तन चंद्र किरण विक्रम द्योत धरिणी

२प २म २ग २म २प २नि २सा

इति अस्थायी॥ नाग जात भात भाल।

२नि २सा २ग २रे २सा २नि २ध २प २प २म २ग २म २प २नि २सा

भाल गौरै पौरै भेरा जामो प्रति गेयलवा

ग॰ध॰

२२५

त्रेध्य मन विकरणी ॥ इति ध्रुतरा ॥

वारिभजा कोमल कर करी सुभग सो

भि रही कर्णिकार पुष्पित निम रत

न जडित भरणी ॥ नाग यक्ष सुरचय

रै हरै कलुष विविध भांत बालनि ।

थी चरण शरण दीजे भव तरणी ॥

रागिनी धनासिरी ध्रुवपद ताल चार ४॥

२नि २सा २ग २म २प २प २ध २प २म२ग २म २प २नि
वक्र तुंड दीर्घ काय कोटि सूर्य प्रभा।

२सा २नि २ध २प २म २प २म २ग २म २प २म २ग २रे २सा
धरै हरै प्रविन पुंज गुंज माल गरैं भारी

२प २म २ग २म २प २नि २सा २नि
इति प्रस्थायी॥ करी फणि धनसत्र धा

२नि २सा २ग २रे २सा २नि २ध २प २प २म २ग २म
रण शिर मकुट त्रिकुट हैमि शिखा।

२प २नि २सा २नि २ध २प २म २ग २रे २सा
दमक रही इंडु कला धारी॥ इतिअंतरा

ग॰ य॰ पीत वसन हेम रशन वलय पाणि चारु

२२ चतुर रक्तवर्ण चारिभुजा येगद युत सा

5 री ॥ येने विघ्न नाशन पद चरण शरण

बालनिधी करो विपत हर सकल विक

ल ताप हारी ॥ इत्याभोगः ॥ ~ ॥ इति य

नामिश्री रागिनी गणेश परिछेदः ॥ ~ ॥

अथ धनासिरी रागिनी विस्नु परिछेद

२नि २सं २म २ग

माह्र ध्रुवपद ताल गीत ॥ पीत अंबर

२म २पं २ध २पं २म २ग २म २पं २नि २सं २नि

श्याम सुंदर शंख चक्र गदाधर अंबु

२ध २पं २पं २म २ग २म २पं २म

जान्वित पाणि सुरवर चरण कंज सु

२ग २ २सं २पं २म २ग २म

मे चिंते ॥ इति अस्थायी ॥ मुकुट सुंदर

२पं २नि २सं २नि २सं २ग२२ २सं २नि २ध २पं

सीस सोहे भ्रकुटि तिलक सदा भरे।

ग॰ ध॰

२३

6

कुसम माल विशाल लोचन वर सुरा
सुरनेविते ॥ इतिश्रेतरा ॥ तीर श्रेबुयि
सुना सेवित पाद कमल भया पहे शेष
शायी विशेष कारण वर प्रधान पुटे
नते ॥ सकल जगत विसर्ग श्रेबुज ना
भि सरयर माधवे पाद पंकज सेगबल

निधि प्रीति पर हृदये रते ॥ इत्याभोगः

रागिनी धनासिरी ध्रुवपद ताल सूल ॥

हे दयानिध प्रभ असुर संहारण तारण

निज जन लाज धरो ऽऽऽ हरि अपने बिर

धकी ॥ इति अस्थायी ॥ काम कपट अत

फटकत मोकों नाहित रोह द्रोहकीन:

रा.य.

२४

२म २प २म २ग २रे २सं २नि २सं २ग २म २प

प्रथमकी ॥ इति श्रेतरा ॥ या विध तारो

२म २प २म २ग २म २प २म २ग २ग

अजामिल दासी सक विगत निज द्विज-

२रे २सं २म २ग २म २प २नि २सं २नि

नादमकी ॥ ता विध वाल निधे करुणा

२सं २नि २प २प २म २ग २म २प २म २ग २रे २सं

कर पीर हरो गेरी पापनकी ॥ इत्याभो

गः ॥ ∴ ॥ इति धनासिरी रागिनी वि-

ल परि छेदः ॥ ∴ ॥ ∴ ॥

अथ धनासिरी रागिनी शिव परिछेदमा

नि सं ग रे सं

ह ध्रुवपद ताल तीन।२। शंकर हर हर

नि सं नि ध प नि सं सं ग म प म ग म प म ग रे सं

कुमति अधारण तारण भव अब्धी के ॥

प म ग प नि सं नि नि सं नि

इति अस्थायी ॥ भस्म अंग धर हर अंते

ध प म प नि ध प म ग रे सं

ग कर योग राम भज नीके ॥ इति अंतरा

नि सं म ग प प म ग नि ध प म ग ग रे सं नि

बाण असुर की रक्षा कीनी भे पति से

रा॰ध॰
२५
४

ना नीके ॥ जटा जूट शिर गंगा धारण ।
पाप हरै सब नीके ॥ भाल चंद गल मा
ल हे डमर करै विड त्रिपुरीके ॥ चरण ।
शरण जन बाल निधी सब हरो पाप स
गरीके ॥ इत्याभोगः ॥ रागिनी धनासि ।
री ध्रुवपद शिवजी ताल चक्र ॥ १ ॥ हैमा ।

यंव रजित यंवल ग्रवल भ्रमथ स्वपथ

वारि धारी नित योग भोग त्याग जगत

विवले ॥ इतिप्रस्थायी ॥ धर प्रधार वक्र

घ्राण लिंग नाभि वक्र चले ह्रिदय ना-

ल म्हल वक्र भाल वसत प्रचले ॥ इति

प्रेतरा ॥ नाडी गण शोध सकल गंथ घा

२नि ३सं २नि २ध २प २म २ग २म २प २म २ग २रे २सं २नि २सं

ग॰ ध॰ णवामन समभ इंद्रयगण हमस जिसे मनस

२६ ९

२ग २म २प २प २प २म २ग २म २प २नि ३सं २नि

मरमन वलें ॥ पग्ना मन धार हलगोद

३सं ३ग ३रे ३सं २नि २ध २प २ध २म २ग २म २प २नि ३सं २नि

मैं सुधार शुद्धरूप निर्विकार ऐसि शोभ॰

२ध २प २म २ग २रे २सं

हति स वलें ॥ इत्याभोगः ॥ ⁘ ॥ इति

धनासिरी रागिनी शिवपरि छेदः ॥

⁘ ॥ ⁘ ॥ ⁘ ॥ ⁘ ॥

अथ धनासिरी रागिनी सूर्य परिछेद

माह ध्रुवपद ताल चार।धा। उस श्रेष्ठ

अरुण सुरुचि धरण करण ज्योत जग

त तिमर हरण अरिन दरन भरण भ

गत जनके ॥ इति अस्थायी ॥ जबहि उ

दय शिखरि चारि तव हि प्रजा मोद धा

गा॰य॰

10

२प २प २म २ग २म २प २नि ३स २नि २ध २प २म २ग २रे

रि नमो नमः वाणि कारि हरै पाप मन।

२स २नि २स २ग २म २प

के॥ इति श्रेतरा॥ रवि रवि स्रव वाणि

२ध २प २म २ग २म २प २नि ३स २नि २ध २प २म २ग

उचर हरै वावि पाप सकल उपस्थान कु

२रे २स २नि २स २ग २म २प २प २म २ग

हे बाहु हरै उकृत तन के॥ श्रौधि व्या

२म २प २नि ३स २नि ३स २ग ३रे ३स २नि २ध २प

धि पुन उपाधि हरण धीर धरण सदा

२प २म २ग २म २प २नि ३स २नि २ध २प २म

बाल निधी चरण शरण करहु कृपाल

२ग २रे २सा

न के ।। इत्याभोगः ।। रागिनी धनासिरी ।

२नि २सा २ग २म २प

ध्रुपद ताल चार । ध । तिरम किरण मिह

२प २प २प २म २ग २म २प २नि २सा २नि २प

र भानु जपा कुसुम कांति थापि पाप हा

२प २म २प २म २ग २ग २म २म २ग २रे २सा

रि विविध भांत धांत श्रेत कारी ।। इति

२प २म २ग २म २प २नि २सा २नि

ग्रस्थायी ।। सकल जगत ध्योत देत लेत

२सा २ग २रे २सा २नि २प २प २प २म २ग २म २प २नि २सा

दर्श कर्म सकल धर्म सभा फल विचारि

रा॰ थ॰ ८२

शुभ शुभ सुधारी ॥ इति श्वेतरा ॥ एक

समै मोडव ऋषि गावि वैरै निर्वि शोक

वैर जान भूलि दीयो भूलि दृष्टी मारी ॥

धारी निज कर्म जन्य फल हि धर्म राय

काये केटक कर कीट वेय वाल भाल

वारी ॥ इति धनाश्रिवी सुर्थ धरि वेदः

२नि २सा २ग २म २प २प २प २म २ग २म २प २नि

धारी पुन पुन हि कही पांच वर्ष बाल ।

२सा २नि २ध २प २म २ग २रे २सा १नि २सा

देह रहित मदा वृथा देह कीयो

२ग २म २प २प २म २ग २म २प २नि २सा

भ्रमत भारी ॥ प्राप दीयो मूढ कीयो

२नि २सा २ग २रे २सा २नि २ध २प २प २म २ग २म २प

विद्दर रूप जगत भयो बाल नियो ति

२नि २सा २नि २ध २प २म २ग २रे २सा

मर हरण सभा करी जारी ॥ इत्याभोगः

इति धनासिरी रागिनी रूप परिच्छेदः

ག་པ་

९५

12

अथ धनासिरी रागिनी दशावतार पदि।

२नि २सं २ग

छेद माह ध्रुव पद ताल चार।४। श्रीधाई

२म २प २प २प २प २म २ग २म २प २नि २सं २नि

षा देवन के क्लेश नाश कारण पटु भक्त

हेत धाइ धाइ भूमि भर उतारी ॥ इति।

२प २म २ग २म २प २नि २सं २नि

अस्थायी ॥ मत्स्य कमठ शूकर वप्र वह

२सं २ग २रे २सं २नि २प २प २म २ग २म २प २नि २सं २नि

धारदधार लई दई वामनर हरि प्रभु है

रा॰ ध॰ म किशुप मारी ॥ इति त्रेतरा ॥ वामन ज
ग एत कह्यो यह्यो बारि पग पावारि पर
सु गाम सामवेद सैन वेद कारी ॥ बलहि
सबल हिव हन्यो बुद्ध बुद्धि भेषा करी ॥
सुमरन की कलि हो हिं कलुष कटन
हारी ॥ इति धनासिरी दशावतार: ॥:

अथ धनासिरी रागिनी ब्रह्म परि छेदमा

२सा १नि २सा २ग

ह ध्रुवपद ताल चार।धा। धन्य धन्य अल

२म २ग २रे २सा १नि २सा २ग २म २प २प २प २म २ग २म

ख रूप निर्गुण विश्व परब्रह्म नाम रूप

२प २नि २नि २सा २नि २ध २प २म २ग २रे २सा

रहित विहित सकल होहि भेदा॥इति

२प २म २ग २म २प २नि २सा २नि

असथायी॥कहीं विप्र क्षत्र कहीं वैश्य।

२सा २ग २रे २सा २नि २ध २प २म २ग २म २प २नि २सा

शूद्र संकर नर सकल जगत पालन हि

रा·य·

३८

14

२नि २ध २प २म २ग २रे २स २नि २स
त भूपति कहो वेधा॥ इति श्रेतरा॥ देव

२ग २म २प २प २म २प २नि २स २नि २ध २प
ऋषी नाग प्रहर कहो यत रत्न रूप।

२म २ग २म २प २म २ग २रे २स २नि २स २ग २म २प
जल जेत्र प्राण विन्न मशक न्हक छे·

२प २म २ग २म २प २नि २स २नि
दा॥ उद भिद कहिं शिवरि भूमि उद 21

२स २ग २रे २स २नि २ध २प २प २म २ग २प २प
क वह्नि पवन वियत बाल निधी व्याप

२नि २स २नि २ध २प २म २ग २रे २स
क जग जान तन हि मेदा॥ इत्याभोगा:

म० रा
१

ॐ अथ मधु ॥ राग आरंभः ॥ येह मधु ॥ राग सेप-
रा है ॥ मधमाधश्च सारंग कान्हडैर्मिश्रितो मधुः नि-
षादश्च ग्रहन्यासो प्रातःकाले प्रगीयते ॥ सारंग-
कान्हडा अरु मधमाध के मिलाप से येह बनता है इ-
सका समय प्रातःकाल है अरु ब्रह्मा इसका देवता है
तुमरु ऋषि है उष्णिक छंद है सेबीज है अरु मध्याउ

नके ढिना नायका है अरु दक्षनायक है अरु शृंगार रस
है इसका शब्द रूतहै ॥ अथ मधु राग ध्यानम् ॥ मे
घ श्यामः पीत कौशे य वासः हस्ते वेणु नृत्य गीता ।
दि सक्तः श्री विलासः कोकिला वाक्य वादी माधो राग
गोपि कस्तूरि कान्ताः ॥ अथ भाषा ध्यानम् । सवैया ।
गायन नृत्य विसारद शोभित श्याम तनू घन ज्यो बन

म॰रा
२

मैंहै ॥ पीत द कूल सजे सब अंगन चंदन चारु चढे छ
वि दैहैं ॥ माधुरे पैन बने पिक सीं वेनु बाद्य गहे कर
कंज विषे है ॥ माधव के चित चोर मनो म्रग ना भिज ।
घोर लिलाट लसै है ॥ अथ उत कंठिता मध्या नायका
लक्षणम् ॥ आवन कहि आये न पिय गई जाम जुगरात
सोच सँकोचन मे परी खरी बाल पछ तात ॥ पिय नही २

आये हिय विथा रही ज्वाल उराय ॥ मदे नेह की बास
लौं मुष पर प्रकट लषाय ॥ अथ दत्तना यक लक्षण॥
सवैया। हरिसौंहित सौ भ्रम भूलिहू कीजे मन होनो
कारि हिय हूते होत हित हानीये ॥ लोक मे अलोक॥
आनि नीके हू को लागत है सीता जूको हूत गीत कै
से उर आनिये ॥ आषिन जो देषियत सोई सांची के सो

म॰ रा॰ दास कानन की सुनी सोची कबहूं न मानिये ॥ गोकल

की कुलटा भयो ही उलटा वति है आज लौं तो वे सेई हैं

कालि्हकी न जानिये ॥ अथ श्रृंगार रस लक्षणम् ॥

सवैया ॥ चंदन घोर लिलाट विराजत मोर पखा सिर

ऊपर सोहै कुंडल लोल कपोल लसै मुरली की बजा

वनि मै मन मोहै ॥ मोहि विलोकि विलोकि हसैं चित

३

चोर बडे बडे नैनन जो है एकुत गोप वधू भगवंत या ।

मोवरो सो जमुना तटको है ॥ इति शृंगार रसः ॥ अथ

मधु रागस्य विनियोगः ॥ अस्य श्री मधु मंत्रस्य नमद्

ऋषिः उष्णिक छंदः ब्रह्मा देवता मे बीजे मधु रागज

पे सिद्धर्थे विनियोगः ॥ अथ कर न्यासः । मेअंगुष्ठा ।

भ्यो नमः ॥ एवं हृदयादि न्यासं सर्वं कुर्यात ॥ अथ ।

मधु राग मंत्रः ॥ ॐ मं मधुवे नमः ॐ ॥ इति मंत्रः ॥ जप
संख्या १० दश लक्षम ॥ अथ मधु राग देवता मंत्रः ॥
ॐ बं ब्रह्मणेनमः ॐ ॥ ध्यानम् । ब्रह्माणं रक्त वर्णाभं
पीत वस्त्रै रलं कृतम् चतुर्भुजं चतुर्वक्त्रं स स्रुवं स्रु
चि हस्तकम ॥ इति मधु राग देवता ध्यानम् ॥ अब
इसका येह ठाट है ॥ षरज सम रहता है रेषभ चढा

गंधार चढ़ा (उतरा) मध्यम उतरा पंचम सम रहता है धैवत चढ़ा
निसपनिसपपमगरेसनिसरेगमपमग
निषाद उतरा ॥ अथ सरगमः ।१। निसारेगमपधनिसा
रेसे इतिस्थाई ॥ मेपपनिसनिसरेगरेसमगमपमगरेसा ॥
नीधपमगरेसा ॥ इतिसरगमः ॥ अब इसका इह गत

म पे नि सा नि प नि प म रे
है ॥ ढिड ढा ढिड ढाढाडा ढिड ढा ढिड ढाडा ढाढा

प म प म प रे म रे सा नि सा रे प
डा ढिड ढा ढिड ढा डा ढा ढा डा ढिड ढा ढिड ढाडा

म रे सा
ढा ढा डा ॥ इति अस्थायी अंतरा ॥ अथ अलापः ॥

म० ता० ५

२नि २सं २रे २ग २म २ग २ग २रे २म २प २म
ननरी रेना आनन उनन उआ नन अद ननरी नेने नना
२ग २रे २ग २रे २सं २सं
उननना आनरा ननन रनु नानुम ॥ इति अस्थायी ॥
२म २प २नि २सं २रे २सं २नि २ध २प २म
ननन अद न ते आनन नुम नानुनै नना नन नरी न
२प २नि २सं २रे २ग २रे २सं २सं २ध २प
ना आन नान ननुम ननु नरीन नानुरी रना नना आ
२म २ग २रे २सं १नि २सं
न नान आन नान रान ननम् ॥ इतिअंतरा ॥ इत्याला
पः ॥ राग मधुमात ।

२रे २ग २रे २सै २नि २पे २पे

रा॰म॰ सकल जगत जीव जंत दाह रचित पुत्रिक

२मे २ग २रे २सै

वत जडश्च वतनु न्यारे ॥ इति आभोगः ॥ ॥

इति मधु राग स्य ब्रह्म परि छेदः ॥ ॰ ॥

6

२रे २म २प २ध २प २म २ग२रे २सा

य गण दास युक्त करत कार्य सारे ॥ इति स्था

२म २प २ध २नि २सा २रे २ग

ई ॥ श्रवण रसन दर्शन पुनस्पर्श गंधआदि

२रे २सा २नि २ध २प २म २ग २रे २सा

क सभविद वृत्ति युक्त पुरुष इंद्रिय गणया-

२नि २सा २रे २रे २म २ग

रे ॥ इति अंतरा ॥ एक कहे मनहि एक तेरे

२म २प २प २ध २नि २ध २प

विन श्रवण शब्द मनहि कछुक पुनहि क

२म २ग २रे २सा २म २प २ध २नि २सा

हे कहा कही प्यारे ॥ बालनियी चेतनविन

२रे २ग २रे २सा २नि २पे २पे

गा॰म॰ सकल जगत जीव जेत दास रचित प्रतिक

२मे २ग २रे २सा

वत जडश्रा वतनु न्यारे ॥ इति ग्रामोगः ॥ ः

इति मधु राग स्य ब्रल परिछेदः ॥ ॰ः॰ ॥

अथ मयुरागस्य ब्रह्मपरिछेदमाह ध्रुवप

२नि २सा २रे २सा २नि

द ताल चार ४ ॥ पूरण परमेश्वर सत्यरू

२सा २ग २रे २म २प २ध २प २म २रे

प शुद्ध बुद्ध निर्विकार निर्गुण विभु चिदा

२रे २सा २म २प २ध २नि

नंद धारी ॥ इति अस्थायी ॥ जब इच्छा वि

२सा २रे २सा २नि २ध २प २म २रे

श्व करण धारे निज मान अनंत को होवे

२सा २सा २नि २सा २रे २सा

जाने सब नव प्रधान कारी ॥ इति अंतरा

रा॰ म॰

मायाकर महतत्व अहंकार सात्विक पुन रा
जस इक तामस येह तीन भांति भारी ॥ देव
विषय इंद्रय गण त्रिगुण तोभहोन भयो त
बहि जीव भिन्नभये तेही तेही भारी ॥ इति
श्रीभोगः ॥ राग मधु ध्रुवपद ब्रल ताल ४ ॥
ईश्वर जग व्याप रहो विश्वको रूप धारइ

अथ मधुरागस्य शक्ति परिछेदमाह ॥ ध्रु

२नि २सं २रे २पं २म २ग २रे

वपद ताल चार ४ ॥ ब्रह्मादिक इंद्रादिक

२सं २नि २सं २सं २नि २सं २रे २म २पं

मायाकर भूल रहे और ऋषी जपी तपी स

२ध २पं २ग २रे २सं २म

न पठ वह्न वानी ॥ इति अस्थायी ॥ कृस्न

२पं २ध २नि २सं २रे २ग २रे २सं

बालकेलि देष चतुरानन भूलगये वत्स

२नि २ध २पं २म २ग २रे सं

बाल चोरि धरे दरी मायापि यानी ॥ इतिश्र

ग॰म॰

8

नरा ॥ एक वर्ष बीत्यो जब कृष्ण केलि वैसि
देष कृष्ण भये सकल गोप बुद्धि भूलजानी
मेघ वाह प्रलय मेघ आज्ञा कर भूलि गायो
बालनिधी कृष्णशक्ति प्रबल मन समानी

इत्याभोगः ॥ राग मधु ध्रुवपद चाल ताल
ध ॥ परमेश्वरि चंद्रभावी मृगनयनी ऊंद

रदनि हेम गमनि मोवियन मह यमुनातट

गमनी ॥ इतिग्रस्थायी ॥ चंचल तनु चपला

जिम चमकत मनु बादरि मय वरन नारा

रि सिर गागरि कों धरनी ॥ इतिअंतरा ॥

गागरि भरि त्वरित चली चरण चलन नूप

र रव मोहन मन किलक कहो कोहेनीर।

रा॰म॰

भरनी ॥ बोली पिक बैनी मात्र मंद हस कलि

१ दमता कबहि मोल लीनी तब नंदगोप सर

नी ॥ इत्याभोगः ॥ इति मधु राग स्य शास्त्रिप

रिच्छेदः ॥ ॰ः॰ ॥

अथ मधुरागस्य शिव परिछेद माह अव

२नि २स २रे २स २रे

पद ताल चार ४ ॥ शिव हि गुरुः शिव हि

२म २प २प २म २ग २रे २स २स २नि

पिता शिव हि मात भ्रात तात शिव हि देव

२स २रे २म २प २य २प २म २रे २स

महादेव सुमग सेव विधाता ॥ इतिस्थायी

२म २प २य २नि २स २रे ३ग २रे २स २नि २य २प २म २ग

राजा इक प्रबल देस वर किरात राज्यकरै

२रे २स २नि २स २स २रे २स

शिवहि के अर्चन में परम प्रीति राता ॥ इति

ग॰म॰ श्वेतरा ॥ मृगया मे याइ जीव मांस भष सभ॰

10 हि करै मद्यपान सर्वजाति त्रिया भोग माता

विहस रात्रि एकत भई घडत होतिमहिव

रित पाप कहो एजन तेहि जगत को दिषा

ना ॥ तबहि राय कथन कीयो पूर्व जन्म॰

चरित सकल मारमेय श्रेष्ठ सदन भगता॰

हित जाना ॥ शिव दर्शन मनहि रच्यो उर

क भक्तहटक दीयो कर षदक्ष प्रनहि।

शशि हार मह्यो जाना ॥ तू कपोत पूर्व

जन्म कर षदक्ष शिवहि मदन मारदई।

मोम लब्ध गृध्र विधि विधाता ॥ सेसका

र जन्म होति जनहि नही हटाई सके मार

ग॰म॰ मेघ ममहि हति शिव कीयो न्हपाना ॥क
हता निधि शोभयधा ओर नही देव कउ
पत्र पुष्प दर्शन सें शीघ्र फलित दाना ॥
इतिआभोगः॥ इति मधु रागस्य शिवपरि
छेदः॥ १॥

अथ मधुरागमा सूर्य्य परिच्छेद माह ध्रु

वपद ताल चार ४ ॥ रवि छबि अधिक

जगत अंधकार नाशन हित छाय रही।

जिह प्रताप होत कर्म सारे ॥ इतिस्थायी

जब हि द्योतहोत विश्वजीव जागि लागि

हिये बांछितकौं पाइकैं बलतेजधारें

रा॰म॰ इति धेवता ॥ योगी जन ध्यान धरैं मोत्वत

परिवर्थ करैं गायन गुणि कंठ भरैं स्वरहि

सा उचारैं ॥ गायन गाव गुणज गिरै वक्र॰

वाक धाइ मिलै बालनिधी दर्शकरैं भर्ग

मन विचारैं ॥ इत्याभोगः ॥ राग मधु फ॰

वघट ताल चार ४ ॥ भास्वत प्रभ तेजनिधी

२पि २म २ग २रे २सं २नि २सं २रे
निधियन नित अमित देत इष्ट धार बारति

२म २पि २म २ग २रे २सं
महि सर्वो जिह धारी ॥ इतिअस्थायी ॥

२म २पि २ध २नि २सं २रे २ग २रे २सं
रक्षातन युक्त सर्व जात टेक भूमि पृष्ठ

२नि २ध २पि २म २ग २रे २सं
दैत हृदय भानु धारमेव सर्व मारी ॥:

२नि २सं २रे २म
इतिअंतरा ॥ वह्न पलाश लिखहि यंत्र

२पि २म २ग २रे २नि २सं २रे २म
पूर्व पत्र सूर्यलिखे अत्रि रविसामादिशा

रा.म.

13

२पु मे ग २रे मे २पु २ध २नि २सं

विवस्वान कारी ॥ निरति भगाञ्ज वरुणा व

२रे २ग २रे २सं २नि २ध २प

रुण वायु मित्र अदित सौम्य पैशान्य विस्व

२म २ग २रे २सं

मध्य भास्कर स्राव कारी ॥ इत्याभोगः ॥

इति मधुरागस्य सूर्य परिच्छेदः ॥ ९ ॥

अथ मधु रागस्य विलंपति छेद माहे अववप

द ताल चार ४ ॥ प्रणाम मन्दिर मेउर वत

वंशी वसन पीत बीत कोंची कटि करत के

लि रमा सह मुरारी ॥ इति अस्थायी ॥ धारी

वनमाल गरे भृकुटि मलय जात खोर चो

र चित चेवलाकि मुकट इति हि भारी ॥:

ग.म.

14

२नि २सं २रे २रे २म

इति श्वेतरा ॥ चतुरभुजा चारु चमक कटक

२ग २म २प २ध २नि २ध २प

धारि भार धरिणि हरण पटुक चक्र गदा-

२म २ग २रे २सं २म २प २ध नि २सं

पदम केबु मारी ॥ धारी जिह्व विरथ लाज

२रे २ग २रे २सं २नि २प २म

काजि भाजि सकल करै भक्तवछल बाल

२रे २नि २सं २रे २सं

निधी चरण शरण चारी ॥ इतिआभोगः

राग मधु ध्रुवपद विस्नुजी ताल चार ४ ॥

श्रीपतिप्रभु विश्व जगत प्रति विरक्त भक्त

भक्त रक्त केञ्ज मेञ्ज करहि कमल केठुया

री ॥ इतिप्रस्थायी ॥ भारी कौमोदकी ज्ञ

मोद करे भक्तन नित मारि मारि प्रमरन

अरि जगति विपति हारी ॥ इतिअंतरा ॥

तिरम धार चक्र चमक चलित अरिन मई

२ध २प २नि २प २ध २म ग २रे २सां

गा॰ म॰ न हित जबहि भक्त पीरपेरे थीर धारिमारी

२म २ध २प २नि २सां २रे २ग २रे २सां

करी करी जबहि टेर बालनिधी तेतु घेर

२नि २प २म २म २ग २रे २सां

काट करहि कर सपकर नबहिं करि उमा

री ॥ इति आभोगः ॥ इति मधु रागस्य वि॰

स परि छेदः ॥ ॰ ॥

अथ मधुरागस्य गणेश परिछेदमाह ध्रुव

२नि २सं २रे २प २म २म २ग

पद ताल चार ४ ॥ विघ्नहरन हरन हर स

२रे २सं २नि २सं २रे २रे २म २रे २सं

न गण राज ढुंढि राज राजे हो महाराज ॥

२म २प २ध २नि २सं २सं

इति अस्थायी ॥ जैहू कपित्थ भक्त एकदस

२रे २सं २नि २ध २प २म २रे

न भ्रमर भ्रतय करन सिद्ध परतत्त जगत

२ग २रे २सं २नि २सं २रे २म २ग

भगत काज ॥ इति अंतरा ॥ रिद्ध सिद्ध दाता

गा॰म॰ 16

र दाता गोगुन प्रबीन तीन लोक जाने माने

वृषभवाहिन साज ।। सुमरत श्री सुजस सु

ख प्रमोद मंगल दाइक विनाइक सरब सु

रन सिर ताज ।। इत्याभोगः ।। राग मधु फ

बघट गणेशजी ताल चार ४ ।। शिवसुत

जव तोइव रसमन विचार धारलयि नभी

१नि २सं २सं २रे २ग २रे २सं

देव मुदित होइ तुंबरगानन गाये ॥ इति श्रं-

२म २प २ध २नि ३सं ३रे ३ग

स्थायी ॥ बीणा लिये नादर ऋषि शुद्ध स्व

३रे ३सं २नि २ध २प २म २ग

रत सर मूर्छन रसहिं पुंज प्रदीयो गाण

२रे २सं १नि २सं २रे

प प्रति रिझाये ॥ इति श्रंतरा ॥ तुंबरा तुंब

२रे २म २ग २म २प २ध २नि २ध

रु ले गान किये शुद्ध राग ले मृदंग रमा-

२प २म २ग २रे २सं २म २प २ध २नि

पति पाणि मृड बजाये ॥ गाणनायिक को

रा॰म॰

३सं ३रे ३ग ३रे ३सं २नि २प

मल शिषुन्तत करी प्रति विचित्र देषशेष

२ध २म २ग २रे २सं

गिरजा सुत बाल मोद छाये ।। इति प्राभोगः

इति मधु राग स्य गणेश परि छेदः ।। १ ।।

17

मा॰ रा॰ १ ॐ अथ मधुमाधवी रागिनी प्रारंभः॥ मधुमाध
वी रागिनी का मध्याह्न समय है भरतमता॰
नुसार येह ओडव है अरु इसका हनुमान
ऋषि है अरु प्रजापति देवता इसका मे बीज है
अरु स्वकिया नायका है अनुकूल नायक
है अरु शृंगार रस है इसका ग्रीष्म ऋतु है। १

अथ मधुमाधवी प्रकीर्ण विधिः । सारंग बड
हंसस्य हेदावनी ततः परम मधुमाधीतस्मा
प्रोक्ता द्वितीय प्रहरान्तरम ।। ऋषभरहि
सेयुक्ता यथोवर्ज्यातथोडवा रेमपानि च
साधोक्ता सारंगा मधुमाधिका ।। अथविनि
योगः ॐ अस्य श्री मधुमाधवी रागिनी मंत्र

मा॰ रा॰ ७

स्य हनुमान ऋषिः प्रकृतिश्छन्दः प्रजापतिर्दे
वता मे बीजे मनो कामना सिद्ध्यर्थे मधुमा
धवी रागिनी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। अथ
करन्यासः। मेंअंगुष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदया॰
दिन्यासे सर्वे कुर्यात॥ अथ मधुमाधवी ध्या॰
नम॥ आस्मिन्वा हेबने हि प्रियमदद्रूपा॰ ७

लिंगने चैव हर्षात् नेत्रा भ्यां तुः स्वमाप्नुक
मल क्षविरगा हृर देशे प्रहासात् स्वर्णाग्र
ह्ये शरीरं हरनीति मसि मिते हार्पिते त्रेत्र
मेन शोभाद्भा भैरवस्या ध्यति शुभ मधु
माधीप्रिया भामते सा ।। अथभाषाध्यानम
मवैया ।। देत प्रलिंगन त्रुबन प्रीतम प्रा

मा॰ रा॰ नेदमो जो कछु हे मिसिकै। लोचन मोचनहैं
२
डावके छविनीरज हूं कि गई नसिकै। के
चन देह दिपै लगि कुंकम ठोडी में दीनो
ममा मसिकै। हरिवल्लभ भैरवकी तकनी
छविमो मथिमाथि रही लसिकै॥ इतिभा
षाध्यानम॥ अथ मंत्रः। ॐ मेमथुमाथयेौन
२

मः। इतिमंत्रः॥ षोडशोपचारैसंपूज्य॥ जपं
कुर्यात्। दशलक्षजपं॥ अथप्रथमाधिदे
वतामंत्रः। ॐ ब्रं ब्रह्मणेनमः॥ अथदेवताध्या
नम्॥ ब्रह्माणंरक्तवर्णाभंपीतवस्त्रैरलंकृ
तम् चतुर्भुजंचतुर्वक्त्रंसस्रुकंवस्त्रकाविहस्त।
कम्॥ अथस्वकियानायिकलक्षणम् दोहा

मा॰रा॰
४

५

मनचिंताधनधावनतैंचिंतामणिकीरीत।म
खीसीलकुलकानअरुप्रीतमपावनप्रीत।
धरतनचौकीनगजरीयातैंडरमैलपाय।कौ
हूपैरैपरपुरुषकीजनितियाधरमलजाय।
अथअनुकूलनायकलछण॥दोहरा॥
प्रीतिकरैनिजनारिसौंपरनारिनअनुकूल

८

केशोमनवचकर्मकरसोकहियेअनुकूल।
अथशृंगाररसलक्षणम॥ मोहनिमोहन
स्यामकीकामनिदेषिलभाईरीझकीमो
हीनकीबकीरहीटकलाई। पियननिर
षकटाक्षमेंयौंत्रियसरीलजाय। मनोंवि
चमनमीनकोंलीनोंबनछीलाय। पासश्र्या

मा॰ रा॰ यमसकायकैअतिदीननादिषाय। नेहजना
५
यवनायहरिमोमनलियोलभाय॥ षाटक्र

मः। षड्ज सम। रिषभ उत्तरा। गंधार उत्तरा
(interlinear: चड़ा … वर्जित)

मध्यम उत्तरा। पंचम सम धैवत वर्जित।

निषाद उत्तरा॥ इति षाटक्रमः॥ अथ मधु
(interlinear: चड़ा)

माधवी गत ओडव मसीतषानी ताल धीमा ५

तिताला उठेगी तीसरी में। अथ स्थाई। अबुरद-

म पं नि सं नि पं नि पं म रे
डिड डा डिड डाडा डाडा डा। डिड डा डिड डा

म पं म पं म पं रे म रे
डा डाडा डा। डिड डा डिड डाडा डा डाडा।

सं नि सं रे पं म रे सं
डिड डा डिड डा डा डा डा डा॥ इति स्थाई॥

अथ अंतरा स्थाई बजा कर तालकी तीसरी से

नि म पं नि सं
चला। अबुरद॥ डिड डा डिड डाडा डाडा॥

सं नि रे सं रे नि प नि प म रे

रा॰म॰ डिड डा डिड डाडा डाडा डा। डिड डा डिड डाडा

६ रे नि सं रे म रे सं नि

6 डाडिडडाडा। डा डिड डाडा डाडा डाडा॥ फिर

स्थाई में जाय मिला इति अन्तरा॥ अथ ओडव-

२ २ २ २ २ २ २

मवगामः ताल झूलफाक॥ रे मसा रेमपा रे

२ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २

मपानि पमम निनिपा निनिपा मप रेरे निम

२ २ २ २ ३ ३ ३ ३

इति स्थाई॥ अथ अन्तरा॥ रेमपानि सारेससा ६

निनिपमपसा निनिपा निनिपमपा रेरे निसा ॥

अथास्यालापः ॥ ननरी रना आनन उनन उआ

नन अद ननरी तने नना उननना आनरा ननन

रनु नानुम ॥ इति स्थाई ॥ ननन अदनते आनन

नुम नानुनै नना नन नरी नना आन नान नन

म ननु नरीन नानुरी रना नना आन नान आन।

गु॰ तान तान तनुम ॥ इति श्वेतगा ॥ इति श्रलापाध्या
यः ॥ ८ ॥

अथ परब्रह्म परिच्छेदः राग मधुमाधवी ता॰ ४

२रे २प २म २रे २सा २नि २सा २रे २म २प २नि

निर्विकल्प निराधार निर्गुण तेही निशाक

२प २म २रे २सा २नि २सा २म २रे २सा २रे २सा २नि २प २नि २सा

लेक जैसें हिं नभ अनन्त घट मठ सब व्यापी

२म २प २नि २सा २रे २सा २नि

इति अस्थायी ॥ तेरी ही सत्ता सें भासत है ।

२सा २नि २प २म २रे २सा २रे २म २प २नि

सकल सत्व जल गत नभ रूप सकल तद

२सा २नि २प २म २रे २सा २नि २सा २रे २म २प

वत ही जापी ॥ इति अंतरा ॥ अभरा स्वरनाग

ग॰ मा॰ पुरुष पशु पक्षी कीट मशक थिर जंगम ना

ना विध तेही रहि व्यापी ॥ एक के अनेक रू

प माया कर भाम रहे बालनिधी विदा भास

तेही तेही जापी ॥ इति आभोगः ॥ राग मधु

माधवी अरुपद ताल चार ४ ॥ ओंकार वि

दा नेद मता हूप वेद मूल के मकेच प्रामतर

२प २प २प २म २रे २स २रे २स २नि २स २म २प

अभ वेद पुराण गारी ।। इति अस्थायी ।। नाना

२नि २स २स २नि २प २नि २स २स २नि २प २म २रे

विथ कर्म कांड यज्ञ दान तीरथ व्रत जप पू

२स २रे २म २प २नि २स २नि २प २म २रे २स

जन कुसम सभी फलहि मोक्ष भारी ।। इति

२म २प २नि २स २म २प

अन्तरा ।। कामन युत कर्म करैं फिर तिन क

२नि २स २नि २प २म २रे २स २रे २म २प

र देह धरैं फल रस जिन त्याग दियो तेहि भ

२म २रे २स २म २प २नि २स २म २प २नि २स २रे

क भारी ।। तेरो आनंद भजन बालनिधी थार

सं निध म रे सं रे म ध नि सं नि ध म रे सं नि सं

ग.म. रहे जीव मक्त उनहि कहैं परम धीर धारी ॥

इति आभोगः ॥ इति मधुमाधवी रागिनी ब्रह्म

परिच्छेदः समाप्तः ॥ ॐ ॥

अथ प्रात्कि परिछेदः रागनी मधुमाधवी अव

२रे २स २नि २स २नि

पद ताल चाल चार ध॥ जै ग्रेबे वैस्मवि स्व॥

२स २रे २म २रे २स २नि २स २रे २म २प २नि

क्लेश कटन हारी करत सकल सिद्ध कामध्या

२प २म २रे २स २नि २स २प २म २नि २स

व न जे ध्यानी॥ इति अस्थायी॥ अन्तर मैन्य ना

२स २म २प २नि २स २रे २स २नि २स २नि २प २म २रे २स २रे २म

शादेष चित्तर मेनानि गयो मैन्य युक्त माचदि

२प २स २नि २प २म २रे २स २नि २स २म २प २नि

यो वामर युत मानी॥ इति अन्तरा॥ कोयद युक्त

रा.म. महिषासुर सैना गण ग्राम कीयो गगनमे धुम्र

सभी खिंड खिंड दानी ॥ भूमी खुर खुरस करी धु

ढि पुछ फटक दियो भूमी तल डूबि गयो दे

वन भय मानी ॥ ऐसे महिषासुरको देष वेडि

कथन कीयो गर्जं डह छिन यावन मैं मधुको

पानी ॥ करहि पान मधु मदमें क्षाल मारजा

य पडी झूल मारडार दियो बाल जैहो वाणी

इति आभोगः॥ रागनी मधुमाधवी ध्रुवपद

शक्ति ताल चार ४॥ जगत आत्म शक्ति ते

हि विस्तर कर व्याप रही शक्ता दिक सिव

निवाई स्तवन करत भारी॥ इतिअस्थायी

परम ऋषि पूज्य तेही शुभकारज करणहार

ग·म· तव प्रभाव जानत नहि माधव त्रिपुरारी ॥ इति

श्वेतगा ॥ शूल में जो रक्खन कर विद्ध यारया·

री तेता खन पाहि देवि वाप पुन हि कारी ॥

पूर्व दिशा पश्चिम दिशा चेडि रत तेहिं निज

त्रिशूल भ्रामण कर उत्तर दिक मारी । सौम्य

रूप प्रति हि घोर तैसें निज शासन कर बाल

रे सां रे म प सां नि प म रे सां नि सां

निधी रक्ष करो संतन की प्यारी ॥ इत्याभोगः

इति शक्ति परिच्छेदः ॥

ग·स·

5

अथ गणेश परिच्छेदः रागिनी मधुमाधवी

ध्रुवपद ताल ४ ॥ गण नायक गौरी सु

त रिद्ध सिद्ध दाता जाको व्रत चौथ चंद द

र्श निंद ग्याता ॥ इति अस्थायी ॥ सबजित

यादव एक मनी दीन भास्कर तिम बोध

गरे तेज पुंज देख्यो ग्रह आता ॥ इत्यंतरा ॥

गा॰ म॰ द्वारक के लोक कहे कृष्ण पेषि सूरज येह ना

6 समनी याचनकी कृष्ण कीन बाना ।। नाहि ।

दीन नाम अनुज गेरे बोध विपन गयो नाहि

सिंह हन्यो तिसे ये बुवान ध्याना ।। द्वारकके

लोक कहे कृष्ण मनी लालच से घात दीयो

निंदन कर नपे सबल आना ।। बालनिथी ।

गण पतिको बंदे कीन श्रीपतज्नु नवी क्लेशह

र कीये पार्वति के नाना ॥ इति आभोगः ॥ रा

गनी मधुमाधवी ध्रुवपद गणेशजी ताल ध ।

विघ्न हरण श्रीगणेश सिद्ध बुद्ध दानी तिन

के पद सेवा नित नहि ध्यावत ज्ञानी ॥ इति

अस्थायी ॥ जिनके पग सेवनते चंद्रषष्ठि रोग

ग॰ म॰ कलानिध सत विद्या सेपत प्रभु कविघन सम

वानी ।। इति अंतरा ।। संकट, हेट केटक नर ह

र करण धील जास मन वांछित पूर करण उछ्रु

निकी हानी ।। बालनिधी चरण शरण निस्ता

कर पारर हो दीजे स्वर सरला सम रागरंग

भानी ।। इति आभोगः ।। इति गणेश परिच्छेदः

अथ विसः परिछेदः रागनी मधुमाधवी ध्रुव
पद ताल चार ष ।। पीतवसन गरुडासन वै
जेंती माल गरै मोर मुकट कुंडल श्रवण तिल
कमाल धारी ।। इति अस्थायी ।। चारिभुजा ।
कंज कंबु चक्र गदा धार धीर लछण हित
उधत नित बज्र विथ नन्दकारी ।। इत्यंतरा ।

ग॰ म॰ अमर जेष्ठ सभा बीच मन स्वयंभु भूमि नाथि
8 दैव कहे बला प्रति चिंता भयो भारी ॥ ब्रह्म
क्षीर नाथि का जो सूकर एक प्रकट भयो प
वेत समहोई रूप गार जन कर जारी ॥ देव
सभी मुदित भये पृथ्वी के मारगन हित॰
हर सिंधु जाय पडो कोड रूप सारी ॥ हेम

नेत्र दानव को मार भूमि धारलिये बालनिधी

जैजै भये अमरवाणि धारी ॥ इति आभोगः ॥

रागिनी मधुमाधवी ध्रुवपद विल्म्ब के ता॰ ध

रमानाथ जगदीश्वर करुणा निधमेत्र धा

म दीनबंधु भक्त वत्सल पीतंबर धारी ॥

इति अस्थायी ॥ हिरण्य कशीप दानव तप

रा. म. बला को मर्दित कियो तेरे सृष्टि जीव सभी ।
9 नाहि सके मारी ॥ इति अन्तरा ॥ ता को प्रह
लाद पुत्र पठन हित पाठशाल पठो सेउ ।
मर कसोई राम नाम कारी ॥ राजा सुत गो
द लिये हित सेष्या पृच्छत भये सुत कीर्तन
नाम पाद सेवन सुपुजारी ॥ वेदन कर दास

भाव मोई सखा मालक मम पूर रहो ज

ल थल नव भक्तन हित कारी ॥ सेक्राती

कृपन तात मार मार खिडग खेभ नर हरि

वै मार दियो वतस्यल कारी ॥ इतिआभोग:

इति मधुमाधवी रागिनी बिस्त: परिछेद:

समाप्त: ॥ ❀ ॥

रा॰म॰

10

अथ शिव परिच्छेदः। रागिनी मधुमाधवी फ

रे म प म रे सा नि

वरद ताल चार ४॥ जै शंभु ज्योति रूप निर्म

सा रे सा नि सा रे म प नि सा नि प

ल स्वाव सारी नमः शिवायोपनिषद मंत्रराज

म रे सा नि सा म प नि सा सा

कारी॥ इति अस्थायी॥ मधुरामें दाश अर्हे।

म प नि सा रे सा नि प म रे सा रे म प नि सा नि

राजा बल धारी काशिराज तनया से कर वि

प म रे सा नि सा म प नि सा सा

वाह भारी॥ इति अंतरा॥ एक समें काम वि

ग॰म॰ नामिनि निज भोग हेत परम लगो धाई॰

जिम अग्नि पुंज नारी॥ अति त्रसत हारि रहो

पूछत भ्रम हारी वेदन मे प्रीत गात कारण

किम जारी॥ बोली तेही पति पाप राजस॰

कत बऊत किये मेरो निष्पाप गात मेंत्रा॰

जयारी॥ मोहमी मंत्र कहो गुरु रुद्र मे जायप

ढो बालनिधी भस्म पाप काक होई डरी ॥ १

ति आभोगः ॥ रागनी मधुमाधवी ध्रुवपद शि

वजीका ताल चार ४ ॥ उमापति शिवशंक

र जटा भस्म धारी शुद्ध स्फटिक वर्णजाको

गेरे नाग भारी ॥ इति अस्थायी ॥ भाल चंद

शिखर गंग पार्वती हित नृत्य करत डिमडि

ग.म. म डिमडिमडमरू बजे नाचे नत हारी ॥ इति श्रेतराग ॥

रमानाथ ले मृदंग तंबूरा नेवक कर सरस

नी परिवादनी पर हन जन रव कारी ॥ औंर

देव साज लिये गायन कर मदित भये जैजै

जै बालनिधी परिवानी यारी ॥ इति श्रीभोगः

इति शिव परिछेदः समाप्तः ॥ ❖ ॥

अथ सूर्य परिच्छेदः रागनी मधुमाधवी ध्रुव

२रे २रे २प २म २रे २स १नि २स २रे २म २प

पद ताल चार ४ ।। जै भास्कर तेज पुंज उस

२प २नि २स २म २रे २स १नि २स

किरण तिमिर हरण विकसित नव कंज पु

२स २रे २म २रे २स १नि २प २नि २स २म २प

ञ उदय काल कारी ।। इति अस्थायी ।। षष्ठि

२नि २स २स १नि २स २नि २स २रे २स १नि २स १नि २प २म

सहस बालखिल जै जै कर आगे यावे अप्स

२रे २म २प २म २रे १नि २स

र गंधर्व राज नृत्य वाद्य धारी ।। इति अंतरा

नि स रे म प म प प प रे म प म रे स नि

रा॰ म॰ द्वादश रुद्र मासमैं जमित्र नाम रूप मित्र राव

स स नि स नि स म रे नि स म प नि स

13 म इक नाग गान धारत तव भारी ॥ हषादेव

नि स स रे स नि स नि प म रे स

तेरे पद धार हिये बाल निधी माया भ्रम मूल

रे म प म रे स नि प नि स

धान्त काटन हित कारी ॥ इति आभोगः ॥

रागनी मधुमधवी ध्रुवपद सूर्यके नाल धा

रे प म रे स स नि स रे स नि प

जगत चक्षु देव तोहि प्रथकार नाशन हित।

उदयाचल पर्वत में दिव्य ज्योति कारी ॥ इति
ग्रस्यायी ॥ तेरे बिन सकल जगत निद्रा त
म व्याप रहे कर्म कांड छांड देत विषयन ।
विषयारी ॥ इति अन्तरा ॥ जब हि ब्रह्माण उ
दय होत तब चितन्न सकल विश्व मेध्या ।
दिक मैत्र करम कृत्य होत मारी ॥ देवार्चन

२स २म २प २नि २स २नि २प २म २रे

ग॰ म॰ यज्ञ दान दर्शन तप भजन सकल बालनि॰

२स २रे २म २प २स २नि २प २म २रे २स २नि २स

धी नेहि नेहि पाप कटन हारी ॥ इति श्राभो

गः ॥ इति मधुमाधवी रागिनी सूर्य परिच्छे

दः समाप्तः ॥ ॥ ॥

अथ दशावतारपरिच्छेदः रागनी मधुमाध

वी ऊभपद ताल चार ॥ विश्वंभर दीन।

बंधु करुणानिधि शुभ प्रकाश सुर सुर ममू

सुर हित नाना तन धारी ॥ इति अस्थायी ॥

नाथ भार धनी जब क्लेश कीन अति प्रकार

त बी सकल डार हरो असुर भीर मारी ॥

रा.म. इति धेनरा ।। मत्स्य कूर्म श्री वराह नर हरी

15 देहि वामन पुन परशु राम रामचंद्र सेतु बे

य कारी ।। कृष्णाग्रज बुद्ध रूप कल्कि होये । 40

भार हरणा वरन प्रारण वालनिधी तवहि ।

ध्यान धारी ।। इतिआभोगः ।। इति मधुमाध

वी रागिनी दशावतार परिछेदः समाप्तः

पं॰ रा॰ ॐ अथ पंचम राग प्रारंभः ॥ भैरव पुत्रः संगीत कल्प
१ द्रुमे। दोहा॥ ललित हिंडोल वसंत ज्ञत मालकौश
पुनि हान ॥ मेलत स्वर षट राग के पंचम होत सु
जान ॥ अर्थ ॥ ललित हिंडोल वसंत मालकौश॰
अरु षट् राग के मिलाप में पंचम राग बनता है अर
इसका अंश न्यास ग्रह खरज है अरु येह षाडव छे
१

स्वरका है पंचम इसमै वर्जित है अरु इसका प्रातः

काल समै है अरु ब्रह्मा इसका देवता है अरु ब्रह्मा॰

ही ऋषी है गायत्री छंदहै ह्रींबीज है अरु इसकी

मध्या नायका है अरु दक्षनायक है सिंगार रसहै

अरु इसका शारद ऋतु है॥ अथ पंचमराग ध्यानम

ॐरुणामे तोकूल हस्ते कर भूत कामदे वेणु वाद्ये॰

पं॰ रा॰ विशाले चन्द्रार्कौ यस्य भाले पिक मृदु वचने पति
२ पत्नैः प्रयुक्ते देवैः द्राघे स्व प्रजा शोभंत मकुटे पीत
वस्त्रे प्रभाते गायंति स्वर्ग लोके दनुज सुर गणाः
पंच मे चात्र संताः ॥ अथ भाषा ध्यानम् ॥ सवैया।
स्याम तनू कुमदादि तांबूल गहे मुरली कर कंज॰
सुहाई ॥ बाल पतंग मयंक लसै बरहा पत की

ट मनो हर ताई ॥ श्रेबर पीत गिरा पिक सौ म्हड ना

कमो नाक पती नित ध्याई ॥ गावत प्रात हि ग्रान

ह्वरा ह्वर संत समाज सबै सुख पाई ॥ अथ मध्या ना

यका लछनम। दोहा। हो हिंजासु तन में जु गुल

मन मथ लाज समान ॥ तासो मध्या भनत हैं कवि

जन सकल सुजान ॥ यथा सवैया ॥ चित्र मे वि

पे॰गा॰ लोकन हीं लाल कौ वदन वाल जीते जहि कोटि वे
२ द सरद घुनी के ॥ म्रम क्यान ग्रमल कपोलन मै

रुचि ब्रेद चमकैन हैौ नन की रुचि रुच नीनके ॥

शीतमति हाकेयो वाहंगहत प्रचान कही जामै केशो

व राय मन सकल मनीन के ॥ गाढ़े गाही लाज मै

न कैठ द्वै फिरत वैन म्हल द्वै फिरत नैन वारी वरु ३

ध प ध | प ध नि स नि | ग म ध नि स

गदा पद्म भुज प्रलंब धारी ॥ राम रमन अनंद

| नि ध प म

भवन भक्त त्रास हारी ॥ इतिआभोगः ॥

ཅི་ཀ
༢༨
17

राग पंचम ताल ४ ध्रुवपद सूरजीका ॥ निरमो

लजग पवित्र दीप्तिमान अति प्रचंड रुद्र विराट वि

स्वरूप नेत्र जन्म सारो ॥ अभिग्रस्थाई ॥ जगादी

श्वर सद्गुण जव दर्शन हवि हरि करी जगत तिम

र नाशन हित दयपन न्कारी । इतिप्रेमना । दि

ननायक ग्रहनायक देवन पन अधिक तेज बा

पे॰ रा॰
१८
18

परह्मो सकल जगत आत्मरूप भारी । बाल निधी
चरण कंज मंजुलको ध्यान धरै जड तान मना घ
न हित परम शरण धारी ॥ इति आभोगः । अस्थान
राग पंचम ताल ४ ध्रुवपद महाराजजीका ॥ हाट
शात्म दिनकर प्रभ सकल कर्म साखी देव उदया
चल उदय देख विकच कमलकारी । इति अस्थाई

जोबनद नम कोंति करही कमल शोभि रहे पीतांब
र गरहि माल मकट कटक धारी । इति अंतरा । ऐसो
प्रभु प्रगट देव करण कर दीन वेष भक्त दीये धूप
दीप लेन मान भारी । बाल निधी नमो नमो चरण
न नित धार रहो और कछु जानन नहीं तेरी शरण
सारी ॥ इति आभोगः ॥

ཅེ་ཀ་
༢༥
19

राग पंचम ताल ध ध्रुवपद दशावतारका ।।

२ग २म २ध २नि २ध २प | २म २प २ध २प २म | २ग

विप्र वामन रूप धरन छल्यो बली भूपाल कौन

२ध २सं | २ग २म २ध २नि

की कृपानिधान । इति अस्थाई । एकवीस वार

३सं | २नि २नि ३सं २ध ३सं २नि २ध २प | २ध २नि २ध २प २म

रविन तरी क्षत्र क्षयकारी भज सहस्त्र मदगारि

| २ग २म २ग २ध २सं | २ग २म २ध २प

परसराम जगत जान । इति अंतरा । दससीस वा

२ध | २प २ध २नि ३सं | २नि २ध २प २म | २ग

इबीस खलन ईस रावण रण प्रचार कहो रामदीन

२ग २रे २सै । २ग २मे २प २नि ३सै । २नि २प २नि ३सै
पे. रा. हीन थान । हूम कल्लकि कोल हूमि मन्त्र मन्त्र
२रे २सै २नि २प २पै । २प २पै २म २मे । २ग २ग २रे २सौ
२. मार हल बोध विदन थ हो हूप भक हेन भगाव
न ॥ इतिश्यामभोगः ॥

ष॰रा॰
१

ॐ अथ षट् राग प्रारंभः ॥ भैरवो गूर्जरी टोडी देषी

गांधार एवच रामक्ली स्वर में युक्ता षट् रागः क

थितो बुधैः ॥ धैवतांश ग्रह न्यासो धैवता दिक ।

मूर्छना संपूर्णः प्रात काले च गीयते षट् स्व मे

ळकः ॥ टोडी भैरव गूर्जरी अरु देषी गांधार अरु

रामकली इनके मिलाप से बनता है अरु इसका १

ऐशा न्यास ग्रह धैवत है अरु मूर्छना भी धैवत कीहै
अरु संपूर्ण सातस्वरका है अरु प्रातःकाल मे गाया
जाता है अरु इसका ब्रह्मा देवता है तुंमरु ऋषिहै अ
रु उष्णिक छंद है श्रीं बीज है अरु स्वकीया नायिका
है अनुकूल नायिक है अरु शांतिरस है इसका प्राद
द रत्न है ॥ अथ षट राग ध्यानम ॥ ॐजटा जूटे।

घ. ग.
२

ऐसो शिव शिखरि कैलास शिखरे स्थितो भस्म लेपी
मयुर मूड हासो मनि वरैः सदा सेव्यो गणः षडितिव
कथितो योग निपुनैः ददात्या भीष्टंयो गुणि गण न
तो भैरव नतः॥ अथ भाषा ध्यानम। सवैया। शुभ्र कै
लास के सीस निवास रमै रुचिसों वपु उज्जल गारु।
मौलि जटानको जूट लसै विकसै मघ हास मूह म

२

न ह्वारु ॥ सेवत जासु लहैं जगमै मन वांछित काम
गुनि जन चारु ॥ राग भयो नित राजत है सुत भेद
व के षट् राग उदारु ॥ अथ स्वकीया नायिक लक्षने
दोहा । लाज वती निस दिन पगी निज पति के अनु
राग ॥ कहत स्वकिया सील मय ताको पति बड भाग
यथा । सेचि विरंचि निकाइ मनो हर लाजतें सुरति

र॰ रा॰
२

3

वेन बनाई ॥ तापर तो बड भाग वडे मति राम लसै प
ति प्रीति सुहाई ॥ तेरे सुसील सुभाव भटू कुल नारि
न को कुल कानि सिषाई ॥ तेहि मनो देवता के गुन
गौरि सबै गुन गौरि पढाई ॥ दोहा ॥ जानत सौति ।
अनीति है जानत सषी सुनीत गुरु जन जानत ला
ज है प्रीतम जानत प्रीत ॥ अथ अनु कूल नायकल

२

ताराम ॥ सदा आपनी नारि सों जासहिये अतिप्रीति
परनारीनि विमुष जो सो अनुकूल सरीति ॥ यथा
कैहूं नहीं विसरै निसि वासर मेंदहसी मुष चेद उज्या
री ॥ त्योंही दिपैं अति नेह सों देह की दीप कलीस
म दीपति न्यारी ॥ तोरिये ज्योति जगै हिय भीतर ।
आवत औरन राति अध्यारी ॥ नैनन है अरु वैनन

घ॰ रा
४

हूं तनहूं मनहूं कौ तूंही अति प्यारी ॥ दोहा ॥ सपने
हूं मन भावतो करत नही अप राथ ॥ तेरे मनहीं मे
रही सषी मान की साथ ॥ अथ श्रृंगार रस लक्षणम्
सवैया ॥ दीनो मै पाइन पीड़ महावर आज मैं अंजन
आंषि सुहाई ॥ भूषन भूषित कीने मैं केशव माल
मनो हर मैं पहराई ॥ दरपन लै कर दीपति देषि ४

सब अंग सिंगार सिधाई ॥ वेकवि लोकनि अंकलै पा

न खवावै नंद कुमार कन्हाई ॥ इति शृंगार रस लक्ष

णम ॥ अथ विनियोगः ॥ अस्यश्री षट् राग मंत्र स्य

तुमरु ऋषिः उष्णिक छंदः ब्रह्मा देवता श्री बीजं।

धर्मार्थ काम मोक्षार्थे षट् राग जपे विनियोगः ॥

अथ कर न्यासः ॐ षं अंगुष्ठाभ्यां नमः। एवं ह्रदयादि

ष॰रा॰
५

न्यासे सर्वं कुर्यात् ॥ अथ पूजा विधाय ॥ आसने पाद्ये

अर्घ्ये आचमनीये वस्त्रे यज्ञोपवीते गंधे अक्षते पुष्पे

धूपे दीपे नैवेद्ये दक्षिणा पुनराचमनीयम् ॥ सर्वं पू

जने कुर्यात् ॥ जप संख्या । ५.... ॥ अथ मंत्रः ॥ ॐ

षेषट्रागाय नमः ॐ ॥ इति षट् राग मंत्रः ॥ अथ षट्रा

ग देवता मंत्रः । ॐ ब्रह्मणे नमः ॐ । देवता ध्यानम् ५

ॐ ब्रह्माणी रक्त वर्णाभे । पीत वस्त्रै रले कृतम । चतु
र्भुजे चतु र्वक्त्रे म स्तके स्वकवि हस्तकम ॥ इति ध्याने
अब षट रागका येह ठाठ है ॥ षट्‌ज सम रहता है रि
षभ उतरा गंधार उतरा मध्यम उतरा पंचम सम र
हताहै धैवत उतरा निषाद उतरा ॥ अथ सरगमः।
धध नीनी सासा रेरे गग मम पप ध सासासासानीनीध

ध॰ रा॰ ६

प पप मम गगरेसा ॥ इतिस्थायी ॥ मपपनीसागरे

सामगरेसानी पप मगरेसा ॥ इति अंतरा ॥ अब इस

रे नि सां ग म पं प पं
का गत कहिते है ॥ ढिड ड्रा ढिड ड्रा डा ड्रा ड्रा डा

पं म प पं प म पं ग म ग रे सां
ढिड ड्रा ढिड ड्रा डा ड्रा ड्रा डा ढिड ड्रा ढिड ड्राडा

नि सां ग म पं पं म पं ग म सं
ड्रा ड्रा डा ढिड ड्रा ढिड ड्रा डा ड्रा ड्रा डा ॥ इतिस्थायी

अथ षट रागस्य अलापः । ननरी इना आनन उनन ६

उआ नन अद तनरी नते तना उननना आनरा ननन
रन्ते तानुम ॥ इतिस्थायी ॥ ननन अदनते आनन
नुम् तानुनै तना तन नरी नना आन तान तनुम् ।
नन्ते तरीन तानुरी रना नना आन नान आन तान
रान तनुम ॥ इति अंतरा ॥ इति अलापः ॥ रागा षट
ताल

ཐ་ཀ་
༡

༡

अथ षट्रागस्य विष्णुपरिच्छेदमाह ॥ ध्रुव

पद ताल चार ५ ॥ भक्तवछल दीनबंधु

भक्तहेत लाज धारि धाये धाये विपदहरे

रमापति विहारी ॥ इति अस्थायी ॥ द्रुपद

सभा दुःशासन जब बेणि पकर लाइ स

भा डर्योधन आताहीनम करो मारी ॥ इति

गा· घ·

२म २ग २प २ध २रे २सं २नि २ध २प
घेतरा॥ देष भीम कोप धर्म राय तिमें हट

२म २ग २रे २सं २नि २सं २सं २म २प
क दीयो द्रौपतिने भीषम कौ विनय करी

२ध २प २प २म २ध २नि २सं २ध २नि २सं २रे
भारी॥ पुन द्रोणाचार्य कहो डर्यो धन पा

२सं २नि २ध २प २म २ग २प २नि २ध २नि २ध २प २म २म
प हठी नाहि मै हटाइ सकौं क्रूर भीति धा

होनिरासद्रुपदसुताप्रतिऊंचीरुदनकियोप्राणजायेंदीनबंधुनाहिलाजभारी॥ वालनिधीग्रर्वखर्वदायकहोरुकिनिकौंवसनोंकेटील
भयेलाजनहीहारी॥

री॥ इति ग्रामोगः॥ राग षट् प्रबपद ता

२सं २म २ग २प २रे २सं २नि
ल वार ध॥ गरुड ध्वज पीतवसन रतनज

ल जिह्व वीति समरण जो को गती करे भारी

इति अस्थायी ॥ दो हजार योजन पान दौडै ।

पुनहि योजन दौड एक निमष अर्द्धकाल

परमगती कारी ॥ इति अंतरा ॥ कालचक्र

कालरूप नमन करै देव भूप पद पंकज

हीये धरै ईश्वर निज धारी ॥ बालनिधी ।

२नि २सं ३ग ३रे २सं २नि २ध २प २म २ग २ध २प

गा·घ· तेरि शरण वांछित मम पूरकरो दुर्जन ज्व

मे २ग २रे २म २प मे २ग २रे

र हरकरो हरो विपद मारी॥ इत्याभोगः

इति षट रागस्य सूर्य्या परिछेदः। ·:· ।

अथ षट्राग मा सूर्य परिच्छेदमाह ध्रुवप

२म २ग २प २ध २प २ध २रे २स

द ताल चार ध ॥ पद्माकर पद्म बदन पद्म

२नि २ध २प २म २ग २रे २स २म २प २ध २प २म २ग

लिये कर हि पद्म पद हिं पद्म धार रहे पद्मा

२प २ध २नि २ध २प २म २ध २रे २स २नि

के प्यारे ॥ इति अस्थायी ॥ होई पद्म पद्माति

२ध २प २म २ग २रे २स २म २ग २रे २स

ह अति अनंद दीन तिहुं करुणा कर भक्त

२म २ग २प २नि २ध २म

वंधु कार्य नित समारे ॥ इति अन्तरा ॥ स

२ग २प २ध २प २रे २सै २नि २ध २प २म

ग॰ घ॰ नियन मन प्रकाश देष मुदित होई कृत्य करे

२ग २ध २रे २सै २नि २ध २प २नि २सै २प

3 चित्तप्रकाश होये धरैं निनङ्ग गती धारे ।। बा

२मे २ध २रे २सै २ग २रे २सै २नि २ध २प २मे

लनिधी चरण कमल आश्रय निजमान रहो

२ग २रे २सै २म २ग २प २नि २ध

जडतातम हर करो कार्यसिद्ध मोरे ।। इत्या॰

भोग:।। राग षट् ध्रुवपद सूर्य ताल चार

२सै २म २ग २प २ध २रे २सै २नि २ध २प

तेजनिधी दिनकर रवि उष्म किरण मंड

२ध २प २म २ग २रे २सं २म ग २प

उत मकट जाम मकरा कृत कुंडल सोव

२ध २प २म ग २रे २प

सोवे सशोभ भारी ॥ इति प्रस्थायी ॥ स्वि

२म २प २ध २नि २सं २ग २रे २सं २नि २ध

गप नील वारिद इति उदपि सता वाम:

२प २म २ग २ध २प २म ग २रे मे २ग

लिये चमक रही चेवल जिम हरहि हरे ।

२रे २सं २मे २ग २प २ध

मारी ॥ इति अंतरा ॥ लक्ष्मी पव जगन्नाथ

२रे २सं २नि २ध २प २म २ग २ध २मे २प

मनि पनकी करत गति पत्र पुष्प जल फ

ग॰घ॰

२ग २म २ग २रे २प २म २ध २नि २सं
लकर परम तोष कारी ॥ बालनिधी तनमन

२ग २रे २सं २नि २ध २प २म २ग २ध २प
धन प्रीति यार पूजे जउ धारे पद अटल सो

२म २ग २रे २सं
इ फल बल अपि कारी ॥ इत्याभोग: ॥ ः

इति षट् रागस्य विस्त परिछेद: ॥ ः ॥

परयो असुर रूप होइ गयो भीत भई देवि
देष विस ध्यान धारी ॥ आये विस कष
न कीयो अबध सो पति ब्रतकर हेदा से
ग भोग करें हरें सुमति मारी ॥ हेदाह
रि सुरत बन्यो तभी असुर शोभ हन्यो बा
लनिधी चरण शरण जै जै त्रिपुरारी ॥:

रा॰ष॰ इत्याभोगः ॥ इति षट्रागस्य शिवपरि

5 च्छेदः ॥ ॥

देवनको नारद तैह थाइगये शिवमेपद·
महिमा कही गौरि अधिक न्यारी ॥ इत्याभो
गः॥ः· राग षट् शिवजी ध्रुवपद ताल ध
तीन लोक नाथ प्रभु गौरी वर सदा नेद
गिरि किलास वास करै धरै गती न्यारी॥
इतिध्रुवस्थायी ॥ जालेधर नारद भाव गौ

ग्रा. ष.

२रे २स २नि २ध २प २म २ग २ध २प २म २ग २रे २स
रीको अनूप रूप हेन अनेग तम भयो करीम

6

२ग २रे २स २प २म २ध २नि २स
मरत्यारी ॥ इतिग्रेतगा ॥ नैदि भृंगी आदसैन्य

२ग २रे २स २नि २ध २प २म २ग २ध २प २म २ग
धायेगयो युद्ध हेत शेकर हिये क्रोध भयो

२रे २स २ग २रे २स २प २म २ध २नि २स २ग २रे २स
रौध कीयो भारी ॥ जल थर सेग घोर मम

२नि २ध २प २म २ग २ध २प २म २ग २रे
रकीनो नव विकल भयो शेकर वत रूप

२स २ग २रे २स २प २म २ध २नि २स
यार उमाकुल विचारी ॥ गौरी दाव भूमि

अथ षट् राग स्य शिव परि छेद माह अवप

२सै २प २पै २म २ग २म २प २रे
द ताल चार ष ।। महा देव देवन पति को

२सै २नि २प २पै २म २ग २प २पै २म २ग २रे २सै २म
य पुंज पुत्र कीयो जालंधर नाम नाम ध्याम·

२पै २म २ग २रे २पै २म २प
बहु पसारी ।। इति अस्थायी ।। देव भीति पा

२नि २सै २प २नि २सै २ग २रे २सै २नि २प २पै
ई अमर जितन छिपे वितल माक आण्रा

२म २ग २प २पै २म २ग २रे
ये भूमीपर कोटि रूप धारी ।। इति अंतरा ।।

गा.घ. सभा करी राक्ष केत देष भूप जालंधर सुनी

कथा कोप कियो दिवज देड मारी ॥ अमर-

मैन साथ लिये गो कलई देव थानि अमरन

कर प्रबल युद्ध देव गये हारी ॥ विस्नमा-

मे गलियें अमर गोह जाय बसे अति सुंदर-

हेदापति परम प्रीति मारी ॥ देवकलेष्ठा

२ग २रे २नि २पे २ध २म २ग २पे २प २मे २ग २मे

कहो पति धन को जाय कहो धुम्रेत्तण घ्रा

२मे २ग २ग २रे २सं

घो वल भस ध्रम्हर ठानी ॥ इति आभोगः

इति षट् राग स्य प्रक्रि परिच्छेदः ॥ ०: ॥

ག་ཞ་

8

डाव हूर करण हारिणि नैहिं अमरन के र
क्षन हित अमरन की हानी॥ इति अमराई
सैभ कहो वाजिग्रीव हनमाड़ देवी ढिगजा
ये हनदेवी कों चवर कही वानी॥ इतिश्वेत
रा॥ तीन लोकजीत शुभ रत्न छीनभयो
राय मेरेसेरा वेगावलो तोहि कों रानी॥ से

ग. ष. रखावो उर्मीतैंह कहे सनो प्राणहि हविके लो।

१ बालपन में पुन निजहि भूल जानी ॥ जो मा

कों जीत लये युद्धभूमि निज बल सों मेरो सो

ई पति प्रतिज्ञात मानी ॥ सुनहि हत क्रोध

युक्त बालिश तेहिं देवि कहै बालनियी मा

नहीन प्रबरन रति दानी ॥ होवें पुन देवि।

अथ षट रागस्य शक्ति परिछेद माह अवप

द ताल चार ध ॥ जग सुंदरी डहदमिनि ।

भक्त पीर हर करनि कलियुगमें सेवक ।

कों वांछित फलदानी ॥ इति अस्थायी ॥

एक समें संभ ठोनि संभ देवयानि दिव ।

छीनलई देवन मिल तेरि शरण ठानी ॥

रा॰ष॰

10

इति अंतरा ॥ देवन को कलेश देष गंगा मैं स्ना
न किये कौशल्याग कालीकी कौशिकि सु
ख्यानी ॥ वेड मेड अति स्वरूप अमर पति
न जाय कह्यो बालनिधी सुनत मारलयी
मदन कानी ॥ इत्याभोग: ॥ राग षट् शिव
जी ध्रुवपद ताल चार ४ ॥ जै श्रेबे डुगीति॰

रा॰

रा. ध.

प्रेतत ॥ तब इच्छा जबहि भई तब माया प्रग

ट भई कालकर्म गुन अधीन प्रेड जल मिला

पी ॥ जड रूपी प्रेड देव इंद्रियो के देव सभी

करहि यतन हार रहे नाहि उठो जापी ॥

बालनिधी तब प्रवेश जबहि भयो तब ।

चितव बल प्रेड नामथयें हैरि है प्रतापी ।

अथ षट् रागस्य ब्रह्म परिछेद माह ध्रुवप

२सा मे २ग २प २प २नि

द ताल चार ४ ॥ जगदीश्वर निर्विकार नि

२ग २प २प मे २ग मे २प २प २सा २नि

र्गुण विभु नित्यशुद्ध निराकार निराधारनि

२प २प मे २ग २रे २सा २प मे २प

र्भय जगव्यापी ॥ इतिअस्थायी ॥ नही आ

२सा २नि २प २नि २सा २नि २प प

द नही अंत सर्व काल सत्य नहि जड ।

मे २ग २मे २प २प मे २ग २रे २सा

चितन्न करण हार प्राण कलाव्यापी ॥ इति

ग· ष·

येतरा ॥ तब इच्छा जबहि भई तब मायाप्रग

ट भई कालकर्म गुन अधीन अंड जल मिला

पी ॥ जड रूपी अंड देख इंद्रियो के देवसभी

करहि यतन हार रहे नाहि उठो जापी ॥

बालनिधी तब प्रवेश जबहि भयो तब।

चितन बल अंड नामथें तेहि हैं अनापी।

इत्याभोगः ॥ राग घट ध्रुवपद ब्रह्मताल ध

२म २ग २पं २ध २पं २म २ग २म २ध २पं २म

धरणि प्रभु प्रलाव रूप प्रति लक्षम वितल

२ग २रे २सं २म २पं २ध २पं २म २ग २रे २रे २सं

रूप योगि भूप नित्य मन ध्यान उर विहारी

२म २ध २नि २सं २ग

इति प्रस्थायी ॥ दश इंद्रिय दशहि प्राण ॥

२रे २सं २नि २ध २पं २म २ग २म २ध २पं २म

श्रोत्र गोत्र मन तरंग सुषम नाडि नगरहि गं

२ग २रे २रे २सं २म २ग

गा हृदय मध्य चारी ॥ इति अंतरा ॥ विदाने

रा॰ष॰ द निर्विकार सुधा बिंदु पानकरै यै रै धीर॰

वीर रहित अक्षर पद भारी ॥ शुद्ध बुद्ध नि

ज स्वरूप विदित कहे नेति नेति निगम ज

गत त्याग बालनिधी सार धारी। इत्याभोगः

इति षट्रागस्य ब्रह्म परिच्छेदः॥ ॰:॰ ॥

बे॰रा॰ ॐ अथ बेंगाली रागिनी प्रारंभः ॥ बेंगाली रागनीका
१ प्रातःकाल समैय है अरु ओडव है ग्रंथान्यास इसका

खड्ज है ऋषभ पंचम वर्जित है मोरवत् स्वर है जंबू

दीपमें जन्म है विप्रवर्ण है देवकुलमें है अग्नि इस॰

का देवता है हनुमान् ऋषि है अनुप् छंद है अरु

इसकी मध्यानायका है अरु दक्षनायक भी है अरु १

हनुमान्मतेन

उत्पन्न हुवा

इसका शोति रस है गंधार इसका भी आदिस्वर है अ

ह इसका शारत करते है ॥ अथ ध्यानम ॥ श्लोक।

मनोज्ञ मुक्ता गुण भूषतांगी स्तुकं दधाना यरणी

यस्याः प्रोप्य कुमारी कमनीय मूर्ति बंगालिकेयं

गेहू स्तुविसांग गीता ॥ हृणी वाम चयो पेना कली ना

घे न भाषित टोडी वराडी जयतश्री जय मिलाप बे

सिरितारा

बे॰रा॰ २ गालिका ॥ अथ भाषा ध्यानम । सीसको भाजन दाह
ने हाथ त्रिसूल बिराजत है कर बायें । सेत बिभूति
धरे तनमै सो रहे तपसीन के भेष बनायें । छाजत
सीस जटानिको जूट सरूप अनूप डरेन डरायें ।
दीपत है रबिकी हर बल्लभ राग बेगालि नदेत॥
बनायें ॥ इति भाषा ध्यानम ॥ अथ मध्या नायका २

लछनाम । चंद कैसो भाग भाल भ्रगुटी कमान की
सी मैन कैसे पैने सर नैनन विलास है नासिका सरो
ज गंध बाहसे सुगंध बाहु दशयों में दमन केसोवी
ज्जरी सो हास है भाइ कीसी ग्रीव भुज पान सो उदर
और पंकज से पाइ गति हंस कीसी जास है देखो ।
है गपाल एक गोपिका मे देवता सी सोने से प्यारी

र सब सोंधे कीसी बासहै ॥ इति मध्या नाइका लछ

णम् ॥ अथ दछ नाइक लछणम् । हरिसे हितूसो

भ्रम भूलि हूंन कीजे मन होतो कारे हिये हूंतै होत

हित हानीहै ॥ लोकमै अलोक आनिनी के इकेको ।

लागतिहै सीता ज्हूको हून गीत कैसे उर आनिये ।

आषिन ज्देखियत सोई सांची केसोदास काननकी

सनी मोची कब ह्वै न मानिये ॥ गोकलकी कुलटा

ण्यौं ही उलटा वनिहै आजलौ नौवै सेईहै कालि

की न जानिये ॥ इति दत्त नाइक लक्षणम ॥ अथ

शांति रस लक्षणम। देषै नहीं अर विंदन सौं वि

न वेदकी आनंद कंद निकाई ॥ कामनि काम।

कथा कवै कंनन ताके श्यामकी सुंदर ताई ॥

बे. रा.
४

देषि गई जबतें तम कौ तब तें कछु वाहि न देषी सु

हाई ॥ छोडे गी प्रान जो देषे विना अहो देऊ नका

न्ह कहूं ह्वै दिषाई ॥ इति प्रीति रस लक्षणम ॥

अथ विनियोगः । ॐ अस्य श्री बेगाली रागनी मंत्र

स्य हनुमान ऋषिः अनुष्टुप् छंदः अग्नि देवता ।

ह्रीं बीजे मनो कामना सिद्ध्यर्थे बेगाली रागनी जपे ४

वें

विनियोगः ॥ अथ करन्यासः ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः

एवं हृदयादिन्यासं सर्वं कुर्यात् ॥ अथ बेंगाली राग

नी मंत्रः । ॐ ह्रीं श्रीं ह्रूं बेंगाल्यै नमः ॥ इति मंत्रः ॥ अथापरो मंत्रः ॐ वं बंगाल्यै नमः

षोडशोपचार

अथ पूजा विधाय । आसने पाद्ये अर्घ्ये आचमनीये

वस्त्रे यज्ञोपवीते गंधं अक्षते पुष्पं धूपं दीपं नैवेद्यं

दक्षिणा पुनराचमनीयम् सर्वं पूजनं कुर्यात् ॥ जप

बे. रा.
५

5

सेख्या । ५...... ॥ अथ रागनी बेगाली [अग्नि] देवता मेत्रः । ॐ
ह्रेह्रनभुजेनमः । तस्याध्यानम् ॥ शुक एष गते देवे
शक्ति हस्ते त्रिलोचने मृगाजनेन मे युक्ते पुष्प वर्णे
ह्रता ध्यानम् ॥ इति देवता ध्यानम् ॥ अब बेगाली रा
गनी का येह ठाट है ॥ खड्ज स्थिर गंधार चडा मध
म उतरा पंचम स्थिर [धैवत उतरा] निषाद चडा रिषभ पंचम वर्जि

नहै ॥ अथ सरगमः ओडव । सागमधनी ॥ सागम

धनिसासानिधमगसाधमसासानीगसागमधसा

इति बंगाली रागनी ओडव सरगमः ॥ अब इसकी ये

ध म ध नि ध म ग
ह गतनहै ॥ टाठभैरव का । डिठडा डिठ ठा ठा डा डाठा

म ध नि सै सै ध नि सै
डिठ डा डिठ डाठा डा डा ठा डिठ डा डिठ डाठा डाडा

सै नि सै नि ध म ग म नि ध म
ठा डिठ डाडिठ डाठा डा डा डा डिठ डा ढिठ डाठा

बे॰ रा॰ ६

ग सै
डा डाढा ॥ अथ मतं तरेण बेगाली मंसण गत येहे है

रे म पै नि ध पै म ग रे सै रे ग ग रे सै
डा डिढ डाढा डा डाढा डिढ डा डिढ डाढा डाडाढा।

सै म मगी पै ग ध पै ध
इतिस्थायी ॥ डा डिढडाढा डा डिढ डाढा डाढ ढा

पै म ग रे सै
ढ डिढ डा डिढ डाढा ॥ इत्यंतरः ॥ अथ अलापः ॥

ग रे सा सा नी सा रे ग म ध पै म ध ध पै
ननरी इना आनन उनन उआनन अद ननरी नने

ध नि ध पै म ग रे सै
नना उन नना आनरा ननन रन नानुम ॥ इतिस्थायी

६

२ग २म २प २नि ३सां ३सां २रे ३रे ३सां २नि २प २म

तनन अदनते आनन तुम तानुते तना तन तरी ।

२प २नि ३सां २नि २प २पि २म २ग २रे २ग

नना आन तान तनुम नन्तु तरीन तानुरी रना नना

२प २म २ग २ग २रे २सां

आन तान आन तान रान तनुम ॥ इत्येतरा ॥ रागीनी

बेगाली ताल॰

ཞེ་ག་
༡

༡

भै. रा
१

अथ भैरवी रागिनी आरंभः ॥ भैरवी रागिनी का प्रातःकाल इसका समय है अरु मेपूरण अरु शिवजी इसका देवता है। अरु शांतिरस है अरु विडिनानाइका है। अरु दत्तनायक अरु इसका शिशिर ऋतु है। अब इसका येह ध्यान है॥

अथ भैरवी रागिनी ध्यानम् ॥ स्फटिक रचित पीठे रम्य कैलास शृंगे विकच कमल पत्रै रर्चयंती महेशं करतल

१

धृतवीणा पीनवर्णा यनादी स्तु कविभि रियमुक्ता भैरवी भैर
वस्त्री ॥ अथ भाषा ध्यानम् । गिरके विकास मैं विलास
हास करै बैठी चंदनकी चौकी पर गिरजासी जानी है ॥
चंदमुखी चपलातें चारु देह दुती दिपै कमल कुसम निसि
अर्चा हिं ठानी हैं ॥ इंदीवर दलहूं तें दीर्घ कछुक नैन ॥
करयर तालवाल मृदंग सुमसकानी है ॥ पिया कर प्रीत ॥

भै॰रा॰
२

हरिवल्लभसंसावजीतंश्रेमीरसरीतं कबु भैरवी बषानीहै ॥ इ

तिरागिनी भैरवी ध्यानम ॥ अथास्य खंडिता नायका ल

क्षणम ॥ कवित्त ॥ जावकलिलार ओठ अंजन को लीक

सोहै पैयेन अलीक लीक लीकन विसारिये ॥ कहैम

तिराम छाती नषछत जगमगै उगमगै पग सूधे म

गमै न पारिये ॥ कसकै उघारत हो पलपातें पलकामे

२

पौढि श्रम । रा ति केर मनको निवारिये ॥ लटपटे पेच
कछु बातन कहत बनै लटपटे पेच सिर पाग के सवारि
ये ॥ इति विडितानायका लक्षणम ॥ अथ शांति रस लक्ष
णम ॥ दोहा ॥ होत न कछु न्यारे भये अरु मिल बैठे सा
थ ॥ तिन्हैं भवन बन एक है है जिनके मन हाथ ॥ सब
डव को अथिर नहीं इह निहचे कर जोय ॥ दिन बीते नि

भै० रा०
३

सहोनतहै निसबीते दिन होय ॥ अथ दक्षनायक लक्षणम ॥

सागर दछ्छन दछ्छनकी समबरनतहै प्रीत ॥ बहुन दि

यन यहतियन को मिलन एकहिं रीत ॥ अथ रागणी ॥

विनियोगः ॥ अस्य श्री भैरवी रागिनी मंत्रस्य भरत रि

षि रनुष्टुप छंदः शिवो देवता श्रीं बीजं मनोकामना

सिद्धार्थे श्री भैरवी जपे विनियोगः ॥ अथ करन्यासः ॥

श्रीं त्रिगुणाभ्यां नमः एवं हृदयादिन्यासं सर्वं कुर्यात् ॥ अथ
मंत्रः ॥ ॐ श्रीं पं पं पें फें भं भैरव्यै नमः ॥ अथोपमंत्रः । भं भै
रव्यै नमः ॥ भं फें इत्यासने । भं फें पाद्यं । भं फें इत्य र्घ्यं । पं
फें इत्याचमनीयं । गंधं । पुष्पं । धूपं । दीपं । नैवेद्यं । पुनरा
चमनीयं । सर्वं पूजनं कुर्यात् ॥ अथ जपं संख्या १५.....
अथ भैरवी रागिनी देवता मंत्रः ॐ नमः शिवाय ॥ नमस्ते या

भै॰रा॰
४

नम॥ बंदेरुद्रमुमापतिं सुरगुरुं बंदे जगतकारणं बंदेप
न्नगभूषणं शिषाधरं बंदेपशूनांपतिं बंदेसूर्यशशांकव
ह्निनयनं बंदेमुकुंदप्रियं बंदेभक्तजनाश्रयंच वरदं बं
देशिवंशंकरम॥ इतिदेवताध्यानम॥ अबभैरवीका
येहठाठहै॥ षड्जसमरहताहै। रिषभउत्तरा। गंधार
उत्तरा। मधमउत्तरा। पंचमसम। धैवतउत्तरा। निषाद

उतरा॥ अब ग्रेश न्यास कहते हैं। अह इसका ग्रेश न्यास

षट्ज मध्यम है। अह भरत मतानुसा ग्रेश न्यास षट्ज इ

सका धैवत है अह मध्यम नाम मूर्छना लगाती है अह।

टोडी रामकली गूजरी इन तीनो के मिलाप में भैरवी व

नती है॥ अब इसका सरगम ये है॥ अथ स्थायी॥ ॥

म प रे म नि ध नि ध प ध म प सा नि सा सा म प ग रे ग

भै॰ रा॰ ५

मप । अथ अंतरा ।। मपमपपनिसारेमगरेसारेनिसा

गरे गरे गरे गरे गरे सा ।। रेनिसामपगरेगरेसारेनि

साधेपमगरेसा ।। इति स्वरग्रामः ।। भरतमतेन । रिषभ

इसका कोमल है और धैवत अति कोमल है मधम पंचम शुद्ध

हैं मधम वादी है षड्ज निषाद संवादी है पंचम धैवत ।

गंधार अनुवादी है इस प्रकार करके इस रागिनी का सेवा

रि नि सै

रहै ॥ अथ रागिनी भैरवी सड सेप्राणगत ॥ ड़िड। डा। ड़िड।

ग म नि ध पै ध पै म ग रि सै

ड़ा। डा। ड़ा। ड़ा। डा। अबुर्द ॥१॥ ढ़िड। डा। ड़िड। डाडा। ड़ाड़ा। डा।

ग रि सै नि ध पै सै ध नि

अबुर्द ॥३॥ ढ़िड। ड़ा। ढ़िड। ड़ाडा। ढ़ा। ढ़ा। डा। अबुर्द ॥४॥ ढ़िड।

सै ग म ग रि सै

ढ़ा। ढ़िड। ढ़ाडा। ढ़ा। ढ़ाडा ॥ इतिस्थाई ॥ अथ अंतरा स्थाई ॥

पै ग

बजा। करनालकी। पैहेलीमें। चला ॥ अबुर्द ॥१॥ ढ़िड। डा ॥

म पै ध नि सै ग रि सै नि ध पै

ढ़िड। ढ़ा। डा। ढ़ा। ढ़ाडा ॥ अबुर्द ॥२॥ ढ़िड। ढ़ा। ढ़िड। ढ़ाडा। ढ़ा।

भै. रा.
६

ध नि सं ग म प ध नि सं

ड्डिड | ड्ढा | डा ।। अबुर्द ।। ३ ।। ड्डा | ढ्डिड | ड्डा | डा | ड्डा | ढ्डिड्डा डा ।। अ-

ग म प म ग रि सं

बुर्द ।। ४ ।। ड्ढा | ड्डिड | ड्डा | डा | ड्डा | ड्डा | डा ।।। फेर पहिले | विषम की |

ध नि

ढिड | में | जाय | मिला ।। इति अंतरा ।।। अथ आलाप: ।। ननरी |

नि सं ग ग म ग रि ग म प ध प ध ग म

इना | आनन | उनन | उआनन | अद | ननरी | तने | तना | उननना |

ग रि ग म ग रि सं म ध नि सं

आनरा | ननन | रनु | नानोम ।।। इति स्थाई ।।। तनन | अदनते |

रि सं नि ध प म ग रि ग म ग रि

आनन | नुम | नानुनै | तना | तन | नरी | नना | आन | नान | ननुम ||

६

२सं २धं २निं २निं २निं २सं २सं २रें २गं २मं २गं २रें

ननु | नरीन | तानुरी | रना | नना | आन | नान | आन | तान | रान | त

२सं

नुम ॥ इति त्रेतरा ॥ राग भैरवी ताल तिताल ॥ धीरस

मीरे यमुनातीरे बसति बने बनमाली ॥ गोपीपीनपयो

धरमर्दनचंचलकरयुगशाली ॥ रतिसुखसारे गतम

भिसारे मदनमनोहरवेषं ॥ नकुरु नितंबिनि गमनवि

लंबिनिमनुसरतं हृदयेषं ॥ राग भैरवी ताल तिताल ॥

भै॰ गा॰
८

ल॰ रा॰
१

ॐ अथ ललित राग आरंभः ॥ येह राग संपूर्ण मानस्व
रका है परंतु कलावंत लोक इसको षाडव छे स्व
र को मानते है इस मै पंचम स्वर वर्जित है अरु इस
का ग्रेह न्यास अरु निषाद है प्रातःकाल मै येह गा
याजाता है अरु वसंत पंचम के मिलाप सें येह बन
ता है अरु इसका बलादेवता है ब्रमह् ऋषि है जग १

नी छेद है प्रौछा नायका है दत्तनायक है अह कर

ण रस है इसका वसंत ऋतु है ॥ अथ ललित रागा

ध्यानम ॥ प्रफुल मम छेद माला धारी युवाच गौरे

मृग लोचन श्री: विनि स्य सन दैव वशात प्रभाते

विलास वेषो ललित प्रदिष्ट: ॥ अथ भाषा ध्याने

सवैया । शारदा पङ्कपन माल गरे वर वेस जवा अ

ल॰ रा॰ ति क्रोध भरी है ॥ गौर शरीर की कांति दिपै मृग लोच
२ न मूरति मैन खरी है ॥ लेत उसास उतंग प्रभात म
नो प्रिया की सखी ध्यान धरी है ॥ जस राग विलास
सौं रंजत है नष सीस लौं त्यौं सष मासी जरी है ॥
अथ प्रौढा नायक लक्षणम्। दोहा। निज पति सौं
रति केलि की सकल कलानि प्रबीन ॥ ता सौं प्रौ २

छा करत है जेकविन रस लीन ॥ यथा सवैया ॥ आ
न पिया मन भावन संग अनंग तरंग निरंग पसारै ॥
सारी निशा सष संग मनो हर केलिके पुंज अनेक
उचारे ॥ होत प्रभात चलेया चहै प्रीतम सुंदरि के
हिय मै उष भारे ॥ चंद सौ आनन दीपसी दीपति ।
स्याम सरोज से नैन निहारे ॥ अथ दक्षनायक ल

ल॰ रा॰
२
लाराम। दोहा। सकल त्रियनि सौं एक रस कान्ह सौं
घट नाहिं दरसन ललन नाम के सबै बसी मनमाहिं
यथा सवैया। एतो सहस्त्रक चंदमुषी अपनी अप
नी छवि की अधिकाई॥ हैं हग मेरें हों देऊं कहो
कहो हेमन एक कहे कहियाई॥ प्यारी लगें मृगने
नी सबै रघुनाथ नहीं लघुदीरघ नाईं॥ योंही विचा
२

रि कै दछ्छन लछ्छन प्रेम प्रतीति छकैयो सब ठाई॥

अथ सिंगार रस लछ्छन। सवैया। यों विपरीत रमै वनिता कच मेघ मनौ नभ चंचलकीनै॥ ईंदु छिपै ज चलै छवि सौं तहां कूजि कपोत महा सुष दीनै॥ फूल चहूं दिसनैं वरषैं रघुनाथ कलोलन मैं चित भीनै॥ देव तरंगनि संग डुलावति।

ल॰ रा॰ लाल विफाय किये है ग्रथीनै ॥ ग्रथ ललित रागस्य
४ विनियोगः ॥ ग्रस्यश्री ललित राग मंत्रस्य ब्रमहू॰
ऋषिः जगती छंदः ब्रला देवता ले बीजे ललित
राग सिद्ध्यर्थे जपेविनियोगः ॥ ग्रथ कर न्यासः ॥
ॐलें ग्रंगुष्टाभ्यांनमः ॥ एवं हृदयादि न्यासे सर्वे कुर्या
त ॥ ग्रथ पूजो विधाय ॥ ग्रासनं पाद्यं ग्रर्घ्यं ग्राचम ४

नीयं वस्त्रं यज्ञोपवीतं गंधं अक्षतं पुष्पं धूपं दीपं नैवे

द्यं दक्षिणा पुनराचमनीयम् ॥ सर्वे पूजनं कुर्यात् ॥

अथ ललित राग मंत्रः ॥ ॐ लं ललिताय नमः ॐ ॥

इति ललित राग मंत्रः ॥ जप संख्या १..... सम्पलदे

अथ ललित राग देवता मंत्रः ॥ ॐ ब्रं ब्रह्मणे नमः ॐ

अथ देवता ध्यानम् ॥ ब्रह्माणं रक्त वर्णाभं पीत व

ल. रा. ५ सैवरले कृतम् वनर्भजे वनर्थेक्रें मस्कवे स्कविहस्त

कम्॥ इति ललि राग देवता ध्यानम्॥ अब ललित

रागका येह ठाठ है॥ खर्ज सम रहता है रिषभ उ

तरा गंधार चढा मधम दोनो उतरा पंचम सम रहता है

धैवत उतरा निषाद चढा॥ अथ ललित राग सर

गम:॥ निरेमगमगगपपमगगमपगरेसा॥ इति ५

अस्थायी ॥ गमपनिसारेगरेसानिपमगारेसा ॥ इतेरा ॥

म ग रे नि सां म ग म प म प
ढिड ढा ढिड ढा डा ढाढाडा ढिड ढा ढिड ढा डा

म प ग म ग रे सां नि प नि रे नि सां रे
ढा ढा डा ढिड ढा ढिड ढा डा ढा ढा डा ढिड ढा ढि

ग म ग रे नि
ड ढा डा ढा ढा डा ॥ इतिअस्थायी अंतरा ॥ अथआ-

नि सां मे मव॰ मउ॰ प मव॰ मउ॰ ग रे सां ग मउ॰ प मव॰ ग मउ॰ प
लापः ॥ ननरी इना आनन उनन उआनन अद त

नि सांरे निप माव॰ म॰उ मउ॰प नि रे नि प मव॰ मउ॰ ग मउ॰ ग रे सा
नरी तने तना उननना आनरा ननन रन तानूम ॥

ल· रा·
६

२ २ २ ३ ३ ३ ३ ३ ३ १ २ १ २

मउ· प नि सै रे ग रे सा रे नि प मव· मउ·

इति स्थायी ॥ तनन अदनते आनन तअम तानुनै तना

२ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ २ ३ २ ३

ग रे सा ग माउ· प मच· मउ· प मउ· मव· मउ· ग मउ· पे सा नि सा

तन नरी नना आन तान तनअम नअ तरीन तानुरी·

२ २ २ २ २ २ २ २ २ १ २ २ २ २ २ २

नि प मव· मउ· प मच· मउ· ग रे नि सा रे ग ग रे सा

रना नना आन नान आन तान रान तअनम ॥ इत्यंतरा

राग ललित ताल

६

अथराग ललित बसत परिछेद ताल चार ४।

नि सं म ग म प मंध म प नि सं रें नि प म

सदा सत्य चिदानंद व्यापरहो ग्राम अलख

नि प सं रें नि प म ग रें सं

जैसें नभ बादर युत भिन्न रूप धारी ॥ इति अ

म प नि सं रें नि प म ग

स्थायी ॥ एकतें अनेक रूप धारण हित क

म मंध प नि सं रें सं नि प म ग

र अथान निज स्वरूप मोहधार द्वैत कीयो ।

रें सं नि सं म ग म प मंध

भारी ॥ इति अंतरा ॥ मोरी येह देह बली हू

मे पे नि सं रे नि पे मे प मेव॰ मे ग

रा॰ ल॰ प रेग श्रोभरही वनिता मम अति प्रवीन हैम॰

रे सं मे पे नि सं रे नि मे पे ग मे पे

लता मारी ॥ बाल नियी पुत्र पौत्र अभिजन

नि सं रे नि पे मेव॰ मे पे मेव॰ मे पे मेव॰ मे

मैं भूलि रहीहौं वास्तव सें नेहि नेहि नटवत

ग रे सं

कुल हारी ॥ इति आभोगः ॥ राग ललितमा

मे ग रे सं मे ग मे पे सं

ल बार ।४। अवगत लाखो न जाय निरंका

रे सं नि मे पे मे पे सं सं

र नारायन ॥ इति स्थायी ॥ तीन लोक लोक

पाल रहैं ध्यान जोके निसवासर पाराईन

इति अनतरा।। नारद सनकादिक वेदव्या

स मुनि वसिष्ट सोई इष्ट पाराईन।। सोई।

त्रिष्टको आधार सोई सार परम बल सोई

कारण कारा ईश्वर।। इत्या भोगः।। इति बलपा

रिछेदः।। ५।।

ग. ल.

८

8

अथसरस्वतीवर्णनम् राग ललित ताल·ध

नि सं ग | मव॰ म म प मव॰ | ग रे सं म

जननी जगत पालि जन कलेश वानी स

ग रे ग | रे सं | म

वे गुण निधान माई॥ इति अस्थायी॥ ता

प नि सं रे रे रे नि प | मव॰ म ग म मव॰

कौं ध्यावें सिद्ध सायनी गीरवान गुनी गाय

नि नि रे सं रे रे नि प मव॰ म ग | रे रे सं

वें सर्वठौर सर्वठौर सर्वथा समाई॥ इति अं

नि सं ग म प मव॰ प नि | रे सं रे रे नि प

तरा॥ वाद्य नृत्य तान ताल नाद कंठ स्वर·

मव. म ग म ध नि ध मव. म ग रे स

ग.ल. रसाल तव प्रसाद पावत सद्वर मम दाई।

५ 9

म ध नि रे स रे रे नि ध मव. म ग रे स

वानी वरदायनी भायेनि भवानी सरस्व.

मव. म ध म ग रे स

ती समन शोक तीन लोक गाई।। इत्याभो.

गः।। राग ललित ध्रुवपद ताल चार १।

ग रे स म ध म ग म ध म

कमला मनि कमल नयनि कमलसावि

ग म ध नि स रे रे स नि ध म म ध नि स

कमपदी कमल करन धारिणि श्रीमहा.

रे नि प मेव. मे

लसि रानी ।। इति अष्टपदी ।। अथ अनन्ता ।

मे पे नि २से २से नि प मे ग

कमल विंड वास करैं कमला मन भेटयैं

मे प २से नि प २नि २से नि य मे

शुकादिक देवनको भावम शोभदानी ।।

ग रे २से मे मेव. प मेच मे पे नि २से

श्वेतांबर धारिणि नहि कुचभर कर नमि

रे नि पे मेव. मे प नि २से नि पे मेव. मे मे

नवहो लभे रम कोमल ध्यानमें ज्ञानी । बा

पे नि २से २से नि प मेव. मे ग रे २से

लनिधी नेर शारण चरण कमल जानर

मे मेव॰ पे नि २स नि पे मेव॰ पे मे

गा॰ल॰ हो एरो मक काम धाम दीजो निज भानी ॥

१०

इत्याभोगः ॥ इति षाक्षि परिच्छेदः ॥ ८ ॥

अथ गणेश परिच्छेदः राग ललित ताल चार

सा ग म प म ग रे ग म प मध ग रे सा

विघ्न हरण वक्र तुंड गज मुख वर एक रद

नि सा ग म प मध म ग रे सा ग रे

न वांछित को पूरकरण अरि दमन कारी।

म प नि सा रे सा रे नि

इति अस्थायी ॥ दुर्जन के नाश हेत परशु।

प मध मग मग प नि सा रे नि प मध मग

धार एक हाथ दूजे पुन देत लिये भक्त को

ग रे सा ग म प मध

भारी ॥ इति अन्तरा ॥ तीजि हाथ मोदक।

ग॰ल॰ युत पात्र लिये अपर पानि अभयदान देत सदा

११ || चतुर भुजा धारी ॥ कपिल वदन क्रीट मुक

ट कुंडल युत फल करहो नमोनमः चरनन

मैं बालनियी मारी ॥ इति आभोगः ॥ रागल

लित ताल चाराधा। उठहीं प्रात गौरि नात

श्रीगणेश सेवो नित अनराय दूरधूरनाशे

जस गावत हैं ॥ इति प्रभाती ॥ सिंधुर युत व

दन रदन एकही विराज रहो तिलक भा

ल चंद्रकला उज्वल छवि भावत हैं । श्वेत ना

सीस मुकुट पीत वसन शोभित जिम कर

ण कार हाथ लिये परशु धार दुर्जन को ।

घावत हैं ॥ बालनिधी बारिनिधी करुणा ।

गा·ल· के श्रुति छबी [illegible] ण दीजो निज प्रेम नेम निधि

१२ यनकी दातहीं ॥ इति आभोगः ॥ इति आभो

गः ॥ इति गणेश परिच्छेदः ॥

अथ विष्णुपरिच्छेद ध्रुवपद राग ललित ता
ल चार ध ।। नारायण पद्मनाभ करुणाक
र भक्त मुक्त पूज्य भक्तवच्छल भक्तहेत ला
ज धार धावे ।। इति अस्थायी । अथ अंतरा ।
जहां परी भक्त पीर वेग धाय धरी धरी धी
र दर्श दीयो कृपा सिंधु धार तहां जावे ।।

रा॰ ल॰

१२ 13

महा नक्र करी गहो क्लेषा हर हरी कियो द्रौ

पत को चीर दीयो सजन मन भावै ॥ खंभ

फार श्री नरसिंह हेम किश्यप मारयो जब प्र

हलाद रक्ष करी बाल निर्थे तारे ॥ इत्याभो

ग: ॥ राग ललित ध्रुवपद ताल चार ध

जगत पाल जगत को आधार दीन दया॰

निवार दीनबंधु भगवान ॥ इति अस्थायी ॥ अथ
अन्तरा ॥ जब जब स्वर नर धरनी येहु उज
न बन्यो भीर नव नव दीन पीर दीन भक्त स
व दीन ॥ कमला के स्वामि कमल नैन ।
करुण नीरसिंधु भौन मैन हर्ने कोटि को
टि कोटि करुणा निधान ॥ मनुज देव दे

३ग २सं ३रे ३रे २नि २प २मव॰ २म २प २नि २सं २रे २नि २प २मव॰

रा॰ल॰ वन ईस सनकादि सुभ सुनी सब रिंची गारी

२म २ग २म २प २नि २प २म २ग २रे २सं

२८ 14 स ओफनीस जास थैरै ध्यान ॥ इत्याभोगः।

अथ ध्रुवपद परिछेद शिवजी नाल चारष ॥

नि सं म मच॰ मउ॰ | प म ग म

नीलकंठ गौर गात गिरजा पति भाये। स्थाई॰

म प नि सं रे नि | प नि सं रे नि प मच॰ मउ॰

मदन कदन सजस मदन वदन विधु सहा॰

नि सं म मच॰ मउ॰

ये ॥ इति अस्तगा ॥ कर त्रिशूल मुंडमाल भ

प मच॰ मउ॰ म प नि सं रे नि प नि सं

सम सितर भाये ॥ सीसगंगा डमरु पानि डि

रे नि प मच॰ मउ॰

मक डिम बजाये ॥ इति आभोगः ॥ राग ल

गा॰ ल॰ लिन नाल वार थ॥ शंकर शिवशंभु भोला
१५ नाथ उमापति कैलास बासी हो॥ इतिस्याई॰
कालहूके कालधरे गरे मुंड माल उरवि
सालवाल भाल चंद्रमा विकासी हो॥ इतोत
रा॥ नाम सगुण सरूप छवि अनूप वृषभ
नाथ भूत प्रेत पिसाच साथ आहिके विनासी

शि॰ १

हो ॥ देवन के देव देव महादेव दीनपाल मा
जे आभरण व्याल कौनकी विलासी हो ॥ ध्रु ॥
इति आभोगः ॥ ८ ॥ इति शिव परिच्छेदः ।

गा·ल·
२६ 16

पि·२

अथ सूर्य्य परिच्छेदः राग ललित ध्रुवपद ता·

स म मच प मच म प नि स

ल चार थ ।। जगत को प्रकाश करण उसमा कि

रे नि प मच म ग म ग रे

रण कमल मित्र तेज पुंज गगन चारी ।। इति

म प नि स ग रे स रे

ब्रम्हायी ।। दिन कर दिनमान भानु देव उ

नि प मच म प नि स रे नि प मच म ग रे

नि प्रधान दरशान ब्रगाहान उपरन मेसा·

स मच म प मच

री ।। इति अंतरा ।। आदित्य भगवान सर्व क

म मव॰ प नि सं रे नि प मव॰ म प

रा॰ ल॰ लागुण निधान बल अखेड अनि अखेड अनलि

१२

मव॰ म ग रे म प नि सं ग रे सं रे

त विभुयारी ॥ सेवत जन सफल कामम्बल

नि प मव॰ म प मव॰ म प सं नि

त जोती अभिराम नामको प्रभाव भव भंज

प मव॰ म ग रे

न अज्ञ भारी ॥ इत्या भोग: ॥ राग ललित क

सं म मव॰

वपट ताल चार ध ॥ तिमर हरण अरुण

म प मव॰ म ग रे सं

देव दिपत दिसन दिन मान ॥ इति अस्थायी

२मे २पे २नि ३सा २नि ३सा २नि २पे २मव. २मे २ग

जगमगात जग प्रकाश केउ कोक शोका-

२रे २सा २सा २मे २मव. २पे २मव.

हान ॥ इति अंतरा ॥ वंदित दग दग सि श्रा

२मे २पे २मव. २मे २ग २रे २सा २मे २पे २नि

न भनि जन नित कृत स्नजान ॥ सर्वके श्रा

२सा २रे २नि २पे २मव. २मे २ग २रे २सा

यार हर सरव साखी भगवान ॥ इत्याभोगः

मा·ल·

१८

18

ग-२

अथ दशावतार परिच्छेदः । राग ललित ता

२सा २म २मव. २म २प २मव. २म

ल चार ॥४॥ निर्गुण अज निर्विशेष निरा

२प २नि २सा २नि २प २मव. २म २म २प २नि २सा २नि

धार निर्मल अति जबहि धर्महानि जग

२सा २रे २नि २प २मव. २म २ग २रे २म

त सद्गुण वपु धारैं ॥ इति अस्थायी ॥ उ

२प २नि २सा २ग २रे २सा २नि २प २मव. २म २प

लय काल अब्धि मांक मत्स्य भयो मनु ।

२मव. २म २प २नि २सा २ग २रे २सा २रे २नि २प २मव. २मउ

रतक तीर अब्धि मथन हेत कच्छप गिरि

ग०ल० मारै ॥ इति अंतरा ॥ सूकर है भूमि धरी श्रीनर
१५ 19 सिंह रक्ष करी विप्र वीर प्रहलाद अमर उर
सम फारै ॥ बामन वपु भूमि गही परशुराम
भार हरयो राम राम बुद्ध कलकि बालनि
ये तारै ॥ इति आभोगः ॥ इति दशावतार।
परिच्छेदः ॥ ५ ॥

दे॰ रा॰
१

ॐ अथ देशाष राग आरंभः ॥ ॐ गंधार अंश ग्रह न्यासे कैश्चि हृषभ ईरितः । संपूर्णो देव शाखा ख्यो देव मार्गे भाषितः ॥ सूहा ख्य कान्हडा युक्तः सारंग स्वर मिश्रितः देशाषो जायते तत्र द्वितीय प्रहरे दिने ॥ इस का अंश न्यास ग्रह गंधार स्वर है अरु कहीं रिषभी कहा है येह संपूर्ण है अरु कान्हडा सूहा सारंग के मिला १

पमें येह बनता अरु इसका दूसरा पहिर समय है अरु

सरभी इसका देवता है अरु सोम ऋषिहै उष्णिक छं

दहै ह्रींबीजहै अरु प्रौढा नायका है अरु दक्ष नाय

क है अरु वीर रस है अरु इसका शारद ऋतु है ॥

अथ देशाष ध्यानम ॥ प्रभु ललित शरीरो मल्ल की

डा सु दक्षः परम बलि वरिष्ठो बाहु दंडै प्रचंडः श्र

दे. रा.
२

नि ध्याय हठ कलो महु कैषी र्वहीनः प्रचरति न्टप।

शाला मेघ देशाष रागः॥ अथ भाषा ध्यानम्॥ सवैया

मंजुल पीन कली वर को यज वीरज याम महाबल

वाहू॥ मल्ल पराक्रम भट्ट प्रधान वयो भुज दंड प्रचं

ड प्रचाहू॥ श्रायत बक्ष गहे हठ कन्न प्रतन्न दिपै

इति मेडन चाहू॥ राग देशाष विराजित है उतसा
२

ह मों मध्य महीप ग्रघाह ॥ ग्रथ प्रौढा नायका लक्ष

णम ॥ दोहा । निज पति सो रति केलिकी सकल

कलान प्रबीन ॥ ता सों प्रौढा कहत हैं जे कवित्त

रस लीन ॥ यथा ॥ आए पिया मन भावन सेंग स

नेग वढेया निरेंग पसारे ॥ सारी निसा मतिराम मनो

हर केलि के पुंज ग्रनेक उघारे ॥ होत प्रभात चलो

दे०रा०
३

वहै पीतम सुंदरि के हिय मैं उघ भारै ॥ वेद मो ग्यान
न दीपसि दीपति स्याम सरोज मैं नैन निहारै ॥ अथ
दत नायक लछ्छन ॥ दोहा । पहिलो सो हिय है
तु उर सहु जब डाई कान ॥ चित चले हूं नाचले द
छ्छन लछ्छन जान ॥ यथा सवैया । चित चोप चितै
वेकी नैसी येहै अरु नैसैं हूं भांति उरात चनै ॥ अरु ।
२

नैमें ही कोमल बोल गुपाल के मोहन है निमि भांति म
नै ॥ गुन नैसेई हास विलास सबै झ्हते जैसेई केशव।
कौन गनै ॥ सखि त्हें कहें आन वधू के अधीन हैं सा
पर नीष किधौं सपनै ॥ अथ वीर रस लक्षणम् ॥ दोहा
होय वीर उतसाह रस गौर बरन उति अंग ॥ अति उ
दार गंभीर कहि केशव राय प्रसंग ॥ यथा छपै ॥

दे. रा.
४

जाहि मर मधु मद मर्दि महा खर मर्दन कीनो ॥ मार्यो
कर्कस नर्क संष हनि संष खलीनो ॥ निःकंटक खर
कंटक कस्यो कैटभ वधु षंड्यौ ॥ षर दूषन त्रिसराक
बंध तरु षंड विहंड्यौ ॥ बल कुंभकरन जिन संह
र्यो पलन प्रतिज्ञा तैं टरेउ ॥ नहि बान प्रान दस
कंटके कंठ दसो षंडिन करेउ ॥ इतिवीर रसः ॥

४

अथ देशाष राग विनियोगः ॥ ॐ अस्य श्री देशाष मे
त्रस्य सोम ऋषिः उष्णिक छंदः सुरभी देवता ह्रींबी
जं श्रीं शक्तिः धर्मार्थ काम मोक्षार्थे देशाष जपे वि
नियोगः ॥ अथ कर न्यासः ॥ ॐ दैं अंगुष्ठाभ्यां नमः
एवं हृदयादि न्यासं सर्वं कुर्यात ॥ अथ पूजा विधा
य ॥ आसनं पाद्यं आर्घ्यं आचमनीयं वस्त्रं यज्ञोपवी

दे॰ षा॰
५

ते गंधे अक्षते पुष्पे धूपे दीपे नैवेद्ये दक्षिणा प्रवाचम
नीये सर्व पूजनं कुर्यात ॥ अथ देशाष मंत्रः । ॐ दें दे
शाषायनमः ॐ ॥ इति मंत्रः । जप संख्या । ८॰॰॰॰
अथ देशाष देवता मंत्रः । ॐ ह्रीं श्रीं स्वरभीनमः ॐ ॥
देवताध्यानम ॥ ॐ विस्मो र्वक्ष सिया लक्ष्मीः स्वाहा
चैव विभावसौ चंद्रार्क शक्र लक्ष्मीर्या येन रूपास्तु मा

प्रिये ॥ इति देवता ध्यानम् ॥ अब इसका येह ठाठ है ॥
खरज सम रहता है रिषभ उतरा (चड़ा) गंधार उतरा मध्यम
उतरा कहीं चड़ा भी लगता है पंचम सम रहता है धै
वत उतरा निषाद उतरा ॥ अथ सरगमः ॥ गमप
धनी सारेगमपगरेसानीधसा ॥ इति सरगमः ॥ अ
सा रे नि सा ग
ब इसका गत येह है ॥ डिड डा डिड डाडा डाडाडा

दे॰ रा॰ ५

ग पं म पं ग म रे सं रे नि सं धे पं
ढिड्ढा ढिड ढ्डा डा ढ्ढा ढ्ढा डा ढिड ढ्ढा ढिड ढ्डाडा ढ्ढा ढ्डा।

नि सं ग म पं ग म रे
डा ढिड ढा ढिड ढ्डाडा ढा ढ्डा डा ॥ इति प्रस्थायी सेनवा

6

२ग २रे २सं १प २पं १नि २सं २ग २मे
यस्य प्रलापः ॥ ननरी इना आनन उनन उआ नन प्र

२पं २प २पं २मे २मं २रे २सं २रे २प २पं २मे २ग २रे २रे
द ननरी नने नना उनननना आनरा ननन रउ नानम्

२म २ध २नि ३सं २रे ३ग ३रे ३सं १नि २प पं
इतिप्रस्थायी ॥ ननन प्रदनने आनन नउम् नानने न

२म ग २रे सं २नि २प १पं १म १प १नि २सं
ना नन नरी नना आन नान ननउम् नउ नरीन नानउरी

५

२रे २ग २म २प २प २प २म २ग २रे २रे

रना नना आन नान आन नान राग ननम ॥ इत्येतत्

इति प्रलापः ॥ राग देशाख ।

दे॰ गा
१

१

अथ शक्ति परिच्छेदः राग देवगान्धार झंपै ताल ध

ग रे सा ग म प म ग रे ग रे सा नि ध प नि सा रे

विष्णुपदी पद्मपदी दिव्या नदी दिव्यधुनी मनी

ग म प ध प नि सा नि ध प म ग रे

गुनी ज्ञानी जिह ध्यान धरन ध्यानी ॥ इतिस्थ

म प ध नि सा रे ग रे सा

स्थायी ॥ पाप ताप सकल जगत हर करत

नि ध प म ग रे सा रे ग म प ध प

सतहि जन्म अतिपावन दर्शन जउ पुरुषक

म ग रे ग रे सा सा ग म प म ग

रत ज्ञानी ॥ इति अन्तरा ॥ पुरुष परम पुरुषार

रे सा नि ध प नि सा रे ग म प ध प

गा० ३ य पावन मन एक क्रमत अश्वमेध राज सूय

म ग रे म प ध नि सा रे ग

अनकर तिन कारी ॥ गंगा अन्हत सबहि धै रे

रे सा नि ध प म ग रे सा रे ग म ध

दै शत भव पाप हरै वाल निधी दश शत भव

प म ग रे

स्नात पाप हारी ॥ राग देवगांधार ताल ष

ग रे सा ग रे प म ग रे सा नि ध

भागीरथी भागय जगत् हृष्ण रूप प्रकट भ

प नि सा ग रे म प म ग रे

यो पापनाप शाप हरण प्रीत शांति धारी।

प नि प म ग रे स

केद देद दूर करन मारी ॥ इति अस्थायी ॥

म प नि स रे रे ग रे स नि प

यारी मन मारी येह हुति भक्त मक्त देषथन

प म ग म प म ग रे स

उपाधि आधि हरौ सकल जन विकारी ॥ इ

ध प ध नि स नि स रे ग

ति अन्तरा ॥ धन मैं मद ग्रेय रहे देवें नहिं।

रे स रे ग नि ध प म ग रे म प म

विश्र भक्त गज अमक्त मेरे हित अभिमव ति

प रे स म प नि स स ग रे रे स

हयारी ॥ मद्य मांस बुद्धि भेषा झूठ वाणी।

नि ध प म ग रे । ग म प म ग

रा. दे. रतहिं त्रिया येह विकार यार हरी करी दा ।

रे सं

या भारी ।। इत्याभोगः ।। इति ब्रह्मपरिच्छेदः

3

ब्रसके फ्रवपद राग देवगाध ताल चार प

ग रे सं प सं ग म पं प पं म ग म पं

जगदी घर जगत हेत भगत जगान पूर रहो

प नि प पं म ग रे सं

हूर रहो मूढ मन विम माया धारी ।। इतित्र

म प नि सं नि प पं मं ग रे सं

म्यायी ।। जैसें कौउतकेट पखो भूषण मन

म ध प पं प नि सं रे ग रे सं

भूषण पखो भ्राम पासडोल टोल फोकत

नि पं म रे सं ग रे सं प

भविसारी ।। इतिश्रेतरा ।। जब हि हाथ केट

सं ग म पं प पं म ग म पं

गा॰ दे॰ यह्यो भूषण निज पास पह्यो श्रुव रज होम

प नि प पं म ग रे सं म

नहिं मानि यह्यो ममहि भूल भारी ॥ थारी

प नि सं नि प पं म ग रे सं रे ग म

जब मौंच मौंच विन गुरु सुजान पह्यो बाल

पं प नि सं रे ग रे स नि पं म रे सं

निधी नहिं नहिं माया विसारी ॥ इत्याभोगः

प पं प नि सं ग

राग देवगांधार ताल चारध ॥ परम धरम प

रे सं नि सं रे ग रे सं रे सं रे ग

रम हेम धेम कह्यो जिन विकल्प चिदानंद

२म २प २ध २नि २सा २रे २ग २रे २सा

इति स्थायी ॥ मगर राय भये मन प्रीतहि य

२नि २ध २प २म २ग २रे २सा २रे २ग २म २प २म

न बीति मेघ करो हस्यो हरित ग्रष्ट इंद्र छद

२ग २रे २ग २रे २सा २प २म २ग २रे २सा

म भारी ॥ इति अंतरा ॥ षष्टि सहस्र पुत्रशाप

२नि २ध २प २प २नि २सा २रे २म २ग २म २ग २प

धार धार धाय धरिणी खन वितल लघोक

२ध २नि २ध । २प २म २ग २रे २म २प २ध २नि २सा २रे

पिल ग्रष्ट घोर घोर कारी ॥ धारी पुन हृष्टि

२ग २रे २सा २नि २ध २म २प २ग २रे २सा २रे २ग २म २प

भस्म कीने जब कपिल देव भागीरथ नृपहि

२ धे ३ मे २ धे २ पि २ मे २ ग २ रे

गा.दे. नण्वो हन्वो धाप मारी ॥ इति आभोगः ॥ २ ॥

इति शाक्ति परिच्छेदः ॥ ८ ॥

अथ गणेश परिच्छेदः। राग देवगांधार ताल ध
यन यन यन श्री गणेश श्री महेश तात जा
त जनहि विघन वरण हर धूर परण मारी
इति अस्थायी ॥ थारी जिन ओट परम चोट।
अरिन नाहि परे हरे डवजाल सकल विं
कल ताप हारी ॥ इति अंतरा ॥ तारी जिह।

ग.दे. ऋद्ध सिद्ध मुदित मोद भक्त भैरें पैरें नही विघ

5

दरिद्र यौं सुखम भारी ॥ तन मन धन बाल

निधि अर्पण कर अर्चित पद जबहि दाया दा

न देउ तबहि सब अपारी ॥ इति आभोगः॥

राग देवगांधार ध्रुवपद गणेशजीका ना. ४

गणनायिक वरदायक सब लायक वक्र।

वेद देव पुंज चरण शरण धारी सुर नारी ॥

इति प्रस्थायी ॥ हारी जग ताप पाप अरि ।

न दरन करण हेत परम परसु धार धारि भ

व विभीति हारी ॥ इति अंतरा ॥ कारी जग

परम मोद सु अमत मन अनन्य सेवत जो ।

सेवक तिह धन सुयाना धारी ॥ भारी जब ।

ग. दे. कृपा तेरि बालानिधे दयानिधे मन आनंद युक्त
होई विपत भय निवारी ॥ इति आभोगः ॥

इति गणेश परि छेदः ॥ ॥

अथ विभ्रु परिछेदः । राग देवगाध तालध

ग रे सं ध पं नि सं रे ग म

मकुट विकुट प्रकट ठोक गैक नयन क

पं ध पं म ग रे सं रे ध पं म ग

मल विमल रमा रमन मनहि मोहन अति

रे सं म ध नि सं रे ग रे

भारी ।। इति अस्थायी ।। नारी जग भक्तव

सं नि ध पं म ग रे सं ध पं नि सं

छल स्वछ नील मणी वर्ण भरण स्वरण

रे ग ध पं म ग रे सं

सकल यौं हरै नाप मारी ।। इति अंतरा ।।

गा॰ दे॰ पीत वसन मंद हसन रसना रस नाम धा

म श्यश्याम पापहारै कैरे मन विचारी ॥धा॰

री जिह गेट खोट तोट कूट कपट जगत

बालनिधी धन्य धन्य सभग मद विहारी।

राग देवशाष रूपक विस्मके ताल। ध।

पदमा पति पदम नेत्र पाद पदम परम॰

२म २ग २सं २रे २प २पं २म २ग २म २ग २रे २सं

पूज्य परम पुरुष परमआत्म परा वेद धारी

२म २प २नि २सं २रे २ग २रे

इति अस्थायी ॥ भारी कर गदा धारि मार दि

२सं २नि २ध २पं २म २म २रे २सं २ध २पं २नि २सं

ये अमर अरि चक्र वक्र वक्र काट करी रक्त

२रे २सं २ग २रे २सं २ध २पं २नि २सं २रे २ग

जारी ॥ इति अंतरा ॥ मधुकैटभ मेद मैंञ मे

२म २पं २ध २पं २म २ग २रे २सं २रे २ध

दिनी अम्रदित करी हरी विपत देवन की।

२पं २म २ग २रे २सं २म २ध २नि २सं २रे २ग २रे

धरी विष्र मारी ॥ हारी सभ पाप ताप बाल

२सै २नि २धा २पै २म २ग २रे २सै २धा २पै २नि २रे २सै
गा.दे. नियी दीन विष्ठ लिष्ठ श्राष्ठा पाष्ठा ह्रयो ययो
२ग २रे २सै
यीर मारी ॥ इत्याभोगः ॥ इति विस्र परिच्छे-
दः ॥ । ॥

अथ शिव परिछेदः राग देवगाध ताल ध ॥

२ २ग रे २सं २ध २प २नि २सं २रे २ग २म २प २ध २प २म २रे २सं

ज्योति लिंग भ्रमतेग कुसुम भृंग पुंज गुंजा।

२नि २ध २प २नि २सं २रे २ध २प २म २ग २रे २सं

वेदन चित रंजन नित भक्ति को विधाता ॥

२म २ध २नि ३सं ३रे २ग ३रे

इति अस्थायी ॥ दाता साव संपत को कासी

३सं २नि २ध २प २म २ग २रे २ध २प २म २ग २रे

पुर वास करे धरे धीर भरी भीर पाप कोन सा

२सं २ग २रे २सं २ध १प २नि

मा ॥ इति अंतरा ॥ गंगा शिर धार धरैं बिल्व

गा॰ दे॰ पच तष्टि करै हरै आधि व्याधि जोउपाधि कों।

विधाता ॥ बालनिधी कासीपुर जोउ पुरष बा

स करै तारक मन्त्र कान धरै परम साव समा

ना ॥ इति आभोगः ॥ राग देवगांध ताल ध ॥

ईश्वरकी ईश्वरता प्रकट जगत व्यापरही।

देवनको महादेव बात करी भारी। इति स्थाई॰

औेर देव सेवक में सीस ऊसम पूर करैं पूजि
न नित मोद थरैं हरैं विपत भारी ॥ इति श्रे
तरा ॥ अति अभीत भीत जगत देख्यो जब
पाप ताप ममहिं लिग पूजे जोउ विकल
ताप हारी ॥ बालनिधी मणि जल लिंग
जगत पूर कीयो दीयो अपर गात्र नहीं ।

रे म ग रे सा

ग.दे. प्रबलता उच्चारी ॥ इति श्रीमोगाः ॥ इतिश्रि

व परिच्छेदः समाप्तः ॥ ❀ ॥

अथ सूर्य परिच्छेदः राग देवगांधार ध्रुवपद ता· ५

२ग २रे २सा १ध १प १ध २नि २सा २रे ग २म

अति अखंड मंडल फल देत हेत द्योत लोक

२प २म २ग २ध २प २म २ग २रे २सा २ग २रे २सा

करहि दर्श हर्ष युक्त अर्वि जिह यारी ॥ इति

२म २प २ध २नि २सा २रे ३ग २रे २सा २नि २ध

अस्थायी ॥ हारी जग पाप ग्राप रोग छोभ ।

२प २म २ग २रे २सा १ध १प १नि सा २ग २रे

दूर सबै यबै करहि केजन गुग परम मोद सा

२सा २ग २रे २सा १ध १प १ध

री ॥ इति अंतरा ॥ एक मर्म सोवजोववती ।

गा. दे. पुत्र कलत्र त्रिया काम भरी यरी हीये कीयो मन
विकारी ॥ दैष क्रम पाप दीयो कुछ उछ रो
ग कीयो हरि बार व्रतहि सदिन स्वछ देह धा
री ॥ राग देवगाध ध्रुवपद सूर्यके ताल. ध
ष्षण जग भूषण नित तिमर को निवार
ण हित प्रेम नेम दान कर्म सम हेको सा ।

२सं २म २प २नि २सं २ग २रे
री ॥ इति अस्थायी ॥ अहण वर्ण माल तिल
२सं २नि २प २प २म २ग २रे २सं २प २प २प २नि
क माल तिलक धारि गरैं सम बीति मान या
२सं २ग २रे २सं २ग २रे
न धुनिहि वेद भाखी ॥ इति अंतरा ॥ बालषि
२सं २प २प २प २नि २सं २रे २ग २म २प २प २म
हल साट सहस ऊती ऊती परम करैं सैरैं अभ
२ग २रे २सं २नि २प २नि २सं २ग २रे २सं २म २प २नि
भाग अलि अलि बानि राखी ॥ बाल नियी ।
२सं २ग २रे २सं २नि २प २प २म २ग
अभहि बाणि सदा कहे चतर पुरुष मिलहि

२रे २सा २ध १नि २सा २ग २रे २सा

ग. दे. वानि मदित रहे सघ संपत लाची ॥ इतिश्रा
भोगः ॥ इति सूर्य परिच्छेदः ॥ ॥

अथ दसावतार परिछेदः राग देवगांधार ता० ४

गो रे सा गो रे सा पो पा नि सा रे

नारायण नर हरि रूप षोडश कल धारलियो

गो मो पा यो नि यो पा मो गो रे सा

जगत भगत धर्म हेत रक्ष पाल भारी॥ इति

मो यो नि सा रे गो रे सा नि यो पा

प्रथमायो॥ ग्यानी मन जानी जब धर्म कर्म मा

मो गो सा रे रे यो पा मो गो रे सा

धु विध लिध करी रता तब नाना तनु धारी

गो रे सा यो पा नि सा रे गो

इति ग्रेतरा॥ भारी वपु मत्स्य कमठ सूकर।

गा॰ दे॰ रद भृकरदैव विभ फार श्रीनृसिंह हैम किशि

13 पु मारी ॥ नारी जगवामन वपु परशुराम रा

म चेद्र हवल वाल बुद्ध कलकि भूमिभार ।

हारी ॥ इति आभोगः ॥ इति दशावतारपरिछे

दः ॥ ५ ॥

राग धिमार संसरा गत मसीतखानी तालधीमा त्रिताला उठेगी तालकी हमसरीमे

स्वरां	चढी उतरी	बोल
नि	चं	डा
स	Δ	डिड
म	चं	डाडा
म	उं	डाडिड
नि	चं	डा
ध	उं	डा
अबुरद		
म	उं	डा
प	Δ	डा
ध	उं	डा
ग	चं	डिड
मं	उं	डा
धं	उं	डिड
नि	चं	डाडा
अबुरद		
सं	Δ	डाडा
निं	चं	डा
धं	उं	डिड
निं	चं	डाडिड
रें	उं	डा
नि	चं	डा
अबुरद		
धं	उं	डा
मं	उं	डा
गं	चं	डा
मं	उं	डिड
गं	चं	डा
रे	उं	डिड
स	Δ	डाडा

इति स्थाई॥ अथ अंतरा स्थाई के चौथे अबुर्द के गंधार के डाक

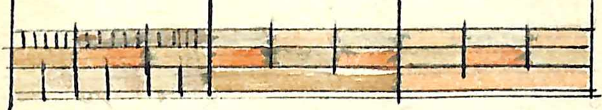
स्वरां	चढी उतरी	बोल
मं	उं	डिडडाडिडडाडा
गं	चं	डाडाडा
अबुरद		
मं	उं	डिड
गं	चं	डा
रें	उं	डिड
निं	चं	डा
सं	Δ	डा
मं	उं	डाडाडा
अबुरद		
गं	चं	डिड
मं	उं	डा
धं	उं	डिड
निं	चं	डाडा
सं	Δ	डाडाडा
अबुरद		
सं	Δ	डिड
निं	चं	डा
रें	उं	डिड
सं	Δ	डा
रें	उं	डा
निं	चं	डा
सं	Δ	डाडा

अबुरद॥
फिर स्थाई के पैहले
अबुर्द में जामिला॥
इति अन्तरा॥

अब सितार डांडी मिननेकी रीति कहताहूं॥

जिस सितार की डांडी ४ इंच ५ दरजे हो उसकी मीडकामान उसकी तारबाज वाली डांडीको कोंनसें २ इंची होव तब मीड ऐसे खिंचनी प्रथम षड्ज सें रिषभ तक ५ पांच दरजे देनी बाकी डांडी रही ८ आट दरजे रिषभसें मध्यम तक साडे चार ४॥ दरजे मीड बाकी डांडी ८॥ साडेआट दरजे मध्यम सें पंचम तक सात ७ दरजे मीड बाकी डांडी एक १ इंची रहीहै। पंचम सें धैवत तक ५ पांच दरजे मीड बाकी डांडी आट ८ दरजे रहीहै। धैवत सें निषाद तक सात ७ दरजे मीड बाकी रहे छे ६ दरजे डांडी रहेही निषाद सें षड्ज तक चार ४ दरजे मीड बाकी डांडी ९ नौव दरजे रहीहै॥ इसी तरां छोटी सितारकी कम मीड देनी अर बडी सितारकी ज्यादा देनी चाहिये॥ इह डांडी मिननेकी प्रकार कहाहै॥

इसकेल मिनना



बाढबिभासका

ताररान

म — चडा
प — स्थिर
ध — किंचित् उतरा
नि — चडा
स — स्थिर
रे — उतरा
ग — चडा
म — चिडा
ब — स्थिर
ध — किंचित् उतरा
नि — चडा
स — स्थिर
रे — उतरा
ग — चडा
म
प

अब सितारका स्वर करणेका
प्रकार कहितेहैं ॥ प्रथम जोडे
की स्वर करणी चाहिदोनो ता
रोंको एकरूप करणा फिर उत
रे निषादकी सुंदरी पर हस्थ
रखके पेहिली बाज तार मि
लानी अरु षड्ज पर हाथ
रखके बेरावर देखलैनी मीड
में तद्रूप करलैनी ऊपर ले
पंचम पर हाथ रखके पंच
मकी तार मिलानी तिसके अ
र्धपर लर्ज करणी चाहिये
इतिस्वरप्रकारः ॥

अब वेंचीयोंदा प्रकार कहितेहैं ॥
जितनी इंची सितार कम होवे अथवा वद होवे
जो बिच कारली मध्यम की इंचहै उसको बरेरीको वदाना छोटीको घटाना उस सितारकी
कुची इंची मकरर रहेगी जैसे उनतीस २९ इंचीके डांडीमें पचीस इंचीकी डांडीका बंद करणा हो तो चार
हिस्से इंचीको कमकरणा जितनीयां इंचयां कटहोन तदउतनीयां कटाना अथवा वदाना सो तदबदाना चाहिये ॥

सकेल केबराबर इंचीला मिनान

छेदर्जे इंची तीन दरजे

समयमतार

भैरवीका ठाट

2

नारदान	नारदान	
म	म	चढा
प	प	स्थिर
	ध	उतरा
ध		
नि	नि	उतरा
नि		
सा	सा	स्थिर
	रे	उतरा
रे		
	ग	उतरा
ग		
म	म	उतरा
म	म	चढा
प	प	स्थिर
	ध	उतरा
ध		
	नि	उतरा
नि		
स	स	स्थिर
	रे	उतरा
रे		
	ग	उतरा
ग		
म	म	उतरा

अब सितारका स्वरकरोंकाप्रकार कहितेहै॥ प्रथम जोडेकी स्वर करणी चाहि दोनो तारों को एक रूप करणा फिर उनरे निषादकी सुंदरी पर हस्थ रावके पैहिली बाज तार मिलानी अरु षड्ज पर हाथ रावके बरोबर देषलैनी मीड सें नहूप कर लैनी ऊपरले पंचम पर हस्थरावके पंचमकी तार मिलानी तिसके अहेपर लर्जकरणी चाहिये॥ इतिस्वरप्रकारः

अब इंचीयोदा प्रकार कहिते है॥
जितनी इंची सितार कंम होवे अथवा वद होवे जा विचकारली मध्यम की इंच है उसको बडेरी को वदाना छोटीको घटाना उस सितारकी ऊही इंची मकरर रहेगी जैसे उन तीस २९ इंची के डाटी से पचीस इंचीकी डाटीका ठाटकरणा हो तो चार हिस्से इंची को कमकरणा जितनीयो इंचयां कटहोन तद उन
नीयां कटाना अथवा वदाना हो तद वराना चाहिये॥

रागिनी भैरवी शुद्ध संपूर्ण गत तमसील षानी उदेगी पैहली से ताल धीमा त्रिताला स्थाई अंतरा ॥

स्वरो	चढी उतरी	बोल	स्वरो	चढी उतरी	बोल
रे नि स ग म नि ध प	ऊं ऊं △ ऊं ऊं ऊं ऊं △	डिड डा डिड डा डा डा डा डा	ग म पं धं निं सं	ऊं ऊं △ ऊं ऊं △	डा डिड डा डा डा डा
	अबुर्दे			अबुर्दे	
ध प म ग रे स	ऊं △ ऊं ऊं ऊं △	डिड डा डिड डाडा डाडा डा	ग रे सं नि ध पं ध नि सं	ऊं ऊं △ ऊं ऊं △ ऊं ऊं △	डिड डा डिड डा डा डा डिड डा डा
	अबुर्दे			अबुर्दे	
ग रे स नि ध प स ध	ऊं ऊं △ ऊं ऊं △ △ ऊं	डिड डा डिड डा डा डा डा डा	गं मं पं धं नि सं	ऊं ऊं △ ऊं ऊं △	डा डिड डा डा डा डिडडाडा
	अबुर्दे			अबुर्दे	
नि सं ग म ग रे स	ऊं △ ऊं ऊं ऊं ऊं △	डिड डा डिड डाडा डा डा डा	गं मं पं मं गं रें सं	ऊं △ ऊं ऊं ऊं ऊं △	डा डिड डा डा डा डा डा

इति स्थाई अथ अंतरा स्थाई बजाकर ताल की पैहली से चला

फिर पहिली रिषभकी डिड मे जाय मिला इति अंतरा। इसमें मध्यम करी बदगी लगती है

	अबुर्दे	
पं.	△	डिड

अब सितार डांटी मिनने की रीति कहता हूं ॥

जिस सितार की डांटी ४ इंच ५ दरजे हो उसकी मींड़का मान उसकी तार बाज वाली डांटी की कोन से २ इंची होय तब मींड़ असे खिंचनी प्रथम षड्ज से रिषभ तक ५ पांच दरजे देनी बाकी डांटी रही ८ आठ दरजे रिषभ से मध्यम तक साड़े चार ४॥ दरजे मींड़ बाकी डांटी ८॥ साड़े आठ दरजे मध्यम से पंचम तक सात ७ दरजे मींड बाकी डांटी एक १ इंची रही है। पंचम से धैवत तक ५ पांच दरजे मींड बाकी डांटी आठ ८ दरजे रही है। धैवत से निषाद तक सात ७ दरजे मींड बाकी रहे छे ६ दरजे डांटी रहेही निषाद से षड्ज तक चार ४ दरजे मींड बाकी डांटी ९ नौव दरजे रही है॥ इसी तरां छोटी सितारकी कम मींड देनी अर बडी सितारकी ज्यादा देनी चाहिये॥ इह डांटी मिनने की प्रकार कहा है॥

स के ल के घराव ... [illegible]

छेदर्जे ईंची तीन दरजे

भैरवीका ठाट

2

नारदान	नारदान	
म	म	चपा
प	प	स्थिर
	ध	उतरा
ध		
नि	नि	उतरा
नि		
सा	सा	स्थिर
	रे	उतरा
रे	ग	उतरा
ग		
म	म	उतरा
म	म	चपा
प	प	स्थिर
	ध	उतरा
ध	नि	उतरा
नि		
स	स	स्थिर
	रे	उतरा
रे	ग	उतरा
ग		
म	म	उतरा

अब सितारका स्वरकरोंकाप्र
कार कहितेहैं॥ प्रथम जोडेकी
स्वर करणी चाहि दोनो तारों
कों एक रूप करणा फिर उन
रे निषादकी संदरी पर हस्त
रावके पैहिलीबाज तार मि
लानी अरु षडुज पर हाथ
रावके बरोबर देषलैनी मीड सें
तद्रूपकर लेनी ऊपरले पंचम
पर हस्तरावके पंचमकी
तार मिलानी तिसके प्र
ह पर लक्ष्य करणी चा
हिये॥ इतिस्वरप्रकाशः

अब ईंचीयोदा प्रकार कहिते हे॥
जितनी ईंची सितार कंम होवे अथवा
वद होवे जा विचकारली मध्यम की ईंच
है उसको वडेरीको वदाना छोटीको घ
टाना उस सितारकी ऊही ईंची मकरर रहेगी जैसे उन तीस २९ ईंची के डांडी में पचीस ईंचीकी
डांडीका ठाठकरणा हो तो चार हिस्से ईंची को कमकरणा जितनीयो ईंचयो कटहोन तद उन
नीयो कटाना अथवा वदाना हो तद वदाना चाहिये॥

रागा देउसाष संपूर्ण गान मसीत षानी ताल धीमा तिताला उदेगी तालकी पेहली में अथ स्थाई अबुरद ॥

स्वरो	चढी उतरी	बोल	स्वरो	चढी उतरी	बोल
सं	▵	डिड	मं	उं	डिड
रें	चं	डा	पं	▵	डाडिड
निं	उं	डिड	निं	उं	डाडा
सं	▵	डाडा	सं	▵	डाडाडा
गं	उं	डाडाडा			
			अबुरद		
अबुरद			सं	▵	डिड
गं	उं	डिडडा	ध	उं	डा
पं	▵	डिड	पं	▵	डिड
मं	उं	डा	मं	उं	डा
पं	▵	डा	पं	▵	डा
गं	उं	डा	म	उं	डाडाडा
सं	उं	डा	अबुरद		
रे	चं	डा	पं	▵	डिड
अबुरद			गं	उं	डा
सं	▵	डिड	मं	उं	डिड
रें	चं	डा	पं	▵	डाडा
निं	उं	डिड	रें	चं	डाडा
सं	▵	डाडा	सं	▵	डा
धं	उं	डा	अबुरद		
पं	▵	डा	बोली		डा
नि	उं	डा	पं	▵	डिड
अबुरद			निं	उं	डा
सं	▵	डिड	सं	▵	डा
गं	उं	डा	गं	उं	डा
मं	उं	डिड	मं	उं	डिड
पं	▵	डाडा	पं	▵	डा
गं	उं	डा	सं	▵	डा
मं	उं	डा	रें	चं	डाडा
रे	चं	डा	सं	▵	डा

इति स्थाई अथ अन्तरा स्थाई के दो अबुरद बजाकर चला ताल की पेहली में फिर स्थाई में जा मिला इत्यंतरा

अब सितार डांटी मिनने की रीति कहताहुं ॥ जिस सितारकी डांटी ४ इंच ५ दरजेहो उसकी तार बाजवाली डांटीकी कोनसे २ इंची हो तब मीड असें खिंचनी प्रथम षड्ज से रिषभ तक ५ पांच दरजे देनी बाकी डांटी रही ८ आठ दरजे रिषभसे मध्यम तक साढे ४॥ दरजे मीड बाकी डांटी ८॥ साढे आठ दरजे मध्यमसे पंचम तक सात ७ दरजे मीड बाकी डांटी एक इंच रही है पंचम से धैवत तक ५ पांच दरजे मीड बाकी डांटी आठ ८ दरजे रही है धैवतसे निषाद तक सात ७ दरजे मीड बाकी रही ६ छे दरजे डांटी रही है निषादसे षड्ज तक चार ४ दरजे मीड बाकी डांटी २ दो दरजे रही है ॥ इसी तरां छोटी सितारकी कम मीड देनी अर बडी सितारकी ज्यादा देनी चाहिये ॥ इह डांटी मिनने की प्रकार कहा है ॥

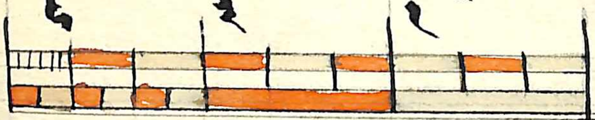
ठाट देवशाख रागका

पंचमाना मिलनेवास्ते

तारदान ॥

छेहिस्से तीनहिस्से एकहिस्सा

६ ३ १



म	चढा नदारद
प	स्थिर
ध	किंचित उतरा
नि	उतरा
स	स्थिर
रे	चढा
ग	उतरा
म	उतरा
प	स्थिर
ध	किंचित उतरा
नि	उतरा
स	स्थिर
रे	चढा
ग	उतरा
म	उतरा

अब ईचीयांदा प्रकार कहितेहैं ईची सितार कमहोवे अथवा वढ होवे जो विच कारली मध्यमकी ईचहै उसको वडेरीको वदाना छोटीको घटाना उस सितारकी ऊची ईची मुकरर रहेगी जेसे उनतीस २९ ईचीकेउटीसें पचीस ईचीकी उंटीका ठाठ करणा होतो चार हिस्से ईचीको कमकरणा जितनीयां ईचयां कट होन तद उतनीयां कटाना अथवा वदानाहो तद वदाना चाहिये ॥

अबसितारका स्वरकरणीका प्रकार कहितेहैं ॥ प्रथमजो उेकी स्वरकरणीचाहि दोनो तारों को एकरूप करणा फिरउतरे निषादकी संदरी पर हस्थ रखके पेहिली वाज तार मिलानी गुरु षड्ज परहाथ रखके वरोवर देष लेनी मींडसें तद्रूप कर लैनी ऊपरले पंचाम पर हस्थ रखके पंचमकी तार मिलानी जिसके अर्थोपर लक्ष करणी चाहिये ॥

इतिस्वरप्रकारः ॥